CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिष्ठान-पत्रिका

वर्ष 2010 ई.

आयुर्वेद के प्रयोग सिद्ध नुस्खे

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिष्ठान की प्रमुख गतिविधियाँ

- सर्वेक्षण
- संग्रहण
- सम्पादन
- प्रकाशन
- संरक्षण
- डिजिटाईजेशन
- शोध सहायता
- प्राच्य कला वीथि
- हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी/व्याख्यान माला एवं संगोष्ठियों का आयोजन

विज्ञप्ति–पत्र

शाखा कार्यालय

- उदयपुर
- कोटा
- अलवर
- भरतपुर
- जयपुर
- बीकानेर

अवतार–चरित

निदेशालय राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान

पी. डब्ल्यू. डी. रोड़, जोधपुर

दूरभाष : 0291–2430244, फैक्स : 0291–2637646

वेब : www.rori.nic.in

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रतिष्ठान-पत्रिका

वर्ष 2010 ई.

आयुर्वेद के प्रयोग सिद्ध नुस्खे

प्रधान सम्पादक

श्यामसिंह राजपुरोहित
R.A.S.

(निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्पादक मण्डल

श्यामसिंह राजपुरोहित
R.A.S.

डॉ. वसुमती शर्मा

डॉ. कमल किशोर सांखला

डॉ. अनिल कुमार गुप्ता

श्रीमती कमलेश बहुरा

प्रथमावृत्ति – 475
मार्च, 2010

राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
पी.डब्ल्यू. डी. रोड़, जोधपुर

फोन : 0291–2430244
फैक्स : 0291–2637646
वेब : www.rori.nic.in

मूल्य : 40.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रम

		पृष्ठ संख्या
निदेशकीय	श्यामसिंह राजपुरोहित निदेशक R.A.S.	1–2
1. आयुर्वेदिक औषधियाँ एवं निदान	श्यामसिंह राजपुरोहित R.A.S.	3से29
2. मांजी गिरिराज कंवर भरतपुर द्वारा विभिन्न रोगों पर एकत्रित कराये गए प्रयोग सिद्ध आयुर्वेदिक नुस्खे	डॉ. वसुमती शर्मा	30से73
3. आयुर्वेद शास्त्र के प्रयोग सिद्ध नुस्खे	डॉ. कमल किशोर सांखला	74से103
4. विभाग में संगृहित गज, अश्वायुर्वेद के दुर्लभ ग्रन्थ	श्रीमती कमलेश बहुरा	104से114
5. निरोधात्मक ग्रन्थ संरक्षण	डॉ. अनिल कुमार गुप्ता	115से121
6. विभागीय प्रकाशनों की सूची		122से132

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निदेशकीय

"सर्वे: भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।"

भारतीय जीवन दर्शन व जीवन पद्धति में उपरोक्त कथन आधारभूत ध्येय वाक्य है। इसी को हृदयंगम रखते हुए ही भारत में समस्त साहित्य सृजित है और यह तथ्यात्मक सत्य है कि भारतीय साहित्य विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। ऋग्वेद विश्व का प्रथम ग्रन्थ है जिसमें जीवन के प्रत्येक पहलू को मन्त्र की ऋचाओं के माध्यम से देखा गया है। अन्य तीन वेद ऋग्वेद के ही अनुपूरक है और इन चारों वेदों की जितनी महत्ता है, आयुर्वेद, जिसे कि पंचम वेद भी कहा जाता है की महत्ता भी उतनी ही प्राच्य व महत्वपूर्ण है। चारों वेदों मे अथर्ववेद मानव जीवन से सर्वाधिक सम्बद्ध दिखायी देता हैं, संभवतः इसी कारण आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद अथवा उपांग कहा जाता हैं–

अथर्ववेदोपनिषत्सु प्रागुत्पन्नः।
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेदाथर्व वेदेभ्यः प्रयंचमोऽयं आयुर्वेदः।

काश्यप संहिता

हिताहितं सुखं दुखं आयुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेदः सः उच्चते।। चरक

अर्थात्:–आयुर्वेद–शास्त्र उसे कहते हैं, जिसमें हित, अहित, सुख और दुःख, आयु के लिये हित और अहित (पथ्यापथ्य), उस आयु का मान (प्रमाण और अप्रमाण) तथा आयु का स्वरूप बताया गया हो।

आयुर्वेद का संबंध मानव शरीर को निरोग रखने, रोग शमन करने तथा आयु वृद्धि से है। मानव सृष्टि के प्रारंभ से ही आहार, विहार, भोगों तथा स्वाभाविक एवं सामाजिक परिस्थितियो के कारण मानव जाति पीड़ित होने लगी, उसी पीड़ा की निवृत्ति के लिये किये गये उपायों और अन्वेषणों से ही आयुर्वेद का प्रादुर्भाव हुआ है। आयुर्वेद मनुष्यों को स्वस्थ, सुखी जीवन जीने की कला सिखाता है। आहार, विहार और संयम का पाठ पढ़ाता है। प्रातः उठने से लेकर रात्रि में शयन तक कब–कब और क्या–क्या, किस–किस तरह से किया जावे कि मनुष्य निरोग रहे, स्वस्थ्य रहे। यही नहीं वर्ष प्रतिपदा से लेकर वर्षान्त तक विभिन्न ऋतुओं एवं परिस्थितियों में किस–किस प्रकार का आहार विहार तथा किस–किस तरह का आचरण मनुष्य को स्वस्थ्य और सुखी बनाता है, इसकी भी शिक्षा आयुर्वेद देता हैं।

आयुः कामयमानेन धर्मार्थ सुख साधनम् आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः।

पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन से १६ रत्नों में एक भगवान धनवन्तरि का प्रादुर्भाव हुआ जो विश्व के प्रथम आयुर्वेदाचार्य थे। उन्होंने जो अमृत कलश धारण कर रखा था, वह सर्वरोगों को हरने वाला, दीर्घायु प्रदान करने वाला था।

"आविर्बभूव कलशं दधदर्णवाद्यः पीयुषपूर्णममरत्व कृतं सुराणाम्"
रूग्जाल जीर्ण जनता जनित प्रशंसो, धन्वन्तरिः स भगवान् भविकाय भूयात्।।

उनके पश्चात् सुश्रुत, चरक, माधव आदि कई प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य हुए। प्राचीन शास्त्र ग्रन्थों में चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, बगंसेन संहिता, माधव निदान, कौमारभृत्यम्, भैषज्य रत्नावली आदि ग्रन्थों की रचना की गई, जिसमें मानव–शरीर की विभिन्न व्याधियों व उनके शमन के उपाय बताये गये हैं। सुश्रुत तो प्राचीन काल के प्रसिद्ध शल्य शास्त्री रहे हैं।

आयुर्वेद की यह स्पष्ट मान्यता है कि इस सृष्टि में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसका औषधिक उपयोग नहीं हो सकता हो। छोटी से छोटी अमहत्वपूर्ण सी वनस्पति भी किसी न किसी रोग में औषधि के रूप में काम आ सकती है। ईंट, पत्थर, घड़े की मिट्टी, कुम्हार के चाक की मिट्टी, भड़भूजे की भाड़ में एकत्रित धुँआ, सुनार की फूंकनी से लेकर लुहार की धौकंनी तक का औषधिक उपयोग हमारे मनीषियों एवं पूर्वजो ने अपने दिव्य ज्ञान एवं आनुभविक ज्ञान से सीखा है, आजमाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है और हमारे उपयोग के लिए संकलित भी किया है। इसी संकलन के कुछ प्रयोग इस अंक में समाहित हैं, कहा भी है–

अमन्त्रं अक्षरोनास्ति नास्ति मूलं अनौषधम्।
अयोग्य पुरूषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभम्।।

अर्थात्:– प्रत्येक अक्षर में मन्त्र बनने की क्षमता है, प्रत्येक वनस्पति में औषधि होने की सामर्थ्य है। हर व्यक्ति में कोई न कोई योग्यता होती है, किन्तु उनका उचित संयोजन (**Cordinate**) करने वाले दुर्लभ होते हैं।

धर्मार्थकाम–मोक्षावामारोग्यं मूलमुत्रमम्।
रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयसों जीवितस्य च।।

अथात्:– आरोग्य को बनाए रखने तथा प्राणियों को रोगों से मुक्त रखना इस दो उद्देश्यों से प्रेरित होकर ही ऋषियों ने आयुर्वेद का उपदेश किया हैं क्योंकि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधनों के लिए निरोग रहना परमावश्यक हैं।

आयुर्वेद इतना व्यापक है कि किसी एक पुस्तक या किसी एक अंक में उसे समाहित कर पाना सभंव ही नहीं और न ही यह सभंव है कि किसी एक पुस्तक में आधि–व्याधियों के निदान और शमन के निमित्त उपायों और औषधियों रूपी आयुर्वेद के महासमुद्र के समस्त रत्नों एवं मणियों का समावेश किया जा सके। अस्तु इस अंक में केवल कुछ अनुभव सिद्ध प्रयोग दिए जा रहे हैं। यद्यपि ये नुस्खे प्रयोगसिद्ध, अनुभूत, सर्वविदित एवं सर्वसुलभ हैं तथापि एहतियातन इनका प्रयोग किसी योग्य चिकित्सक की देखरेख में किया जाना अधिक उचित एवं सुरक्षित रहेगा।

मानव सृष्टि के साथ ही पशु सृष्टि भी हुई एवं इन दोनों का चोली–दामन का साथ रहा है। अतः प्राचीन शास्त्रकारों से उनकी व्याधियां व उनके उपचार भी अनदेखे नहीं किये गये। प्राचीन काल से मध्यकाल तक हाथी एवं घोड़े सेना का प्रमुख अंग रहे अतः उनके संबंध में कई ग्रन्थों की रचना की गई। गजायुर्वेद के ज्ञाता पालकाप्य मुनि एवं अश्वायुर्वेद के नकुल की रचनायें विभाग में सचित्र संगृहित हैं। इस संग्रहण के कुछ अंश इस अंक में भी समाहित किए जा कर उन मनीषियों के कार्य को आदराँजलि अर्पित की गई है।

प्राचीन और दुर्लभ गंथों की देखरेख एक जटिल कार्य है और इसके तकनीकी ज्ञान की जानकारी उन लोगों को अधिकाशंतः नहीं है जिनके पास प्राचीन ग्रन्थों की अमूल्य धरोहर संग्रहित है। ग्रन्थों के संरक्षण की इसी महत्ति आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए इस विषयक एक लेख सुधि पाठकों हेतु प्रस्तुत है, जिसमें ग्रन्थों के रखरखाव एवं उनके परिरक्षण हेतु काम में ली जाने वाली सावधानियां प्रस्तुत की गयी हैं। अंत मे विभागीय प्रकाशनों की सूची भी इसमें समाहित हैं। आशा है यह अंक विद्द्वजनों के लिये संग्रहणीय होगा। प्राक्कथन के अन्त में प्रयोजन को हस्तामलकवत् सुस्पष्ट करने के उद्धेश्य से आयुर्वेद रसशास्त्र के महान अन्वेषक आचार्य नागार्जुन की एक उक्ति को उदृत करने के साथ आयुर्वेद शास्त्र के सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय उद्धेश्य को सुप्रकाशित करते हुए विराम लेता हूँ। **"जब तक रसशास्त्र जीवित हैं, तब तक बुभुक्षा, वेदना और दारिद्रय मनुष्य को व्यथित करने में असमर्थ रहेगें।"**

"ऊँ सहना ववतु सहनोभुनक्तु
सहीवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधितमस्तु माविद्विषावहै।"

निदेशक
श्याम सिंह राजपुरोहित
R.A.S.
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आयुर्वेदिक औषधियाँ एवं निदान

पृष्ठ 3 से 29

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1.

आयुर्वेदिक औषधियाँ एवं निदान

– श्यामसिंह राजपुरोहित
R.A.S.

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की शाखा भरतपुर में ग्रन्थांक 708 पर आयुर्वेदिक प्राचीन परिक्षित औषधि संग्रह नामक हस्तलिखित ग्रन्थ है जो 23 अगस्त 1910 में लिपिबद्ध किया गया था। ग्रन्थ के लेखक का नाम बसन्तलाल शर्मा उल्लिखित है। ग्रन्थ लेखन भरतपुर की राज–राजेश्वरी श्री 108 माजी साहिबा की आज्ञानुसार संभाग के वैद्यों द्वारा प्रयोग कर लिखवाया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ ब्रज क्षेत्र की हिन्दी भाषा में लिपिबद्ध है जिसकी प्रतिलिपि करते समय 163 बीमारियां एवं उनके उपचार सामने आए। ग्रन्थ में विभिन्न स्थानों पर लिखित रोगों को अकारादिक्रम में प्रस्तुत कर अनुक्रमणिका प्रस्तुत करते हुए आलेख तैयार किया गया है।

इस ग्रन्थ में वर्णित आयुर्वेदिक नुस्खे लोक व्यवहार में प्रचलित, अनुभवसिद्ध और अनुभूत हैं। सैकड़ों वर्षों से देशी और स्थानिक उपचारों के रूप में इनका प्रयोग और उपयोग होता आया हैं। इस संकलन के किसी एक नुस्खे मात्र से ही किसी एक भी रोगी के रोग का निदान और शमन यदि इन अनुभूत नुस्खों में से हो जाता है तो यह न केवल इस पुस्तक की बल्कि इसके प्रकाशन की भी सार्थकता होगी।

इस पुस्तक के प्रकाशन की तैयारी करते समय कतिपय व्याधियों और औषधियों के लिए प्रयुक्त कतिपय देशज और स्थानिक नामों एवं शब्दों के तत्सम एवं अधिक प्रचलित सर्व ग्राह्य नामों एवं शब्दों को ज्ञात करने के निमित्त डॉ. राजेश भारद्वाज जो कि सम्प्रति राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर में अपनी सेवाएं चिकित्सक शिक्षक के रूप में दे रहे हैं, कि सेवायें भी ली गई है, इस हेतु उनका हृदय से आभार।

ऊँ संगच्छध्वं सं वद्ध्वं सं वो मनांसिजानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे सं जानानाम् उपासते।।

हम सब साथ–साथ चलें, साथ–साथ बढ़ें, साथ–साथ ज्ञान प्राप्त करें और अपने पूर्वजों की तरह अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए यश प्राप्त करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रोग का नाम एवं उपचार विधि	पृष्ठ सं.	मूल हस्तलिखित ग्रन्थांक एवं ग्रन्थ संग्रह स्थान
1.	अतीस(अतिसार) की दवा	10	708, रा.प्रा.वि.प्र., भरतपुर
2.	अफीम के नशे की दवा	10	,, ,,
3.	आँख की दवा	10	,, ,,
4.	आँख की कमजोरी की दवा	11	,, ,,
5.	आँख के जाला की दवा	11	,, ,,
6.	आँख दर्द की दवा	11	,, ,,
7.	आँख की रोशनी एवं तन्दरूस्ती की दवा	11	,, ,,
8.	आतसक (गर्मी) की दवा	12	,, ,,
9.	आधा शीशी की दवा	12	,, ,,
10.	आँख दुखने की दवा (सर्दी के दिनों में)	12	,, ,,
11.	ऐंठा बंधने की दवा	12	,, ,,
12.	कंठमाला या अडीठ की दवा	12	,, ,,
13.	कफ की दवा	12	,, ,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14.	करवराई की दवा	13	708, रा.प्रा.वि.प्र., भरतपुर
15.	काग छिटकने की दवा	13	,, ,,
16.	कीड़े की दवा (चीनू नानकी)	13	,, ,,
17.	क्षीत घात की दवा	13	,, ,,
18.	खरूआ की दवा	13	,, ,,
19.	खाज की दवा	13	,, ,,
20.	खांसी एवं सांस वाले रोगी के उपचार की दवा	14	,, ,,
21.	खून के दस्त की दवा	15	,, ,,
22.	खून बिगड़ने की दवा	15	,, ,,
23.	खून फिसाद की दवा	15	,, ,,
24.	खूनी बवासीर की दवा	15	,, ,,
25.	गूमड़ा की दवा	15	,, ,,
26.	घात क्षीत की दवा	15–16	,, ,,
27.	घाव की दवा	16	,, ,,
28.	चोट की दवा	16	,, ,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

29.	चिंटी के काटने पर उपचार	16	708, रा.प्रा.वि.प्र., भरतपुर
30.	जख्म की दवा	16	,, ,,
31.	जलंधर की दवा	17	,, ,,
32.	जुखाम की दवा	17	,, ,,
33.	जूते से पांव में छाला पड़ने की दवा	17	,, ,,
34.	ज्वर की दवा	17	,, ,,
35.	डडसूर की दवा	17	,, ,,
36.	ततैया के काटने पर उपचार	17	,, ,,
37.	ताव तिल्ली की दवा	17–18	,, ,,
38.	तिजारी की दवा	18	,, ,,
39.	दमा की दवा	18	,, ,,
40.	दस्त बंद होने की दवा	18–19	,, ,,
41.	दाँत हिलने से उपचार की दवा	19	,, ,,
42.	दाद की दवा	19–20	,, ,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

43.	दाढ़ के दर्द की दवा	20	,, ,,
44.	दिमाग की गर्मी (रचोद) की दवा	20	,, ,,
45.	नकसीर की दवा	20	,, ,,
46.	नहरूआ की दवा	20	,, ,,
47.	नासूर की दवा	21	,, ,,
48.	निमोनिया की दवा	21	,, ,,
49.	पके हुए फोड़े की दवा	21	,, ,,
50.	परसूत की दवा	21	,, ,,
51.	पसली के दर्द की दवा	21–22	,, ,,
52.	पसली के बुखार की दवा	21	,, ,,
53.	पागल कुत्ते एवं सियार काटने पर उपचार की दवा	22	,, ,,
54.	पांव दर्द के उपचार की दवा	22	,, ,,
55.	पीती की दवा	22	,, ,,
56.	पीलिया की दवा	22	,, ,,
57.	पेट दर्द उपचार की दवा	22	,, ,,
58.	पेट में बच्चा मर जाय उसकी दवा	22	,, ,,
59.	पेशाब बंद होने से उपचार	22	,, ,,
60.	प्रदर रोग की दवा	22	,, ,,
61.	प्रमेह की औषधि	23	708, रा.प्रा.वि.प्र., भरतपुर
62.	पसली के बुखार की दवा	23	,, ,,
63.	फोड़ा की दवा	23	,, ,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

64.	फोड़ा फुंसी की दवा	23–24	,, ,,
65.	बदहजमी की दवा	24	,, ,,
66.	बनरफ की दवा	24	,, ,,
67.	बंदर काटने पर उपचार की दवा	24	,, ,,
68.	बच्चे के सफेद दाग की दवा	24	,, ,,
69.	बच्चों के सिर दर्द ठीक करने की दवा	24	,, ,,
70.	बच्चों के मुँह में छालों की दवा	25	,, ,,
71.	बवासीर की दवा	25	,, ,,
72.	बिच्छू का जहर उतारने की दवा	25	,, ,,
73.	बिवाई की दवा	26	,, ,,
74.	बालतोड़ की दवा	26	,, ,,
75.	बुखार की दवा	26	708, रा.प्रा.वि.प्र., भरतपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

76.	भरिया फूटा की दवा	26	,,	,,
77.	मंदाग्नि की दवा	27	,,	,,
78.	महीन ज्वर की दवा	27	,,	,,
79.	मिरगी की दवा	27	,,	,,
80.	मुँह के छाले की दवा (बच्चों के लिए)	27	,,	,,
81.	मोती झल्ला की दवा	27	,,	,,
82.	रचोद की दवा	28		
83.	लू की दवा	28	,,	,,
84.	वादी के सूजन की दवा	28	,,	,,
85.	वाय की दवा	28	,,	,,
86.	वाय के दर्द की दवा	28	,,	,,
87.	सर्प काटने पर उपचार	28	,,	,,
88.	सफेद दस्त की दवा	28	,,	,,
89.	साँप के काटने पर उपचार की दवा	28	,,	,,
90.	साल की दवा	29	,,	,,
91.	सुजाक की दवा	29	,,	,,
92.	श्वांस की दवा	29	,,	,,
93.	हिचकी बंद करने की दवा	29	,,	,,
94.	हिलते दांत की दवा	29	,,	,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1. अतीस[1] की दवा

सत्यानासी के पेड़ के लम्बे पत्ते जिसमें पीले फूल आते हैं उसकी जड़ एक तोला की मात्रा में लेकर आधा किलो गाय के दूध में जड़ को डालकर खूब उबाल लें। जब उबाल आ जावे तब जड़ को निकालकर फेंक दें। उसके बाद उसमें दो तोला शहद मिलाकर सुबह–शाम सात दिवस तक पीने से आराम मिलता है।

2. अतीस की दवा

आठ आना भर संखिया, आठ आना भर दाल चिकना, आठ आना भर रसकपूर इन तीनों चीजों को कूट कर एक कोरे पात्र में रखकर, दूसरे कोरे पात्र से उसके मुँह को बंद कर दें ताकि हवा बिलकुल नही निकले फिर एक चुल्हे पर रख कर उसे आँच देवें। एक कपड़ा घी में भिगोकर जलावें और उस कपड़े के ऊपर घी डालते जावे जब अन्दाज से एक किलो भर घी की आंच लग जावे तब उतार लें फिर उस पात्र को अलग–अलग कर लेवें। दवा नीचे के पात्र में से ऊपर पात्र के पेंदे में लग जावेगी। पात्र से दवा को खुर्च कर रख लें। मरीज को दो चावल के बराबर दाख में रखकर सुबह–शाम के वक्त दी जावे।

ज्यादा तकलीफ होवे तो चार चावल के बराबर सेवन करायें परन्तु दवा के दांत नहीं लगावें वैसे ही निगल जावें, इसी तरह दाख को निगल जावें।

गुड़, तेल, खटाई, नमक से परहेज रखना चाहिये। घी मर्जी मुताबिक प्रयोग में लेवें। बेसन की रोटी का सेवन करना चाहिए। सात दिनों तक दवा का सेवन करना चाहिए। आठवें रोज गेंहूँ, चना की रोटी, मूंग की दाल खावें परन्तु उसमें सैंधा नमक, काली मिर्च डालकर खाना चाहिए। एक माह में बिमारी ठीक हो जाती है।

3. अतीसार की दवा

कुमारसिंह

आधा तोला जायफल, एक तोला छुहारे, तीन माशा अफीम को पान के रस में घोटकर एक रत्ती के बराबर गोली बनाने के बाद दो गोली सुबह तथा दो गोली शाम को गाय के दूध की छाछ के साथ देने से तुरन्त अतीसार से फायदा होता है। जायफल को पीसकर नाभी पर लेप करने से भी आराम मिलता है।

4. अफीम के नशे की दवा

कड़वे तेल को हल्का गर्म करके ठण्डा होने पर कान में डालने से नशा उतरता है।

एक माशा हींग घोलकर पिलाने से भी नशा उतरता है।

5.आँख की दवा

ऊपरा (गोबर) को जलावें, जब जलकर अंगार के समान हो जावे तब पानी में बुझाकर रख लेवें। एक रुई का फांया आँख पर इस प्रकार बांधे की आँख पूरी ढ़क जावे। उसके बाद फांये पर भीगी हुई राख को बांधने से आँख ठीक हो जाती है।

---

1 अतीसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

6. आँख की कमजोरी की दवा In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घी में काली मिर्च मिलाकर खाने से आँखों में ज्योति बढ़ती है।

7. आँख के जाला की दवा

ममीरा, सफेदा और काला काजल तीनों को बराबर लेकर आँखो में दोनों वक्त अंजन करने से आँख का जाला ठीक होता है

ममीरा असली होना चाहिए असली ममीरा की पहचान यह है कि काला कपड़ा या नीला कपड़ा पर ममीरा को लगाया जावे तो कपड़ा सफेद हो जाता है।

8 आँख की दवा

छोटी मोहार (मधुमक्खी) का शहद, प्याज का अर्क इन दोनों को प्रतिदिन एक बार लगाने से आँख साफ होती है तथा कभी दुखती नहीं है।

9. आँख दर्द की दवा

आक के दूध को दोपहर के बाद यानि शाम के वक्त पैर के नाखूनों तथा पैर के तलुए में दूध लगाने से आँख जल्दी ठीक हो जाती है।

10. आँख दर्द की दवा नत्थीलाल सुनार

नींबू का अर्क दो तोला, चार आना भर गुड़, लोहे की कटोरी को खूब साफ करके इन वस्तुओं को उफान आने तक उबाले फिर ठंडा होने पर लोहे के बर्तन अथवा शीशी में रख लें। फिर एक–एक बूंद आँख में डाले और पलकों पर लेप करने से तीन दिन में आँख साफ हो जाएगी।

11. आँख की रोशनी एवं तंदरूस्ती की दवा

हरड़े, बहेड़ा, आंवला इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर शाम के वक्त थोड़े से पानी में भीगो दें। सुबह के समय छानकर पीने से आँख की रोशनी और तंदुरस्ती बढ़ती है।

12. आँख की दवा

अनारनी[1] का पेट चीरकर उसमें एक छटांक भर हल्दी जो कुट करके भर दे जब छाया में सुख जावे तब उस हल्दी, को निकाल कर बारीक पीस लें। कोरी रूई लेकर उस रूई में हल्दी भर के तीन–चार बत्ती बनाले और उस बत्ती को कड़वे तेल के दीपक में रखकर काजल बनालें उस काजल में सफेदा जस्त का डालकर कोड़ी से कांसी की थाली में घोट ले। चार आना भर काजल में डेड आना भर सफेदा डालना चाहिए। सुबह–शाम आँखो में काजल डालने से आराम मिलता है।

13. आँख की दवा

केथ के गुद्दे को पीसकर टिकियाँ बनाकर बांधने से दुखती हुई आँख ठीक होती है।

14. आँख की दवा

ग्वार पाठे का गुद्दा, गेहूँ का आटा, हल्दी इन वस्तुओं को घी में मिलाकर टिकिया बनालें। टिकिया के बीच में थोड़ा कपूर और थोड़ी फिटकरी रखकर आँख पर बांधने से आराम मिलता है।

---

1 अनार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15. आतसक (गर्मी) की दवा

जलजीवनी[1] की फली 4 माशा के साथ 11 काली मिर्च घोटकर पीने से सात दिन में गर्मी की बीमारी ठीक होती है। गुड़, तेल, खटाई, तथा उड़द की दाल से परहेज रखना चाहिए।

16. आधा शीशी की दवा

खाने का चूना और गाय का घी थोड़ी–थोड़ी मात्रा में लेकर हथेली पर खूब रगड़ने के बाद जिस तरफ माथे मे दर्द होवे उस तरफ दवा लगाने से दर्द जाता है।

17. आधा शीशी की दवा

अण्डे की जरदी, शहद, चूना, तज यह सब चीजे एक–एक माशे लेकर, तज को पीसकर सभी वस्तुएं मिलाकर कागज की एक गोल टिकियां पैसे के डबल आकार की बनाकर, इन चीजों को लगाकर कनपटी पर चिपकाने से आधा शीशी का दर्द फोरन मिट जाता है।

18. आँख दुखने की दवा (सर्दी के दिनों में) राधाकृष्ण चतुर्वेदी

अफीम, फूली हुई फिटकरी इन दोनों वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर घी में मिलाकर काँसी के बर्तन में रगड़ कर आँखों की पलकों पर लगाने से आराम मिलता है।

19. आँख दुखने की दवा (गर्मी के दिनों में)

मलाई के फाये बांधने से आँख ठीक होती है।

20 आँख दुखने की दवा

बतासे, फूली हुई अफीम, फिटकरी इन तीनों चीजों को बराबर मात्रा में लेकर, उबाल कर आँखो में अंजन कर आँखे टम–टमा लेवें ताकि पानी निकल जावें। ऐसा करने से आँख ठीक होती है।

21. ऐंठा बंधने की दवा[2] घनीराम

एक तोला बड़ी हरड़ की गुठली को निकाल कर जौ कुट करके बाद में थोड़े घी में हल्का भूनलें बाद में खूब महीन पीस कर तीन पुड़िया बनाने के बाद शहद मिलाकर दिन में तीन बार खाने से आम के ऐंठा या खून के ऐंठा बंद हो जाता है।

खाने में दाल, चावल की खीचड़ी देना चाहिए।

22. कंठमाला या अडीठ की दवा बडनर– डाकखाने के पास

पाव का तीसरा भाग गाय का घी और चार कुचेले इनको घी में डालकर जलाने के बाद इनको घी में से निकाल कर फेंक दिए जावे। फिर घी में मोम, सिंदूर गरम करके मिलाने के बाद एक फायें पर लगाकर चिपकाने से कंठमाला एवं अडीठ ठीक होता है।

23. कफ की दवा

धतुरे के फल में से बीज निकालने के बाद खूरासनी अजवायन उस फल में भर देवें उसके बाद फल की डंडी से मुँह पर ढ़क्कन लगा दें उसके बाद कपड़ पट्टी करके आंच में देवें जब खूब आंच लग जावे तब उसको निकालकर पीस ले। कफ वाले रोगी को पान के टुकड़े या अदरक के अर्क में मिलाकर दो तीन चावल के बराबर सुबह–शाम देने से कफ ठीक होता है।

---

1 जलत्रमनी 2 पेट में मरोड़ें के साथ दस्त आने की दवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

24. कफ की दवा — चतुर्भुज, बासन दरवाजा

थूअर की डंडी के पत्तों को सेक कर उनका अर्क निकाल कर रख ले। चार आने भर अर्क में आठ आना भर शहद मिला कर देने से क़फ शीघ्र बंद हो जाएगा।

25. कफ की दवा[1] — पं. गंगाधर जी

करवराई उठते ही मीठे तेलिया[2] का लेप करके खूब सेक देने से बैठ जाती है। पक जाने पर खट्टा चूका के पत्तों को सेक कर घी में चुपड़ कर बांधने से आराम मिलता है।

26. करवराई[3] की दवा — बेनीराम बनिया, मु. चौबुरजा

कुदरू गोंद को पीसकर पानी में एक फांये पर लगाकर चिपका देवें फांया जब उतर जाएगा जब करवराई ठीक हो जावेगी।

27. काग छिटकने की दवा[4]

माथे को जमीन में टेक कर दोनों हाथों को पीठ के ऊपर रख लेवें और पांव के दोनों अंगूठो को जमीन पर टेक दे और माथे तथा अंगूठो को जमीन पर टीके रखे और खड़ा हो जावे तो कितने ही दिनों का काग छिटका हो ठीक होता है।

28. कीड़े की दवा (चिनू नानकी)[5]

वाय विड़ग का छः माशे चूर्ण शहद में मिलाकर खाने से कीड़ा मर जाते है।

नीम की पत्ती का रस शहद में मिलाकर पीने से कीड़ा मर जाते है।

29. क्षीत घात[6] की दवा

बबूल की पत्ती को शुष्क करके पीसने के बाद खांड बराबर मात्रा में लेकर दोनों का मिश्रण करने के बाद सुबह–शाम 2 तोले की मात्रा में खाकर ऊपर से ठण्डा पानी पी लेवें। दवाई का 15 दिन सेवन करने से घात क्षीत (शुकधातु क्षय) शीघ्र ठीक होता है। इसमें गुड़, तेल, खटाई, उड़द की दाल, लाल मिर्च का परहेज करना चाहिए।

30. खरूआ[7] की दवा

पसेदू के फल को आंच में गर्म करके लगाने से खरूआ ठीक होता है।

31. खरूआ की दवा

कड़वे तेल में नमक मिलाकर गर्म करके जहाँ खरूआ हो वहाँ मलने से आराम मिलता है।

32. खाज की दवा

पुराने गुड़ मे थोड़ी सी सांप की काचड़ी (केंचूली) मिलाकर झारी बेर (झाड़ी बेर) की बराबर गोली बनाकर दिन में दो–तीन बार सेवन कर जख्म को नीम के पानी से धोने से खाज ठीक होती है।

---

1. कण्ठमाला की दवा 2. वत्सनाभ 3. कण्ठमाला की दवा 4. कागलिया–अधिजिह्व शोथ 5. सूत्रकृमि 6. क्षीणधातु 7. स्फीत कृमि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

33. खाज की दवा

गाय के गोबर के ऊपरान की राख बनाकर गाय के दूध के मक्खन में मिलाकर खाज पर लगाने से दो–तीन दिनों में खाज से छुटकारा मिलता है।

हमीद खां, मु. बिसम्बर

34. खाज की दवा

गंधक 6 माशा, फिटकरी 6 माशा, सुहागा 6 माशा, मुरदासन[1] 6 माशा, कपीला 6 माशा, नीला थोथा 6 माशा, वेनशल[2] 8 माशा, सफेद कत्था 6 माशा, कच्ची घाणी का कड़वा तेल पाव का तीसरा हिस्सा। इन सभी को बारीक पीसकर कपड़छान करके तेल में मिलाने के बाद खाज पर धूप में बैठकर मालिस करें उसके बाद कुएँ के ताजे पानी से स्नान करने से खाज ठीक होती है। यह दवा ठण्डे मौसम में नहीं लगावें।

35. खांसी एवं सांस वाले रोगी के उपचार की दवा नत्थीलाल सुनार

सुनार की चांदी, सोने फूंकने की जो अग्नि होती है उसमें जो धूंआ जम जाता है उसको लेकर पान के साथ दो–तीन चावल के आकार के दिन में तीन बार खाना खाने के बाद देने से खांसी बंद होती है। यह दवा चार दिन तक देनी चाहिए तथा तेल, गुड़, खटाई, उड़द क़ी दाल और लाल मिर्च से परहेज रखना चाहिए। प्रतिदिन बिना मलाई का आधा किलो गाय का दूध दवाई सेवन के साथ करना चाहिए।

उपरोक्त दवा में चार आना भर अफीम मिलाने के बाद चार–पांच दाख पीसकर दवा में मिलाने के बाद ज्वार के आकार की गोली मरीज को सुबह–शाम तीन चार दिनों तक देने से सांस वाला रोगी ठीक हो जाता है। इसमें गुड़, तेल, खटाई, उड़द की दाल से परहेज रखना चाहिए।

36. खांसी की दवा

हरड़, पीपल, सोंठ, काली मिर्च इन वस्तुओं को कूट छान कर गुड़ में मिलाकर खाने से आराम मिलता है। से सभी वस्तुएं बराबर मात्रा में लेना चाहिए।

37. खांसी (खुश्की)[3] की दवा

8 माशे बहेड़ा को 3 माशे शहद मे मिलाकर झाड़ी बेर बराबर की गोली बनाकर शाम को सोते समय गोली का सेवन करने से खांसी ठीक होती है।

38. खांसी की दवा

छः छदाम खूब कला को लेकर साफ करने के बाद एक बड़े दीपक में रख देवे और एक तोला की नमक उसमें डाल दें। दूसरे दीपक से उसको ढ़क कर एक कपड़ा ऊपर लपेट कर कपड़ मिट्टी करके चार प्रहर तक आग में दबा कर रखें उसके बाद ठंडा होने पर दीपक में से निकाल कर पीस कर रख ले। उसके बाद बंगला पान[4] में रखकर थोड़ा–थोड़ा खाने से खांसी ठीक होती है।

39. खांसी की दवा

काकड़ा सींगी को बारीक पीस कर शहद मिलाकर दो माशे की गोली बनाकर रोगी को सुबह–शाम 14 दिन तक देने से खांसी ठीक होती है।

12 वर्ष से कम आयु वाले रोगी को सुबह–शाम चार दिन तक गोली देनी चाहिए।

---

1. मुरदासींगी 2. मनशिला 3. सूखी खांसी 4. बंगाली पान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

40. खांसी की दवा (सर्दी की)

पीपर, लोंग तीन–तीन माशा तथा एक फल कटेरी का भुरता करके इनको बारीक पीस कर छः गोली बनाकर एक गोली मुँह में डाल कर उसका अर्क जाने दे जब गोली मुँह में बीत जावे तब उसके ऊपर एक बीड़ी खा लेने से खांसी बंद होती है।

41. खून के दस्त की दवा

पाव भर दही, एक तोला सूखी राल को पीस कर सुबह–शाम बिना कुछ खाये दही में मिलाकर खाने से खून के दस्त आना बंद हो जाता है।

42. खून बिगड़ने की दवा

तीना माशा चीरायता शाम को एक कूलड़ में भीगोकर छानने के बाद सात दिन पिलाने से खराब खून की सफाई होती है। दवाई मात्रा 2 तोला।

43. खून फिसाद की दवा (खून शुद्ध करने की दवा)

हरड़े बहेड़े आंवला को बराबर मात्रा में लेकर थोड़े पानी में डालकर खूब उबालने के बाद आधा पानी रह जाने पर शहद मिलाकर पीने से आराम मिलता है।

44. खूनी बवासीर की दवा

नीम की निंबोली तीन चार और रसोत दो आना भर तथा चने के बराबर नमक की डरिया। इन तीनों को सवेरे बिना कुछ खाए चबा जावें। दस दिनों तक सेवन करने से आराम मिलता है। गुड़, तेल, खटाई, उड़द की दाल, लाल मिर्च से परहेज रखना चाहिए।

45. गूमड़ा की दवा

घोड़े के खुरों को जलाकर कच्ची अरण्डी की मिंजी और कत्था इन वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर महीन पीस कर पानी के साथ उबालने के बाद फायें पर लगाकर गूमड़ा पर चिपका देने से गूमड़ा ठीक होता है।

46. घात क्षीत की दवा (पेशाब में (एलब्यूमीन) धातु जाने पर)

पाव का चौथा भाग केथ के पत्ते, 21 काली मिर्च इन को भांग की तरह घोटकर आधा किलो पानी में छानकर सवेरे पाँच दिनों तक पीने से घात का जाना रूक जावेगा तथा घात पुष्ट होगी।

47. घात क्षीत की दवा (वीर्य अल्पता)

चार तोला ओंगे[1] की जड़, चार तोला ईसब गूल की भुसी, ओंगे की जड़ को छाया में सुखाकर जो कुट करके एक कपड़े की पोटरी बनाकर एक सेर गाय अथवा बकरी के दूध में दवा की पोटरी को डोरा में बांध कर दूध के अन्दर लटका देवें जब दूध एक सेर का तीन पाव रह जावे तब पाव का चौथा हिस्सा कच्ची खांड डालकर सवेरे एक वक्त पिलाने से 21 दिन में घात क्षीत ठीक होता है। एक पोटरी को सात दिन तक ही काम में लेवें।

1. आंधी जाड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

48. घात क्षीत की दवा

दो तोला, साखा हूली[1], ग्यारह काली मिर्च इनको घोटकर आधा किलो पानी में छान कर ठण्डाई की तरह दो रोज पीने से आराम मिलता है। यह दवा दो रोज से ज्यादा नहीं पीना चाहिए।

49. घात पुष्ट (घात क्षीत) की दवा

बंबूल की कच्ची फली जिसमें बीज नहीं पड़े हो उनको छाया में सुखाकर खरल में कूट कर छानने के बाद कच्चे दूध के साथ आठ आना भर की फक्की सवेरे 21 दिनों तक लेने से घात पुष्ट होता है। गुड़, तेल, खटाई, लाल मिर्च से परहेज रखना चाहिए।

भोला सिंह

50. घाव की दवा

लेसूआ के फूलों को पीसकर टिकिया बनाकर घी में छोंक कर अथवा वैसे ही बांधने से घाव ठीक होता है।

चुन्नीलाल ब्राह्मण पुजारी

51. चोट की दवा

सांभर के सींग को घिसकर लेप करने के बाद आंच से सिकाव करने से आराम मिलता है।

52. चोट ठीक होने की दवा

एक छटांक शहजने की पत्ती, आठ आना भर हल्दी को पीसकर पानी में कुछ गर्म करके लेप करने के बाद सिकाव करने से आराम मिलता है।

53. चिंटी के काटने पर उपचार

खाने की सुपारी को घिसकर लगाने से दर्द बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।

54. जख्म की दवा

बजीर खां – करोली

एक तोला सफेद चिरमिठी, दो तोला गाय का घी, आठ आना भर देशी मोम, तीन माशा सिंदूर। चिरमिठी को महिन पीसकर टिकीया बना कर घी में जला लें। उसके बाद मोम और सिंदूर को इसमें डालकर खूब मिलाकर रख दें। जख्म पर इस दवा को लगाने से ठीक होता है।

55. जख्म की दवा

नवाब खां

बड़ी दाख एक छंटाक, फिटकरी पाव छटांक, साबुन पाव छंटाक इन तीनों चीजों को पानी में पीसकर एक कपड़े के टुकड़े पर लगाकर चिपकाने से जख्म ठीक होता है।

56. जख्म की दवा

बाबुराम परमानंद, बेरी

एक रूपया भर मुरदाशन[2], चार आना भर कपूर, चारा आना भर रस कपूर, आठ आना भर छोटी इलायची, आठ आना भर कबीला[3], आठ आना भर पपरिया कत्था इन चीजों को पीसकर पाव के चौथे हिस्से चमेली के तेल में मिलाकर लगावे या गाय के घी में मिलाकर लगावे। गाय के घी को 101 बार धोने से बाद उपर्युक्त वस्तुओं को मिलावें। घाव को पानी से बचाकर रखना चाहिए।

57. जख्म की दवा

महबूब खां, (विसम्बर पलटन)

आधा किलो अलसी का तेल, पाव का तीसरा हिस्सा कन्नेर के पत्ते, इतनी ही मात्रा में नीम के पत्ते। इन तीनों को तेल में डालकर जब पत्ते तेल मे जल जावे तब पत्तों को निकाल कर फैंक दें। उसमें पाव का चौथा भाग सिंदूर तथा इतनी ही मात्रा में राल तथा सफेदा को तेल में डाल दे जब खूब मिल जावे तब उतार लें। ठण्डा होने पर जख्म पर फाँया लगाने से जख्म ठीक होता है।

1. शंख पुष्पी 2. मृदारश्रृंगी 3. कपिलक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

58. जलंधर की दवा (जलोदर)

जिस मनुष्य का पेट बढ जावे उसे 41 दिनों तक ऊँटनी का दूध पिलाया जावे।

हुल–हुल की भुजिया खाने से भी 21 दिनों में बिमारी ठीक होती है।

59. जुखाम की दवा

मुलेठी, बनपस्या की पत्ती, गाव जवां, उन्नाव, सोंफ सभी आठ–आठ आना भर तथा 2 तोला मिश्री को पाव भर पानी में उबालें जब पानी तीन छटांक रह जावे तो सुबह–शाम छानकर पिलाने से आराम मिलता है।

60. जूते से पाँव में छाला पड़ने की दवा

छाले पर मेंहदी लगावें या बांस की लकड़ी या स्त्री के सिर के बाल घिस कर रख देने से छाला ठीक हो जाता है।

61. ज्वर की दवा

गोविन्दराम मु. रजवट

एक तोला सौंठ, एक तोला गिलोय इन दोनों को कूटकर के एक बर्तन मे पानी लेकर उसमें इस चुरे को डालकर आँच पर रख दे जब आधा पानी रह जावे तब उतारकर ठंडा होने पर बुखार वाले को छानकर पीला देने से बुखार ठीक हो जाता है।

हार सिंगार के पत्ते को लेकर उसका रस निकालकर दो तोला रस को शहद में मिला कर पीने से ज्वर जाता है। दवा का सेवन तीन दिन तक सुबह–शाम करना चाहिए।

काली मिर्च और तुलची के पत्तो को थोड़े जल के साथ घोट कर पीने से अथवा इन वस्तुओं की गोली बनाकर बुखार चढ़ने के दो घन्टा पहले दो गोली मटर के आकार की गर्म पानी के साथ देने से यह दवा कूनेन के बराबर गुण करेगी।

बबूल की हरी पत्ती सूंघने से चौथईया ज्वर तीन दिन में उतर जाता है।

62. डडसूर की दवा (डंक शूल)

तुरई के पत्तों को पीसकर लगाने से डडसूर शीघ्र ठीक होता है।

63. ततैंया के काटने पर उपचार

दीयासलाई के सोर (बारूद) को पीसकर लगाने से सूजन नहीं आती और आराम मिलता है।

64. ताव तिल्ली की दवा

पाव गाय की छाछ, आधा किलो केथ का गूदा, एक पाव पोतिया लहसून, पाव का तीसरा हिस्सा सांभर नमक इन सभी वस्तुओं को एक कोरे पात्र में भरकर 15 दिन तक धूप में रखें उसके बाद पात्र से निकालकर प्रातःकाल बिना कुछ खाये एक तोला की मात्रा में सेवन करने से ताव तिल्ली ठीक होती है।

65. ताव तिल्ली की दवा

जिस मिट्टी में कांसी का बर्तन ढाला जाता है उसको लाकर मिट्टी जितनी ही खांड मिलाकर रख लें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोज एक तोला भर की फक्की लेकर उस पर पानी पीने से ताव तिल्ली ठीक होती है। यह दवा 21 दिनों तक सेवन करनी चाहिए।

66. ताव तिल्ली की दवा

ऐलूआ, कसीस और कुनेन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर इन चीजों को पीसकर डेड रत्ती की गोली बनालें। सुबह बिना कुछ खाए एक गोली का सेवन कर ऊपर दो–तीन घूंट पानी पिला दें। 21 दिनों तक सेवन करने से ताव तिल्ली ठीक होती है। गुड़, तेल, खटाई का सेवन नहीं करना चाहिए।

67. तिजारी की दवा–तृतीयक ज्वर (मलेरिया)

तीन पतासो के बीच में छेद करके ज्वार के बराबर अफीम और इतनी ही हींग तीनों पतासों में रखकर तिजारी के चढ़ने से पहले थोड़ी–थोड़ी देर के बाद इन तीनों पतासो को खाने से तिजारी नहीं चढ़ती।

68. दमा की दवा

खालिस देशी तमाखू पीने का गूल एक सेर भर इकट्टा कर एक जगह जमीन पर लीपकर गुल को रख दे और ऊपर से आँच लगा दे जब आँच बुझ जावे तब राख को अलग करके, गुल को निकाल कर रख लें और एक कलसिया (पात्र) में कुएँ में से पानी निकाल कर पानी को खटोटी में डाल दे तथा गुल को भी खटोटी (परात) में डाल देवें फिर एक रूई की मोटी बत्ती (बाट) बनाकर उस खटोटी में लगा दें और खटोटी को टेढ़ी कर दूसरे बर्तन में उस बत्ती के द्वारा पानी को आने देवें। जब पानी नितर कर आ जावे तब उस पानी को एक कड़ाई में डालकर खूब जलावें जब सब पानी जल जावे तब उस कड़ाई की दवा शेष रहे उसे लेकर रख लेवें। मरीज को बड़ी सरसों के आकार की मात्रा बंगला[1] पान में रखकर सुबह–शाम को देने से दमा तुरन्त ठीक होता है।

69. दस्त बंद होने की दवा

कपूर, पोदीने का सत, पीपरमेन्ट इन सभी को एक–एक रूपया की मात्रा में लेकर एक शीशी में भरकर तीन दिनों तक रखने के बाद। पतासे में दो बूंद द्रव्य डालकर सुबह–शाम खिलाने से दस्त ठीक होते है।

यह दवा सिर में दर्द वाले के माथे पर लगाने के लिए भी उपयोगी है।

70. दस्त बंद होने की दवा बाबूलाल कायस्थ (वासन दरवाजा)

एक कपड़े में दही को बांधकर खूंटी पर लटका दें जब पानी टपक जावे तब उसमें एक तोला इसबगुल में मिलाकर तीन दिन तक सवेरे खाने से दस्त बंद होते है।

71. दस्त बंद होने की दवा

रूमी मस्तंगी तीना माशा, पोस्त का डोडा 6 माशा को घी में तल कर तीन रत्ती अफीम तथा एक तोला गुलकंद। इन सभी को पीसने के बाद एक झाड़ी बेर के बराबर गोली बनाकर सुबह, दोपहर, शाम को खाकर ऊपर थोड़ा सा पानी पीने से दस्त बंद हो जाते है। यह दवा तीन दिन तक सेवन करना चाहिए।

1. बंगाली पान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

72. दस्त बंद होने की दवा

दो तोला गुलकंद, जलपसोदा एक माशा, गुलाब खालिस का तीन छटांक, शरबत दीनार तीन तोला। जलपसोदा को पीसकर गुलकंद में मिलाकर खाने के बाद ऊपर से इन दोनों शर्बत को गुन गुना कर पीने से दस्त बंद हो जाते है।

पोस्त बेरूने पिस्ता 6 माशा को उबाल कर पिलाने से दस्त बंद होती है। पिस्ते के अन्दर की मिंजी पर छिलका हो उसे पोस्त बेरूम पिस्ता कहते है।

73. दस्त बंद होने की दवा

मोहनलाल

एक नींबू के दो फांक करके एक फांक में ज्वार के बराबर अफीम पीसकर उस फांक के डालकर रख दें। दूसरी फांक में आठ आना भर मिश्री पीस कर भर लें। दोनो फांक गर्म करके चुस लेने से दस्त बंद हो जाते है।

सेमर[1] का गोंद टका भर तथा पाव भर दही को बांधकर रख ले जब सारा पानी टपक जावे तब उस गोंद को पीसकर दही में मिलाकर पीने से तीन दिन में आराम मिलता है।

74. दस्त बंद होने की दवा अजीजुल हसन

मुलतानी सफेद जीरा, पोस्त की डोडी इनको लेकर भूनने के बाद पीस लें। दिन में लगभग एक आना भर की फक्की तीन दफा लेने से दस्त बंद होती है।

75. दाँत हिलने से उपचार की दवा केवल जमादार

दस अलरूओं[2] के फलों को लेकर सुखाने के बाद, पाव के चौथे हिस्से बादाम के छिलको को जला लेवें। 20 काली मिर्च को लेकर इन सभी को महीन पीसने के बाद इसका मंजन करने से हिलते हुए दाँत मजबूत होते है।

अलरूओं के ताजे फल को दाँतों पर रगड़ने से भी दाँत मजबूत होते हैं।

76. दाद की दवा मुंशी बद्रीप्रसाद कायस्थ, मो. पाईवाग

छाछिया गंधक, कपूर इन दोनों को बराबर लेकर मिट्टी के तेल में खूब घोटकर रख लेवें। मिश्रण दाद पर लगाने से दाद मिट जाता है।

77. दाद की दवा

गूगल 7 माशा, गंधक 4 माशा, सुहागा 3 माशा को पानी में पीसकर गोली बनावें। गोली को छाया में सुखाकर बासे जल में घिसकर लगाने से दाद ठीक होता है।

78. दाद की दवा अब्दुल मजीद, मथुरा दरवाजा

साबुन और खाने का चूना इन दोनों को मिलाकर दाद पर लगाने से आराम मिलता है।

---

1. शाल्मली वृक्ष 2. बकुल वृक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

79. दाद की दवा नत्थीलाल कम्पाउन्डर, चार बाग

मुरदाशन[1] और नोसादर इन दोनों को बराबर लेकर नींबू के रस में पीसकर गोली बनालें। सुबह–शाम गोली पानी में घिसकर दाद पर लगाने से दाद ठीक होता है।

80. दाद की दवा

चोकिया, सुहागा, रसकपूर, गंधक, अमलसार तथा पारा इन सभी वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर गाय के घी को 101 बार धोने के बाद इन वस्तुओं को मिलाकर लगाने से दाद ठीक होता है।

81. दाद की दवा

बाजरे के पत्तो को मल कर उसके अर्क को दाद पर मलने से आराम मिलता है।

82. दाढ के दर्द की दवा

अकलखोरा, नीला थोथा, कन्जा इन तीनों को बराबर लेकर जला कर पीसने के बाद रात को सोते वक्त दर्द की जगह मलने के बाद लार टपकाते रहे। इस दवाई को लगाने के बाद पानी अथवा खाने की चीज नहीं खानी चाहिए।

83 दाढ़ के दर्द की दवा पूरना बनिया, मथुरा दरवाजा

ज्वार के बराबर अफीम, ज्वार के बराबर कपूर, लाल मिर्च का एक छोटा टुकड़ा। इन चीजों को दो बूंद तेल और दो बूंद पानी में मिलाकर पीस लें। बाद में रूई के फांये में रखकर दाढ़ के नीचे रख लेवें और लार को टपका देवें तो दाढ़ का दर्द ठीक हो जाता है।

84. दिमाग की गर्मी (रचोद) की दवा पं. गेंदालाल बटवाल, मथुरा दरवाजा

रतनजोत की जड़ 7 तोला, काली मिर्च 2 तोला, फीरोज छः माशा इनको 15 दिन तक पीने से यह बीमारी ठीक हो जाती है। गुड़, तेल, खटाई से परहेज रखना चाहिए।

85. नकसीर क़ी दवा बूचीराम बजाज, डाकखाने के पास

प्याज के गट्टे को पीसकर उसमें थोड़ी पीली मिट्टी मिलाकर माथे पर लेप करने एवं सूंघने से नकसीर बंद होती है।

86. नकसीर की दवा

गधे की ताजा लीध लाकर उसका अर्क निकाल कर नाक के दोनों नथने में एक–एक बूंद डालने से नकसीर बंद होती है।

87. नकसीर की दवा

मठच कुन्द[2] के फूलों को पीसकर माथे पर लेप करने से नकसीर बंद होती है।

88. नकसीर की दवा

पीली मिट्टी को भिगोकर सुंघे या खस को भिगोकर सुंघने से नकसीर नहीं चलती।

89. नहरूआ की दवा–नारू रोग

चतरस यानी चीते की लकड़ी और कलमी सोरा और नीम की पत्ती इन तीनों चीजों को समान मात्रा में लेकर खूब बारीक पीस कर छान लें उसके बाद गुड़ में मिलाकर आना भर की गोली बनाकर रोगी को साबुत गोली निगलने से लिए देने से नहरूआ का पानी हो जाएगा। उसके बाद रार को तेल में ओटा कर फायें पर लगाकर नहरूआ पर चिपकाने से नहरूआ बहुत जल्दी ठीक होता है।

1.मृदाश्रृंगी 2. शाल्मली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

90. नासूर की दवा

इमली के चीपा (पेड़ की छाल) को घिसकर एक कपड़े पर लगाकर चिपका देने से आराम मिलता है।

91. निमोनिया की दवा

सांभर के सींग को जो कुट करके आक के दूध में 21 दिनों तक भिगोया जावे उसके बाद एक कूलड़ में डालकर उसके मुँह को कपड़ मिट्टी कर बंद कर दें। ढ़ाई किलो गोबर की आँच में रख दें। जब आँच बंद हो जावे तब ठण्डा होने पर निकाल कर एक शीशी में रख लें। निमोनिया वाले को आधे पान में रख़कर सरसों के बराबर रखकर खिला देवें। मरीज को दवाई सेवन शाम के वक्त करावें। तथा सेवन पश्चात् चादर ओढ़ा कर सुला दे। मरीज को खाने में एक पत्तली रोटी मूंग की दाल के पानी के साथ देवें। धीरे–धीरे मरीज की खुराक बढ़ानी चाहिए

92. पके हुए फोड़े की दवा

मेड फल[1] को घिसकर उसमें नमक की काकरी (डली) डालकर उबालने के बाद फोड़े पर बांधने से फोड़ा ठीक होता है।

93. परसूत की दवा–प्रसूतावस्था में उदरशूल गोला (अजीर्ण अतिसार) की दवा

एक रूपया भर बड़े जायफल, चार आना भर कायफल, चार आना भर अफीम, एक तोला छुआरे। इन चारों वस्तुओं को खूब महीन पीसकर अदरक के अर्क में गोली बनावे। ज्यादा परसूत हो तो एक–एक घन्टे से तीन गोली लेवें। खाने में दूध, चावल का सेवन करने से परसूत दूर होता है। गुड़, तेल, खटाई, उड़द की दाल इन वस्तुओं से परहेज करना चाहिए।

94. पसली के दर्द की दवा

तीन पतासे लेकर इनकी धूनी थोड़ी–थोड़ी देर बाद देने से पसली का दर्द बंद हो जाता है।

95. पसली के बुखार की दवा (न्यूमोनिया)

एक पीपर छोटी, आधा सोंठ की गांठ, पुजमान तुलसी के पाँच पत्ते, काला नमक इनको पीसकर थोड़े से पानी में गर्म करके दो रोज तक देने से पसली का बुखार ठीक होता है।

96. पसली के बुखार की दवा (न्यूमोनिया)

हुल–हुल के पत्तों का अर्क निकाल कर कान में डाल कर ओढ़ कर सोने के आधा घण्टे बाद पसीना आने से बुखार ठीक हो जाता है।

97. पसली के बुखार की दवा (न्यूमोनिया)

कट करंजा[2] की मिंजी को निकालकर महीन पीसकर झाड़ी बेर बराबर की गोली बनाकर सुबह, दोपहर, शाम को एक–एक गोली खाकर ऊपर दो तीन घूंट पानी पीने से आराम मिलता है।

---

1. मदनफल 2. कांटे वाले करंज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

98. पसली के दर्द की दवा नहनेराम, मु. तोपखो प्रो. कन्डेल

नीम का गोंद, लाल मिर्च बराबर मात्रा में लेकर बारीक पीसकर, पानी में उबालकर लेप करे। उसके बाद ऊपर से सेक करने से पसली का दर्द दूर होता है।

99. पागल कुत्ते एवं सियार काटने पर उपचार की दवा गुलाबसिंह जमादार

बन[1] के पेड़ में जो फूल आता है उन फूलों के अन्दर एक कीड़ा होता है। उन कीड़ो को लाकर धूप में सुखाकर एक शीशी में रख दें। जिस वक्त पागल कुत्ता या सियार काट खावे उस समय गुड़ की गोली में रखकर तीन दिनों तक देने से रोगी ठीक होता है।

100. पांव दर्द के उपचार की दवा पं. रामनारायण कस्बा–रूपावास

सोंठ रूमी को पीसकर घी में मिलाकर तीन रोज तक मालिस करने से आराम मिलता है।

101. पाँव दर्द के उपचार की दवा नत्थी फोजदार

आठ आना भर जवासी और पांच–सात काली मिर्च इन दोनों को भांग की तरह घोटकर एक पांव पानी में छानकर पीने से हाथ–पांव का दर्द ठीक होता है।

102. पीती की दवा–शीतपित्त परम कोरिया, अनाय दरवाजा गुमटी

छोटे मोहार का मोम लेकर पीती वाले रोगी को खटीया पर बैठा कर धूनी देने से आराम मिलता है।

103. पीलिया की दवा

छोकर की पत्ती नौ माशा, सात काली मिर्च, छः माशा मिश्री। इनको घोटकर ठण्डाई की तरह छानकर जितनी प्यास हो उतना पी लें। यह दवा जाड़े के और वर्षा के दिनों में नहीं पीना चाहिए। यह दवा गर्मी के मौसम की है। दवा सात दिनों तक पीनी चाहिए।

104. पेट दर्द से उपचार की दवा

आक के फ़ूल के बीच के फूल को लेकर पाचे नमक को मिलाकर पीसने के बाद चने के बराबर आकार की गोली बनालें। दर्द वाले को एक गोली देने से दर्द ठीक हो जाता है।

105. पेट में बच्चा मर जाय उसकी दवा

गाय के गोबर का रस निकाल कर एक तोला रस पोने तोला गाय के दूध में मिलावे। जिस स्त्री के पेट में बच्चा मर गया हो इस दवा को देते ही तुरन्त बच्चा बाहर निकल आवेगा और स्त्री बच जावेगी।

106. पेशाब बंद होने से उपचार

कलमी सोडा लेकर रात को एक कुलड़ में भिगो कर ओस में रख देने के बाद सुबह होते ही उस कुलड़ में इन्द्री को पाँच मिनट तक डाले रखकर निकालने के बाद शीघ्र पेशाब उतर आता है।

107. प्रदर रोग की दवा

झाड़ी बेर का बिरचन एक छटांक, सफेद खांड एक छटांक, घी पाँच छटांक इन सभी वस्तुओं को लेकर प्रतिदिन हलूआ बनाकर 15 रोज तक खाने से बीमारी ठीक होती है।

इसमें गुड़, तेल, खटाई, लाल मिर्च से परहेज रखना चाहिए।

---

1. बड़, वटवृक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

108. प्रमेह की औषधी

तीन फल गूलर के लेकर प्रत्येक फल में आधा तोला नमक भर दिया जावे। तीन फल सवेरे ही रोज सात दिनों तक खाने से प्रमेह रोग ठीक हो जाता है।

109. फसली (पसली) के बुखार की दवा सामलिया बलरसूका--मथुरा

आठ आना भर चिरायता, चार आना भर काली मिर्च, एक तोला मिसरी, एक तोला काली मिर्च को पीसकर, चिरायाता को साबुत ही एक रात तक तीन छटांक पानी में कुलड़ में भिगोने के बाद सुबह छान कर पीने से बुखार ठीक होता है। यह दवा तीन दिन लेनी चाहिए तथा गेंहूँ की रोटी तथा दाल का सेवन करना चाहिए।

110. फोड़ा की दवा

नीला थोथा, मुरदाशन, कबीला और कड़वा तेल इन चीजों को बराबर मात्रा में लेकर पीसने के बाद गर्म तेल मिलाकर फोड़े पर लगाने से फोड़ा ठीक होता है।

111. फोड़ा की दवा

साठी[1] के पत्तों को पीसकर टिकियां बनाकर बांधने से तथा जल भांगरे को पीसकर घी में छोंककर बांधने से फोड़ा ठीक होता है।

112. फोड़ा की दवा

आक के पत्तों को जलाकर, कपड़ छान करके चार रत्ती मुरदासन[2] खूब महीन पीसकर उसमें मिलाकर रख लें। एक तोले भर घी को 101 बार धोकर इन वस्तुओं को मिलाकर फोड़े पर लगाने से फोड़ा ठीक होता है। तथा किसी के धारदार हथियार से लग जावे तो भी यह दवा उपयोगी है।

वासी[3] पत्थर एक रूपया भर को महीन पीसकर कांसी की थाली में एक रूपया भर तेल डालकर इन दोनों वस्तुओं को खूब रगड़े फोड़ा ठीक होता है।

चोट पर भी यह दवा उपयोगी है।

113. फोड़ा की दवा पं. देवसुख, मु. चौबुरजा

एक रूपया भर गेंदा की पत्ती, चार आना भर लीला थोथा, एक पैसा भर दही में दो दिनों तक पड़ा रहने दे फिर उस दही में इन चीजों को मिलाकर फोड़े पर लगाने से फोड़ा ठीक होता है।

114. फोड़ा फुंसी की दवा

कड़वा तेल और मोम इन दोनों को गर्म करके रख लेवें और फांये पर लगाकर चिपका देवें जो घाव अच्छा नहीं होवे तो सत्यानासी के पत्तों को पानी में पीसकर तेल में छोंक कर बांध देने से घाव ठीक हो जाते है।

---

1. पुनर्नवा 2. मुरदासिंगी 3. जिप्सम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

115. फोड़ा फुंसी की दवा

आंवला एक नग, कुचला 6 नग, काली मिर्च 12 नग, कबेला[1] 6 नग, मोर थोथा[2] 6 नग, आधे छटांक घी में इन सभी को जलाकर उसी घी में खूब बारीक पीसकर फोड़ा, फुंशी पर लगाने से रोगी ठीक होता है।

116. बदहजमी की दवा—अजीर्ण

सोंठ तीन माशा, बुरा छः माशा इनको मिलाकर फक्की लेकर ऊपर दूध या पानी पीने से बदहजमी ठीक होती है।

हरड़े बहेड़ा आंवला, नमक, छोटी पीपर, काली मिर्च सभी बराबर मात्रा में लेकर कूट छानकर महीन पीसकर छःमाशे की फक्की लेकर ऊपर से पानी पीने से बदहजमी दूर होती है।

117. बदहजमी की दवा

जमाल घोटा के अन्दर की मिंजी चार रत्ती, अरण्डी के बीज की मिंजी तीन रत्ती, केसर दो रत्ती इन सभी वस्तुओं को महीन पीसकर चीनी का बूरा मिलाकर चने के आकार की गोली बनाकर देने से बदहजमी दूर होती है।

बच्चे को इस दवाई का तीसरा हिस्सा देना चाहिए।

118. बदहजमी का चूर्ण

बड़ी हरेड़े एक तोला, जीरा छः माशा इनको थोड़े से घी में भून कर फिर उसमें दो माशा हींग, पाचा नमक एक तोला इन सभी वस्तुओं को महीन पीसकर एक बर्तन में रखने के बाद रोगी को चार आने भर खिलाकर ऊपर से गर्म पानी पिलाने से बदहजमी ठीक होती है।

बच्चों के लिए यह दवा दो आना भर देनी चाहिए।

119. बनरफ की दवा

केले के पत्ते को सुखा कर जलाने के बाद उसकी राख को दही में मिलाकर लगाने से आराम मिलता है।

मनसील को नींबू के अर्क में पीसकर मलने से एक घन्टे में आराम मिलता है।

120. बंदर काटने पर उपचार की दवा

बबूल के कोयले को खूब महीन पीसकर काटे हुए स्थान पर भर देने से घाव ठीक होता है।

121. बच्चे के सफेद दाग की दवा

पीली कोड़ी को जलाकर इसे खूब महीन पीसकर नींबू के अर्क में खूब खरल (घोटे) करें। जहाँ पर सफेद दाग होवे उस जगह पर इस दवा को लगाने से दाग ठीक होते है।

122. बच्चों के सिर दर्द ठीक करने की दवा

कड़वा तेल और नीम की पत्ती इनको तेल में जलाकर तेल को बच्चे के सिर पर लगाने से सिर दर्द मिट जाता है।

---

1. कम्पिलक 2. नीला थोथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

123. बच्चों के मुँह में छालों की दवा

पुरानी बाड़ को जलाकर उसकी राख का कोयला कर लेवें उसके बाद मोर के अण्डे का छिलका लेकर दोनों को बारीक पीसकर बच्चे के मुँह के छालों पर एक बार भुरक देने से आराम मिलता है।

124. बवासीर की दवा

बड़ी हरड़ की छाल और पुराना गुड़ तीन–तीन माशा की खुराक सुबह–शाम सात दिवस तक खाने से आराम मिलता है।

हल्दी को थूअर के दूध में दो घन्टे भिगाने के बाद, हल्दी निकालकर पत्थर पर घिस कर लगाने से तीन दिन में मस्सा गिर पड़ता है तथा आराम मिलता है। मस्सा गिरने के बाद घी लगाना चाहिए।

125. बवासीर की दवा

सतावर[1] की जड़ को पीसकर लगाने के बाद बवासीर वाले स्थान पर धूनी देने से बवासीर ठीक होता है।

126. बिच्छु का जहर उतारने की दवा

हल्दी, अन्डोरा[2] की जड़, बबूल की पत्ती इनको बराबर मात्रा में लेकर महीन पीस कर चार आना भर टिकिया बनालें। जब बिच्छू काट खावे जब टिकियों को चिलम में रख कर पिला देने से बिच्छू का जहर डंक पर आ जाता है। उसके बाद डंक पर कलमी सोडा लगाने से जहर उतरता है।

127. बिच्छु के काटने पर उपचार

जमालघोटा की मिंजी को जहाँ बिच्छू काटा हो उस जगह पर मिंजी को घिसकर लगाने से शीघ्र आराम मिलता है।

128. बिच्छु की दवा भूरे खां

भेंस के कान का मेल बिच्छू काटने की जगह पर लगाने से जहर उतर जाता है।

129. बिच्छु काटने पर उपचार की दवा

सत्यानाशी की जड़ को पीसकर लगा देने से रोगी ठीक हो जाता है।

130. बिच्छु काटने पर उपचार नत्थीलाल चपरासी, भरतपुर

पीने के तमाखू के पत्ते को या गुड़ मिली तमाखू को जिस तरफ बिच्छू काटे उसकी विपरीत दिशा की तरफ के कान में निचोड़ देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

131. बिच्छु काटने पर उपचार की दवा

नोसादर और चूना दोनों को मिलाकर जहाँ पर बिच्छू काटे वहाँ पर लगाने से आराम मिलता है।

मोम को गर्म करके लगाकर सिकाव करने से भी लाभ होता है।

---

1. शतावरी 2. अपामार्ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

132. बिवाई की दवा

बिवाई में गुड़ की बत्ती या मोम की बत्ती बनाकर भर दे तथा खूब सिकाव करने से आराम मिलता है।

133. बिवाई की दवा

मूली के पत्तों के एक रूपया भर अर्क में, बारह आना राल पीसकर मिला लेवें। उसके बाद आठ आना भर घी उसमें मिलाकर बिवाई में भरकर सिकाव करें तथा ऊपर से ठण्डा जल गिरावें तो बिवाई ठीक होती है।

134. बिवाई की दवा

राल को मीठे तेल में गर्म करके बिवाई में भरकर सेक करने से बिवाई ठीक होती है।

135. बाल तोड़ की दवा

गेहूँ कुचल कर बांधने से बालतोड़ ठीक हो जाता है।

136. बुखार की दवा मदनसिंह (मेनपुरी)

दो आना भर अफीम, दो तोला नीम की पत्ती इन को पीसकर चने के आकार से बड़ी गोली बनाकर गर्म पानी के साथ बीमार को पिलाने से बुखार ठीक होता है।

137. बुखार की दवा पं. गिरवर दयाल जी, वासन दरवाजा

तुलसी के पत्ते, कन जुमे[1] के पत्ते और काली मिर्च इन वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर खरल में घोटकर चने के बराबर गोली बनाकर सुखाकर रख ले। सुबह, दोपहर, शाम एक–एक गोली ताजा पानी के साथ लेने से बुखार ठीक होता है।

138. बुखार की दवा नारायण सराफ

पाव का तिसरा हिस्सा, फिटकरी, आधा किलो अनार की छिलके पाव भर खाण्ड। फिटकरी के फुला बनाने के बाद अनार के छिलकों को जलाकर दम पका कर दिया जावे। फिर इन तीनों वस्तुओं को खूब बारीक पीसकर रख लें तथा तीन–तीन रत्ती की पुड़िया बना लें। बुखार चढ़ने से एक घन्टे या डेढ़ घंटे पहले थोड़ी–थोड़ी देर के बाद सेवन कर ऊपर से ठंडा पानी दो–तीन घूंट बुखार वाले को पिलावें। गुड़, तेल, खटाई, उड़द की दाल से परहेज रखना चाहिए।

139. बुखार की दवा

मुनक्का में काली मिर्च और सेंधा नमक मिलाकर सिकाव करने के बाद खिलाने से बुखार ठीक हो जाता है।

140. भरिया फूटा की दवा

चीत[2] की जड़ को पीस कर एक फांये पर लगाकर घाव पर चिपकाने से घाव चोड़ा हो जाता है। उसके बाद राल ओर मेंड[3] पर अरण्डी के तेल में खूब गर्म करके फांये पर लगाकर घाव पर चिपका देने से घाव ठीक होता है।

---

1. नाय बूंटी 2. चित्रक 3. मृदार श्रृंगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

141. मन्दाग्नि की दवा

अदरक और सेंधा नमक मिलाकर सुबह खाने से भूख लगती है और भोजन में रूचि बढ़ती है तथा कफ खांसी दूर होती है।

हरड़ की छाल, पीपर, सोचर पीपर सभी छः माशे की मात्रा में लेकर कूट–छानकर गर्म पानी के साथ फक्की लेने से अजीर्ण दूर होती है।

142. महीन ज्वर की दवा–मोतीझरा (टाईफाईड)

एक तोला अजवायन रात भर एक कोरे कुलड़ में भिगोने के बाद सुबह उसके पानी को फेंक दें उसके बाद पानी से अजवायन को साफ धो कर खूब महीन पीस कर एक नमक की डली डालकर एक पाव के तीसरे हिस्से पानी में छानकर रख ले। एक सिकोरे को गर्म करके उस पानी को सिकोरे में छोंक दें फिर उसको पीकर बफारा ले लेवें। 10 दिन पीने से महीन ज्वर ठीक होता है।

गुड़, तेल, खटाई तथा चिकनाई से परहेज रखना चाहिए।

143. महीन ज्वर की दवा

गाय की छाछ एक सेर, पाव का चौथा हिस्सा पीपर, एक टका भर नमक। पीपर को छाछ में 24 घंटे तक भिगोकर रख दें उसके बाद छाछ समेत पीपर को एक कढ़ाई में डालकर उबाल लें सारी छाछ जल जाने के बाद सभी कढ़ाई से निकाल लें। सुबह–शाम एक–एक पीपर थोड़े से चीनी के साथ फाक लेने से 15 दिन में महीन ज्वर ठीक होता है।

तेल, खटाई, उड़द की दल, गुड़, मैथी को सब्जी से परहेज रखना चाहिए।

144. मिरगी की दवा

शनिवार के दिन जो कोई मुर्दा जला हो उसके माथे की हड्डी एक छटांक भर को गुड़ में मिलाकर चार आना भर की गोली बनावें। एक गोली सुबह तथा एक शाम को 15 दिनों तक खाने से मिरगी ठीक होती है। यह दवा लगभग एक वर्ष से कम समय वाले मिरगी वाले रोगी के लिए है।

145. मुँह के छाले की दवा (बच्चों के लिए)

पीपर की गीली छीपटी (छाल) लेकर उसका रस निकालकर थोड़ शहद मिलाकर दो रोज तक चटाने से बच्चे के मुँह के छाले ठीक हो जाते है।

146. मुँह के छाले की दवा खूबीराम, कस्बा– बयाना

चमेली के पौधे के पत्ते का अर्क मुंह में लगा दिया जावे अथवा चबाने से छाल ठीक होते हैं।

147. मोतीझरा की दवा कन्नाराम कोरिया

छोटी दुद्धी एक तोला, लोंग 2 नग इन दोनों वस्तुओं को पीसकर एक छटांक भर पानी में छानकर सुबह–शाम की खुराक का सेवन करें। पीने के पानी में दो लोंग डालकर पानी उबालकर ठण्डा होने पर मरीज को देना चाहिए। लोंग का उबला हुआ पानी 12 घन्टे पूर्व तक उपयोग लेना चाहिए। मरीज को हवा में नहीं बिठाना चाहिए तथा खाने में बाजरे का दलिया गुड़ के साथ कम मात्रा में देना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

148. रचोद की दवा CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri देवीराम–कोतवाली के पीछे

गऊ के पनोत (मूत्र) में पिपर घिसकर लगाने से रचोद शीघ्र ठीक होता है।

149. लू की दवा

एक पेड़ा पानी में घोलकर पिलाने से लू ठीक हो जाती है।

150. वादी के सूजन की दवा

छोटी राई को पीसकर सर्दी के मौसम में एक रूपया भर 8 रोज और गर्मी के मौसम में एक रूपया भर 16 रोज तक रायते अथवा दाल में डालकर खाने से अथवा फक्की लेने से आराम मिलता है।

151. वाय की दवा

चार माशा सोंठ, सरकंडे की जड़ चार माशा इन दोनों चीजों को जो कूट करके एक हण्डी में एक किलो पानी में उबाले जब पानी चार टका भर रह जावे तब छानकर पिलाने से वाय चली जाती है।

152. वाय के दर्द की दवा

सोंठ को मीठे तेल में पीसकर मालिस करने से वाय का दर्द जाता है। तेल को कुछ गर्म करके दर्द वाले स्थान पर लगाना चाहिए।

153. वाय, पेट दर्द की दवा

काले नमक की एक डरी को आंच में गर्म करने के बाद एक कुलड़ में एक छटांक पानी भर लेवें। आंच में से डरी निकाल कर कुलड़ के जल में बूझाकर डरी को निकाल कर फेंक दें। पानी को पीने से वाय, पेट दर्द ठीक हो जाता है।

154. सर्प काटने पर उपचार

केले का गुदा पत्ते के पास का लेकर उसका अर्क निकालकर रोगी को जितना पी सके, थोड़ा–थोड़ा पिलाते रहें और काटने वाले स्थान को चाकू से कुरेदें ताकि उसमें से खून निकल सके। जख्म के ऊपर रस को धार से डालने से आराम मिलता है।

तुलसी के पत्तों को खूब घोटकर उसका अर्क निकालकर सांप के काटे हुए को पिलाने के बाद जख्म पर धार से डालने से आराम मिलता है।

155. सफेद दस्त की दवा

एक तोला कच्ची सोंफ और एक तोला भुनी हुई इन दोनों को पीसकर इनके बराबर सफेद खांड मिलाकर रख ले और दिन में दो तीन बार थोड़ी–थोड़ी फक्की लेने से दस्त बंद हो जाते है।

सोंठ की गांठ को पीसकर एक पेठे में मिला कर खाने से दस्त बंद हो जाते है।

156. साँप के काटने पर उपचार की दवा

कागद की भुंगली बनाकर आधा रत्ती संखिया रोगी के नाक में फूंक देवे। नाक में गर्मी पहुँचने से छींक के जरिये जहर की गोली दिमाग में से निकल आएगी। इसी तरह 10 मिनट बाद दूसरे नाक में प्रयोग करने से आराम मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

157. साँप के काटने पर उपचार की दवा

आक के दूध में बाजरे का आटा गूंद कर उसकी रोटी बनाकर उसे जलाकर खूब महीन पीस लें। रोगी के मुँह से झाग आवे तब उस सूंघाने से रोगी ठीक होता है।

158. साँप के काटने पर उपचार की दवा

बाबू जगदीश सहायदार, भरतपुर

एक रूपया भर कड़बी पार[1] की जड़ को पीसकर थोड़े पानी में छानकर पिलाने से साँप का जहर उतर जाता है।

159. साल की दवा–शूल की दवा

तारपीन का तेल, मिट्टी का सफेद तेल और मीठा तेल इनको बराबर लेकर मिला लें। जिस जगह पर दर्द हो उस जगह दिन में तीन–चार बार मालिस करने से साल ठीक होता है।

160. सुजाक की दवा

मनोहरी सुनार

कलमी सोडा तीन माशा, एक तोला मिश्री, तीन तोला बड़ी इलायची के बीज इनको पीस कर फक्की लेकर ऊपर से आधा किलो कच्चा दूध जिसमें दो किलो पानी मिलाकर बिना मीठा किए सवेरे–सवेरे दवा को तीन चार रोज तक पीने से आराम मिलता है।

गुड़, तेल, खटाई, लाल मिर्च, मूंग की दाल से परहेज रखना चाहिए तथा रोगी को ठण्डी छाया में सोना चाहिए।

161. श्वांस की दवा

खुदाबक्स–भरतपुर

भड़भूंजा की भट्टी (भाड़) में एक धूएं का फूल जैसा बन जाता है उसे मंगवाकर एक चावल के बराबर मात्रा में लेकर सुबह शाम पान में रख कर 14 दिनों तक खाएं तथा छटांक घी या मलाई खाने से आराम मिलता है।

परहेज में तेल, खटाई, उड़द की दाल, लाल मिर्च नहीं खानी चाहिए।

162. हिचकी बंद करने की दवा

सोंठ पीपल का चूर्ण शहद में मिलाकर खाने से हिचकी बंद हो जाती है।

163. हिलते दाँत की दवा

कन्हैयालाल दरोगा

खड़यार[2] की छाल को पीसकर उसमें थोड़ा नमक मिलाकर रगड़ने से दाँत मजबूत होते हैं।

ओंगा[3] की जड़ की छाल को लेकर खूब बारीक पीसकर उसमें नमक डाल कर दाँत रगड़ने से दांत मजबूत होते हैं।

---

1. तुम्बी 2. बकुल, मौलश्री 3. आंधी जाड़ा, अपामार्ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मांजी गिरिराज कंवर भरतपुर द्वारा विभिन्न रोगों पर एकत्रित कराये गये प्रयोग सिद्ध आयुर्वेदिक नुस्खे

पृष्ठ 30 से 73

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2.

मांजी गिरिराज कंवर भरतपुर द्वारा विभिन्न रोगों पर एकत्रित कराये गये प्रयोग सिद्ध आयुर्वेदिक नुस्खे

—डॉ.वसुमती शर्मा
वरिष्ठ शोध सहायक
कार्यालयाध्यक्ष
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

"जो आपके पास मुश्किल तजरवेन के बड़ी–बड़ी बीमारियों के नुस्खा है। वह बड़ी मेहरबानी करके इस कॉपी में लिख दे जी, बड़ी मेहरबानी होगी जी ओर हाथ की लिखी पुरानी किताबें आप मेहरबानी कर भेज दें जी बड़ी मेहरबानी होगी जी। नकल करके वापिस दी जावेंगी जी।"

मुजिब हुक्म श्री माजी साहिब के नकल करके असल कॉपी सेवा में श्री माजी साहिब श्री 108 में दूरसाल है, ता. 24 मई 1920 ईस्वी लाल वैद्य भरतपुर।

संसार में अनेकानेक दुःख है जिनके विभिन्न कारण है। किन्तु संसार में ईश्वर की सृष्टि को विकसित करने वाले करूणा करने वाले अवतारी पुरूष सदैव प्राणियों के दुःखों को दूर करने के लिए ज्ञान अर्जित करते हैं तथा ज्ञान का प्रसार करते हैं। पूर्वकाल से ही धनवन्तरी, सुश्रुत, सुशेष, बौद्ध धर्म के अनेक आचार्य, जैनाचार्य एवं उत्तरकालीन राजाओं एवं वैद्यक गणों ने प्राणियों में होने वाले शारीरिक, मानसिक कष्टों को दूर करने के लिए अनेक विध औषधियों की खोज की, प्रयोग किये तथा औषधियों का प्रचार–प्रसार किया।

इसी क्रम में भरतपुर स्टेट (राजस्थान) की मांजी गिरिराज कंवर द्वारा भरतपुर राज्य में रहने वाले ज्ञानी लोगों को पत्र लिख कर यह आह्वान किया गया कि आप लोग जिन–जिन रोगों के इलाज के नुस्खे जानते हों, उन नुस्खों को लिख कर हमारे पास भेजें। आपकी बताई हुई दवाओं का विभिन्न रोगियों पर परीक्षण किया जायेगा और सफल होने वाले नुस्खों को रोगों के इलाज के लिए लिख लिया जायेगा। इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न स्थानों से जानकार लोगों ने रोगों का उपचार करने में समर्थ दवाओं के नुस्खें मांजी गिरिराज कंवर को प्रेषित किए। नुस्खों में रोशनलाल ब्राह्मण गांव कांमा, रामनारायण वैश्य गांव सालकी, चिंरजीलाल ब्राह्मण कांमा, किशनलाल पटवारी कुम्हेर, गिरिराज प्रसाद कुम्हेर, किशोरी दत्त शास्त्री, हरकिशन गांव इन्दुको.......आदि के नाम गिनवाये जा सकते है। मांजी गिरिराज ने इन नुस्खों को विभिन्न ग्रन्थों की सीरीज (श्रंखला) में लिखवाया। ऐसी लगभग 80 हस्तलिखित कॉपियों (हस्तलिखित ग्रन्थ) जो 20वीं शताब्दी के प्रांरभ की है, हमारे विभाग में सुरक्षित है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्राच्य विद्या की सार्थकता के रूप में इन्हें सार्वजनिक किये जाने हेतु उपयुक्त मानते हुए प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया।

इसी क्रम में ग्रन्थांक 704 (भरतपुर संग्रह) माप 21X17 पत्रांक 85, समय 1920 (लि. काल) को अनूदित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। आगे भी यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। विहंगम दृष्टि डालें तो इस ग्रन्थ पुस्तक में कंठमाला, गलगंड, पेटदर्द, विषम ज्वर, बवासीर, खांसी, बिच्छु काटने के, उपचार अतिसार, बालतोड़, पागल कुत्ते के काटने, नकसीर, मस्से, स्त्री संबंधी रोग, जलोदर, लू लगने, कान के दर्द आदि–आदि की अचूक दवायें है। जो प्रस्तुत है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोग औषध उपचार सूची

क्र. सं.	रोग का नाम	ग्रन्थ पत्र क्रमांक	पृष्ठ संख्या
1.	कंठमाला	1	37
2.	गलगंड की दवा	2	37
3.	नद रोग	2	37
4.	पेट के दर्द की दवा	2,3	37
5.	विषम ज्वर की दवा	3,4	37–38
6.	बवासीर की दवा	4	38
7.	हस्टपुष्ट होने का नुस्खा	5	38
8.	खाँसी की दवा	6	39
9.	बिच्छू काटने पर उपचार	7	39
10.	वायशूल का दर्द	7	39
11.	शीत ज्वर की दवा	8	39–40
12.	शीत भंजी की दवा	9–12	40–41
13.	विषम ज्वर, शीत ज्वर	12	41
14.	पुष्टाई की दवा	13	41
15.	विषम ज्वर	13	41
16.	अतिसार की दवा	14–15	41–42
17.	बालतोड़ की दवा	16	43
18.	पित्ती उभरने की दवा	16	43
19.	बावले कुत्ते के काटने की दवा	16	43
20.	रतौंधी (रात्रि में अंधापन) की दवा	16	43
21.	वाय की दवा	17	43
22.	खाँसी की दवा	17	43
23.	कफ की दवा	17–18	44

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

24.	नर की दवा (नाभि, चलने की दवा)	18	44
25.	तिल्ली बढ़ने की दवा	18–19	44
26.	दस्त बन्द करने की दवा	19	44
27.	भूख बढ़ाने की दवा	20	45
28.	घबराहट की दवा	20	45
29.	कफ और खाँसी की दवा	21	45
30.	घाव के गलाव की दवा	21–22	45
31.	स्त्री के आँचल पकने की दवा	22	46
32.	अतिसार से दस्त की दवा	23	46
33.	नकसीर की दवा	23–24	46
34.	बवासीर के मस्से की दवा	24	47
35.	फोड़े की दवा	24	47
36.	बावले सियार/कुत्ते के काटने की दवा	25	47
37.	हाजमे की दवा	25	47
38.	स्त्री के गर्भ ठहराने, वाजीकरण की दवा	26	47
39.	वाजीकरण की दवा	26	48
40.	पुष्टाई की दवा	26	48
41.	खाँसी, जुकाम, आफरा की दवा	27	48
42.	गले की गर्मी की दवा	27	48
43.	पेट के दर्द की दवा	27	48
44.	घबराहट की दवा	28	49
45.	बुखार व जुकाम की दवा	28	49
46.	जलोदर की दवा	29	49
47.	लू से उपचार की दवा	30–31	49–50
48.	हिचकी की दवा	31	50
49.	विषम ज्वर की दवा	31	50
50.	सर्दी से बुखार की दवा	32–34	50–51
51.	आतसक की दवा	34	51
52.	दिमाग को पुष्ट करने की दवा	35	52

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

53.	प्रदर रोग में योनि मार्ग से खून जाने की दवा	35–37	52–53
54.	मुंह पर मुंहासे की दवा	37	53
55.	कान के दर्द की दवा	37	53
56.	हाथ, पांव के तलवों में जलन की दवा	38	53
57.	जुकाम की दवा	38	53
58.	पेट में काँच चले जाने पर उसको बाहर निकालने की दवा	38	53
59.	आधा सीसी रोग की दवा	38	53
60.	कनेर के विष को उतारने की दवा	38	53–54
61.	सिर के दर्द की दवा	38	54
62.	जमाल गोटा से जुलाब में जलन की दवा	38	54
63.	भूख बढ़ने की दवा	39	54
64.	उदर रोग, आफरा, स्थान परिवर्तन से पानी बदलने की दवा	39–40	54
65.	पित्त ज्वर आदि के लिए चूर्ण	40	54
66.	संग्रहणी, खाँसी, ज्वर की दवा	40–41	54
67.	फोड़ा बवासीर की दवा	41	55
68.	संग्रहणी, अतिसार खूनी दस्त की दवा (वातरंग बूटी)	42	55
69.	बवासीर की दवा	42	55
70.	कोढ मोतिया बिन्द की दवा	42	55
71.	बवासीर की दवा	42	55
72.	मस्तक दर्द, मुंह में छाले, बवासीर, जूं मिटाने एवं रतौंधी बवासीर की दवा	43	56
73.	विषूचिका, कुत्ता काटने की दवा	43	56
74.	योनि की दवा	43	56
75.	छाजन की दवा	44	56
76.	हृदय रोग	44	56
77.	खुजली की दवा, वद रोग की दवा	44	56
78.	कण्ठमाला रोग	44	56
79.	मुँहासे की दवा	44	57
80.	नहरूआ रोग (नारू)	44	57
81.	पथरी रोग	45	57

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

82.	बवासीर, आमवात एवं पेट के कीड़े	44	57
83.	ज्वर	45	57
84.	विसारा लगना	45	57
85.	पीनस का लाभ	45	57
86.	काम शक्ति बढ़ाना	45	57
87.	अजीर्ण, श्वास रोग	45	58
88.	आवाज बैठ जाय तो दवा	45	58
89.	सफेद दाग की दवा	46	58
90.	बिवाई की दवा	47	58
91.	सर्दी से सिर दर्द की दवा	47	58
92.	वाय (वायु) में गांठ बढ जाये और टीस मारै तो दवा	49	58
93.	आंख के जाले की दवा	49	58
94.	दस्त की दवा	50	59
95.	हरताल फूँकने की विधि	50–51	59
96.	गरमी की बिमारी में टांकी पड़ जाय तो दवा	51	59
97.	प्रमेह की दवा	51	59
98.	हैजा की दवा	52	59
99.	खूनी दस्त की दवा	52	60
100.	आँख दुखने की दवा	53	60
101.	गर्मी से घबराहट की दवा	53	60
102.	बिच्छु की दवा	53	60
103.	धारदार हथियार से चोट लगने पर	53	60
104.	पुष्टाई की औषधि	54	60
105.	नकसीर की दवा	55	61
106.	आतसक की दवा	56	61
107.	कान के दर्द की दवा	56	61
108.	चौथईया ज्वर की दवा	56	61
109.	चौथईया ज्वर कान के दर्द की दवा	57	61–62
110.	जलन्धर की दवा	57	62

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

111.	संग्रहणी की दवा	57	62
112.	नासूर की दवा	57	62
113.	मूत्र में खून बंद करने की दवा	58	62
114.	पेशाब में चिनग बंद करने की दवा	58	62
115.	प्रमेह की दवा	58	62
116.	इन्द्री जुलाब की दवा	59	63
117.	सन्नीपात	61	64
118.	संग्रहणी की दवा	62	64
119.	सर्दी का इलाज	63	64
120.	स्वप्न दोष की दवा	64	65
121.	रतूआ की दवा	64	65
122.	मिरगी की दवा	65	65
123.	दस्त की दवा (जब स्त्री के पेट में बच्चा हो)	65	65
124.	दिमागी ताकत की दवा	66	66
125.	सांस (फूलने)की दवा	67	66
126.	बवासीर की दवा	67	66
127.	सिर में ताकत का सुगंधित तेल	68	66
128.	जहर बढ़ने की दवा	68	67
129.	हाजमें का चूर्ण	68	67
130.	एडियाँ (पैरों का फटना)की दवा	69	67
131.	दस्त बंद करने की गोली	69	67
132.	पागलपन दूर करने की दवा	70	67
133.	कामदेव घृत	70	67–68
134.	खांसी की दवा	71	68
135.	साँस की दवा	71–72	68
136.	वाय रोग की दवा	72–73	68
137.	चोट के कीड़े दूर करने की दवा	73	68–69
138.	आधा सीसी दर्द की दवा	74	69
139.	पुष्ट की दवा	75	69

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

140.	मकड़ी फिरने की दवा	75	69
141.	गर्भ के रहने की दवा	75	69
142.	पसली का बुखार	76	69
143.	सांस, दमा, पुरानी खांसी की दवा	77	70
144.	तिल्ली बढ़ने की दवा	77–78	70
145.	खुजली (खाज) की दवा	78	70
146.	उदर रोग का चूर्ण	79–80	70–71
147.	सिर में घाव होने की दवा	80	71
148.	सुजाक रोग की दवा	81	71
149.	टांकोन की दवा	81	71
150.	पसलियों का बुखार	82	71
151.	दस्त बंद करने की दवा	82	72
152.	ऐंठा की दवा	82	72
153.	विषम ज्वर की दवा	83	72
154.	हाजमा का जुलाब	84	72
155.	हैजा की दवा	84	72
156.	पीलिये की दवा	84	72
157.	वाय रोग की दवा	85	73
158.	पैर में घाव भरने की दवा	85–86	73

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभिन्न रोगों पर प्रयोग सिद्ध नुस्खें

1. कंठमाला

मूल पाण्डुलिपि पत्र क्रमांक – 1

संभालू की जड़ को जल के साथ खूब बारीक चंदन के माफिक घोंट कर कंठमाला पर लेप करें। इस प्रकार पाँच दिवस लेप करने से कंठमाला रोग दूर हो जाता है।

2. गलगंड की दवा

पत्र सं. – 2

शंखाहूली को जल में ठंडाई की तरह पीस कर छानकर प्रातः काल, संध्या काल नित्य प्रति पिया करें। इस प्रकार 15 दिवस तक पीने से गलगंड रोग जाता रहता है। खाने में गाय का ताजा घृत खायें। परहेज तैल, गुड़, खटाई नहीं खायें।

(रोशनलाल ब्राह्मण गांव–कामां)

3. नद रोग–विबन्ध, कब्जी

पत्र सं. – 2

हरड़ की छाल, पीपरी और सेन्धा नमक को खूब बारीक पीसकर अरंडी के तेल में पकाकर शीशी में रखलें, फिर इन औषधियों में से नित्य प्रति 8 माशा खाया करें, तो नद रोग दूर हो जायेगा। परहेज तेल, गुड़, खटाई नहीं खायें तथा खाने में दूध खूब पीयें।

4. पेट के दर्द की दवा

(पत्र सं. 2,3)

सामग्री :– दात्युणी[1] 2 तौला, पीपरी 2 तौला, सौंठ 2 तौला, जवाखार चार आना भर सज्जी 4 आना भर और 6 तौला चोख व बिडनोन[2] 2 तौला।

इन सब औषधियों को खूब बारीक पीसकर चूर्ण बना कर, गर्म जल के साथ चार माशा नित्य खाने से पेट का अफरा, पेट दर्द, अजीर्णता, पेट का गुड़गुड़ाना आदि दूर हो जायेगा।

5. विषम ज्वर की दवा

पत्र सं. –3)

कटेली की जड़, गिलोय, नागर मोथा, आँवला, काकड़ासींगी सभी की धेला–धेला भर मात्रा लेकर इन सभी औषधियों को खूब बारीक पीसकर सात पुड़िया बना लें, फिर नित्य प्रति एक पुड़िया प्रातःकाल औटा कर (उबाल कर) तीन माशा शहद में मिला कर चाटने से विषम ज्वर ठीक हो जाता है।

<u>परहेज</u> : तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च एवं बादी की चीज न खायें।

---

1. दाल चीनी 2. विड लवण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पथ्य : खाने में पतली मूंग की दाल के साथ गेंहू की बिना चुपड़ी रोटी डुबा–डुबा कर खाया करें।

अथवा

(पत्र सं. –3,4)

चित्रक (धेला भर), गिलोय (धेला भर), मुनक्का (नग 2), सौंठ (धेला भर), पीपरी (धेला भर), बनपस्या[1] सर्बती, इन सभी दवाईयों को जौ कूटकर पाव भर जल में अग्नि पर चढ़ावें तथा जल जब आधा पाव हो जावे तो छान कर, इस शर्बत को मिला कर चार दिवस तक पीयें।

परहेज :– कढ़ाई की कोई वस्तु, गुड़, तेल, लाल मिर्च, सौंठ वगैरहा नहीं खायें दूध का सेवन करना अच्छा है।

(रामनारायण वेश्य, गांव– सालकी)

6. बवासीर की दवा

(पत्र सं. –4)

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोह भस्म इन तीनों औषधियों से दूगनी मात्रा में सौंठ, काली मिर्च, नागकेसर, नागरमोथा, वायविडंग, सम्भालू, पीपरामूल इन सब औषधियों का चूर्ण बना लेवें। यानि खूब बारीक पीसकर कपड़छन कर चने के समान गोलियां बना कर नित्य प्रति प्रातः तथा संध्या, समय एक–एक गोली पानी के साथ खायें तो बवासीर रोग जड़ से जाता रहेगा।

परहेज : तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च और कढ़ाई की कोई वस्तु नहीं खायें। खाने में दूध, गेंहू की बिना चुपड़ी पतली रोटी खाया करें। इस दवा को तीन दिवस तक प्रयोग में लें।

7. हष्टपुष्ट होने का नुस्खा

(पत्र सं. –5)

सामग्री :– बादाम की मींजी (पाव भर), पिस्ता (पाव भर), गोला (आधा पाव), किशमिश (पाव भर), चिलगोजा (पाव भर), मैदा अच्छी (आधा सेर), निरगुन्डी (4 तौला), ब्रह्मडन्डी (2 तौला), गाय का घृत ताजा (एक सेर), शक्कर या मिश्री (आधा सेर)

विधि :– मैदा को घृत में भूने जब तक की बादामी रंग न हो जाय, फिर खान्ड की चाशनी बनाकर भुनी मैदा को मिलायें। हलुआ बना कर इसमें सब मेवों को मिलायें। इसमें से पाव भर नित्यप्रति खायें। इस प्रकार 21 दिन तक खाने से शरीर का बल दुगना हो जायेगा, कमजोरी जाती रहेगी, नपुसंकता की बीमारी कभी नहीं होगी।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च इनको दुगने दिवस तक न खायें एवं इस अवधि में स्त्री संग न करें। सवेरे ही दस बजे बाद एक छंटाक काली मिर्च व आधा पाव घृत या लोनी मिला कर खा लिया करें।

(चिरंजीलाल ब्राह्ममण, कांमा)

1 बनफ्शा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8. खाँसी की दवा

(पत्र सं. –6)

उंटकटेरी को गुरूवार के दिन, प्रातःकाल, उन्नत स्थान की ओर हरे रंग की जौ की जड़ों मिट्टी (जो कीड़ों से प्रभावित न हो), समेत, अनटोके (बिना बोले) ही लावै ओर इसकी कूटी करके छाया में सुखावै। अधसूखी रहे, तब उसे कलश में भर दें और उसमें पाँचों नमक डाल दे, फिर इस हाँडी का मुख कपड़मिट्टी कर के गजपुट की आँच में फूँक दें। जब फूँककर (जलकर) काली राख हो जायेगी, इसको कपड़छन कर लें, फिर शीशी में भर कर रखलें इस दवा में से 2 रत्ती प्रमाण चाटे तो खुश्क खाँसी चली जायेगी, व इस दवा को शहद में मिला कर चाटे तो कफ रोग दूर होगा।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च, कड़ाई की चीजें नहीं खायें। खाने में गेहूं की रोटी बूरे से खायें।

9. बिच्छू काटने पर उपचार

(पत्र सं. –7)

1 रत्ती संखिया, 4 रत्ती गुलाबी फिटकरी इन दोनों को खूब बारीक पीस कर, अगर मनुष्य ज्यादा बेहोश हो जाय तब कागज की पूंगी के अंदर उसे भर कर नाक के अंदर लगा कर फूंके तो थोड़ी देर बाद नाक के द्वारा खून निकले तब समझले मनुष्य बच जायेगा।

फिर गुलाबी फिटकरी व घी मिला कर उसी समय चटा दें तो बिच्छू का काटा बच जायेगा।

(नारायण ब्राह्मण, चंद्रमा जी का मंदिर, (कामां)

10. वायशूल का दर्द

(पत्र सं. –7)

कड़वी तोरिया (तुरई) के बीज नग 2, काली मिर्च व नमक इन दोनों वस्तुओं को ठन्डाई की तरह घोंट कर मरीज को पिला दें। इस प्रकार तीन दिवस करने से वायशूल का दर्द ठीक होता है। दो दिवस तक दवा न खिलायें। बल्कि पूरे तीन दिवस तक दवा देनी होगी।(पत्र सं. –8)

धनीराम, कोरिया गांव, (कामां)

11. शीत ज्वर की दवा

(पत्र क्रमांक –8)

हरताल 2 तौला, सूकी चूना (बुझा चूना) पैसा भर, नीला थोथा पैसा भर इन सभी औषधियों को ग्वार पाठे के रस में खरल करें ओर टिकड़ी बांधे, झुरे[1] की आँच दें। गजपुट देवें फिर बाहर निकाल एक रत्ती की मात्रा कचूरे के साथ खायें तो शीत का ज्वर जायेगा।

विषम ज्वर होने पर उसको चीनी के साथ खाने से आराम होगा।

1. कण्डों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथवा

(पत्र सं. –8)

पीपरी एक तौला, मेनशिल डेढ़ तौला, तुम्बी का बीज एक तौला, कटेली[1] के रस में आठ पहर खरल करें। मूंग बराबर गोली बांधकर लें, तो शीत ज्वर दूर होता है।

अथवा

शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामुखी, चौकिया सुहागा, सिंगिया[2], खपरिया[3], नीला थोथा। यह सभी दवा बराबर–बराबर भाग में ले लें। कटेली के रस में सात दिन घोंट कर गोली सम्पुट करें। तांबा का पात्र बनायें, उसी में पूर्वोक्त दवा रख, मुंह बंद कर बालू का यंत्र बनाये, दीपाग्नि चार पहर तक आँच दें। फिर निकाल कर फूंक कर रख दें। अनुपान तुलसी के रस, मिर्च, चीनी 2 रत्ती रस दे तो शीत का ज्वर दूर होता है। (पत्र सं. –8, 9)

12. शीत भंजी की दवा

(पत्र सं. –9)

पारा भस्म एक भाग, सोनामुखी 2½ धेला भर, मेनसिल धेला भर, गंधक अम्ल सार पैसा भर, हरताल पैसा भर, नीला थोथा सवा दो पैसा, भिलावा सवा पैसा भर इन सभी दवाइयों का चूर्ण करके रखें। सेहूड़[4] के दूध में चार पुट दें, उसके बाद हाँडी के मुख में इन चीजों को रख कर, मुख को कपड़ा मिट्टी कर दें फिर चार पहर तक हाँडी में आंच देवें, जब दवाईयां ठंडी हो जायें तब एक माशा रस को पाँच माशा शक्कर में मिलाकर देवें, तो शीत ज्वर को यह दवा दूर करेगी।

पथ्य – खाने को छाछ और भात (चावल) मरीज को दें। (पत्र क्र. –10)

विशेष – उपर्युक्त तैयार दवाई–रस को एक माशा भर लेकर, तूतिया के साथ दे तो चौथइया–ज्वर जाता रहेगा।

अथवा–अन्य नुस्खों का कथन – नीम के बीज धेला भर, कीरमाल[5] के बीज धेला भर, शुद्ध मैनसिल धेला भर, शुद्ध नीलाथोथा धेला भर, पीपरी धेला भर, बकायन के बीज धेला भर, इन सभी दवाइयों को कूट, छान लें फिर इस चूर्ण में नीबूं का रस मिलाकर बारह पहर तक घोंटें, फिर इस मिश्रण से काली मिर्च के आकार की गोलियां बाँध लें, फिर कागजी–नींबू के रस में घिसकर आँख में अंजन करें तो विषम ज्वर जाता रहेगा। इस विधि के दवा के प्रयोग से इकतरा–तिजारी (त्रिज्वर) चौथइया ज्वर जाता रहेगा। इस दवा का दोनों आँखों में अंजन लगानें से सभी प्रकार के ज्वर ठीक हो जाते हैं।

अथवा

(पत्र सं. –11)

पीपर, गंधक शुद्ध, विशुद्धा हरड़जंगी[6], जमाल घोटा एक साथ कूटकर छान लेवै। नींबू के रस में डाल कर चार पहर तक खूब घोटे, तब इनकी टिकिया बनावै। फिर खाये तो ज्वर जाता रहेगा।

---

1. काटकारी 2. वत्सनाम 3. खर्परक 4. थूहर 5. अमलतास 6. कर्कट श्रृंगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथवा

कचूर, सौंठ, पीतपापर[1] देव–दारू, जवासार, बड़ी भटकटईया[2], नागरमोथा, कूटकी, चिरायता इन सब दवाईयों को समान भाग लेकर क्वाथ करकें छान कर पिलावैं। ऊपर से मीठा शहद में पीपर डाल करकें चटावै। तो त्रिदोष, विषम ज्वर दूर होगा।

अथवा

(पत्र सं. –11,12)

भटकटईया, धनिंया, सौंठ, गुरच[3], नागर मोथा, पटमाख[4], लाल चंदन, चिरायता, परवल के पत्ता, सिरस[5] की जड़, पुहकर मूल[6], कुटकी हत्रजौ[7], नीम की छाल, भारेगी, पित्त पापड़ा इन सब दवाओं को समान भाग लेकर जौ कूट करके इसका क्वाथ बनाकर देने से विषम ज्वर या शीत ज्वर ठीक हो जाते हैं।

13. विषम ज्वर, शीत ज्वर

(पत्र सं. –12)

<u>नुस्खा</u> – चिरायता, नीम की छाल, कुटकी, गुरच, हरड़, नागर मोथा, सरस की जड़, चिरायता, भटकटईया, कांकडासिंगी, लौंग, पित्तपापड़ा, चिरायता के फूल, बरबड़ की पत्ती, पीपरी, कचूर, इन सब औषधियों को सम भाग लेकर कूट कर कपड़छन करके चूर्ण बना लेवें तब चुटकी भर इस चूर्ण में से बासे जल[8] के साथ प्रातः काल नित्य प्रति लें तो विषम ज्वर, शीत ज्वर, जीर्ण ज्वर दूर होगा। शरीर ठीक रहेगा, भूख बढेगी, इसको रोज लिया करें।

14. पुष्टाई की दवा (पुष्टिवर्धक योग)

(पत्र सं. –13)

सोने का वर्क (एक माशा), मोती–दो माशा, ईंगुर[9] 3 माशा, मिर्च चार माशा, शोधा खपरिया आठ माशा, सबको खरल करें। माखन डाल कर खूब घोंटे, घोंटते–घोंटते मक्खन की चिकनाई जब तक न उड़ जावे तब तक घोटें फिर मरीज को मधु (शहद) एवं पीपरी के साथ इस दवा को दें, तो जीर्ण ज्वर, प्रसूती के रोग सब नष्ट होते है व पुष्टाई आती है।

15. विषम ज्वर

(पत्र सं. –13)

नुस्खा – शोधित पारा चार माशा, शोधित गंधक आठ माशा त्रिकुटा, सिंगिया[10], अकरकरा सभी 4–4 माशा लें।

इन सबको कटेली[11] के रस में सोलह पहर खरल करें। गोली चना के प्रमाण की बांधे व मरीज को खिलायें, तो विषम ज्वर जाता रहेगा। पुष्टाई खूब बढ़ेगी।

16. अतिसार की दवा

(पत्र सं. –13)

ईसबगोल पीसकर चूर्ण बना कर खाये तो अतिसार ठीक होता है

---

1. पर्पटक 2. कंटकारी 3. गिलोय 4. पद्माक्ष 5. शिरीष 6. पुष्कर मूल 7. इन्द्र जौ 8. गर्म पानी ठण्डा कर 9. हिगुंल 10. वत्सनाम 11. कंटकारी

अथवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अफीम, नागरमोथा, इन्द्रयव (जौ), कपूर, कांकडासिंगी, सौंठ, अतीस, शोधा हुआ ईंगुर समान भाग ले, पोस्त का जल तैयार करें व इन दवाओं को घोटे।

गोली मटर के बराबर बना कर खायें, तो बहुत प्रकार का अतिसार रोग समाप्त हो जायेगा।

(पत्र सं. – 14)

अथवा

नुस्खा – शुद्व सिंगरफ, शुद्व सिंगिया, कालीमिर्च, सुहागा, पीपरी, ये सब समान मात्रा में लें। महीन चूर्ण बना लें, उस चूर्ण को अदरक के रस में डाल कर गोलियां बांधे। फिर रोग का बल देखकर एक गुन्जा भर भार की गोली दें व रोग ज्यादा हो तो दो गुन्जाभर गोली दे तो अतिसार व त्रिकोण कोष्ठ रोग दूर होता है।

अथवा

अफीम धेलाभर, जायफल पैसा भर जावित्री पैसा भर, मोचरस पैसा भर, ईंगुर पैसा भर, वरोह पैसा भर, केसर पैसा भर, इन सबको पोस्ता के पानी में छोटे गोली मटर के आकार की बांधकर मिश्री चावल के पानी में घोलकर उसके साथ एक गोली दें, तो सभी प्रकार का अतिसार दूर होगा।

अथवा

(पत्र सं. –15)

नुस्खा – अफीम धेला भर, शोधा हुआ ईंगुर पैसा भर, नमक पैसा भर, मिश्री डेढ़ तौला, मोच रस पैसा भर, इन सबको पीस कर फिर बेल के गूदे का क्वाथ बनाकर, उसमें दो भावना दें, तब फिर चावल के जल से उस दवा को देने से अतिसार दूर होगा।

अथवा

(पत्र सं. –15)

नुस्खा – इन्द्र यव, नागरमोथा, मोचरस, लोद्र, धनई[1] के फूल, बेलगिरी, अफीम, शोधा पारा, शोधित गंधक ये सब बराबर भाग लेवें, गंधक को (काजल) कजरी करके सब दवा मिला दें। पारे को तीन पहर घोंटें, इसके बाद मरीज को 10 दिन तक दें। इससे सब तरह का अतिसार समाप्त हो जायेगा।

अथवा

ईंगुर सौंधा, कपूर, नागरमोथा इन्द्र जौ के चूर्ण को अफीम के रस में मटर के प्रमाण की गोलियां बनालें: चावल के घोल के साथ या गूलर के दूध के साथ मरीज को देते रहें, तो सभी प्रकार का अतिसार जाता रहेगा।

अथवा

लोध (धनई) के फूल, बेल का गूदा, नागरमोथा, आम की गुठली इनको सम भागलें खूब पीसकर, भैंस के मठा में आठ माशा तौल में लैं, तों अतिसार दूर हो जायेगा।

(केशवदेव ब्राह्मण कुम्हेर)

---

1. धातकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11. बालतोड़ की दवा

(पत्र सं. –16)

बालतोड़ होने पर साँभर (सैंधा) नमक 6 माशा, को खूब पीसकर तेल में मिलाकर बालतोड़ पर लगायें। एक दिन में यह तीन बार के अंतर से करें। तो बालतोड़ ठीक हो जायेगा।

(करीम बख्श, कुम्हेर निवासी)

18. पित्ती उमरने की दवा

(पत्र सं. –16)

गधा के दोनों पुट्ठों के एक–एक चुकोटी भर बालों को दो कौड़ी के बराबर गुड़ में मिलाकर दो गोलियां बनालें फिर पाँच मिनट के अन्तर से मरीज को दोनों गोलियों को दें दें, तो पित्ती पन्द्रह मिनट में दूर हो जायेगी।

19. बावले कुत्ते के काटने की दवा

(पत्र सं. –16)

गधे के दोनों कानों में से चार चार अंगुल भाग काट लें, फिर इनको एक छंटाक गुड़ में मिला कर बारीक पीस कर तीन गोलियाँ बना ले। तत्पश्चात् आधे घंटे के अंतराल से गोलियां देने से पागल कुत्ते के द्वारा काटा हुआ एक घंटा में ठीक हो जायेगा।

20. रतौंधी (रात्रि में अंधापन) की दवा

(पत्र सं. –16)

दो चुटकी हुलास[1] की, दोनों आँखों में भर दें, फिर पंखा से खूब हवा करें तो 15 मिनट में रोग ठीक हो जायेगा।

(नारायण जाट, कुम्हेर)

21. वाय की दवा

(पत्र सं. –17)

लहसुन की पोतियों को डालकर दूध में ओटाकर खीर बनायें और मरीज को खिलाया करें। इस प्रकार 15 दिन तक खाने से वाय जाती रहेगी। साथ ही दिन में दो बार भेड़ का दूध भी दें।

22. खाँसी की दवा

(पत्र सं. –17)

कटेरी के फल 2 तोला, अदरक के रस में खरल करें और 1 माशा छोटी पीपर को भी खरल, करके मिलाकर चना के बराबर की गोलीयाँ बना लें।

एक सुबह तथा एक शाम को गोली खाये तो 7 रोज में खाँसी ठीक हो जायेगी।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च नहीं खावें।

1. पलाशरस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23. कफ की दवा

(पत्र सं. –17,18)

बबूल के बक्कल (छाल) को एक छटाँक गुड़ के साथ और 1 गाँठ सौंठ की लेकर जल में उबालें। जब पानी 1 पाव भर रह जाये तब छानकर दिन में 2 बार पिलायें, पूरा कफ खत्म हो जायेगा।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई

(नत्थी राम, कुम्हेर)

24. नर की दवा (नाभि, चलने की दवा)

(पत्र सं. –18)

ग्वार पाठे के गूदे में फिटकरी को खूब पीसकर मिला दें, अब इसको सेक कर कपड़े पर रख कर नाभि पर बाँध दें, इसको रात के समय में बाँधें। प्रातः काल गरम पानी से छीटें देकर इसे तरी देवें। इस प्रकार दो दिन करने से आराम हो जायेगा।

(करीम बख़्स, कुम्हेर)

25. तिल्ली बढ़ने का उपचार

(पत्र सं. 18, 19)

नुस्खा – पाँच सेर हुलहुल मय जड़ पत्ता और फूल के साथ उखाड़ कर फिर इसकी कुटी करें। फिर इसमें कच्ची नौसादर पावभर मिलाकर 1 चपटा (गगरी) में भर दें। उसके बाद खूब पानी भर दें फिर गगरी के मुख पर सकोरा ढक कर कपड़ मिट्टी से बन्द कर दें, फिर इस घड़े को गोबर के घूरे में गाढ़ दे। 40 दिन के बाद निकालकर घड़े के जल को छानकर बोतलों में भर लेवें और फिर तिल्ली वाले रोगी को 1 तोला, बोतल में से यह दवा अतिरिक्त ताजा जल में मिलाकर नित्य प्रति प्रातः काल 40 दिन तक पिलाये तो तिल्ली दस्त के रास्ता से कट कर के निकल जायेगी।

परहेज – तेल, गुड़, खटाई लाल मिर्च न खायें।

खाने में – मरीज को बिना चुपड़ी चने के आटे की रोटियाँ गुड़ के साथ खिलायें।

(पत्र सं. –19)

कनखजूरा या कीड़ा पानी के संग पेट में चला जाये तो उसको निकालने की दवा मरीज को एक पाव रस मूली के पत्तों का, प्रातः काल ही पिलायें तो कीड़ा टुकड़े–टुकडे होकर के दस्त के रास्ते से निकल जायेगा।

(सकदूराम वैश्य, कुम्हेर जि. भरतपुर)

26. दस्त बन्द करने की दवा

(पत्र सं. –19)

नुस्खा – एक तोलाभर सौंठ, बड़ी इलायची आठ आना भर, रूमी मस्तंगी चार आना भर, हींग दो माशे, मिश्री दो तोला भर, मोचरस चार माशा, इन सभी औषधियों को खूब बारीक कूट कर चूर्ण बनायें, फिर छः माशा खुराक एक दिन में तीन बार खाये तो दस्त बन्द हो जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27. भूख बढ़ाने की दवा

(पत्र सं. –20)

पाँचो तरह के नमक एक तोला भर, हींग फूली हुई दो माशा भर, सौंठ चार आना भर, पीपर नग चार छोटी, इन सब औषधियों को खरल में कूट कर बारीक कर लें। फिर मिट्टी के बर्तन में डालकर (भून लेवें) फिर मिट्टी के बर्तन से निकाल कर पीतल के बर्तन में भर लें, फिर प्रातः व संध्या के समय 6–6 माशा मात्रा में खाये तो भूख खूब लगेगी और शरीर की कमजोरी दूर हो जायेगी।

28. घबराहट की दवा

(पत्र सं. –20)

एक तोलाभर मिश्री, आठ आना भर वंशलोचन, एक माशा वच, एक माशा छोटी इलायची, दो माशा सत गिलोय, चार आना भर छोटी पीपर, पाँच चाँदी के बरक, इन सब औषधियों को खूब बारीक पीस लें, इसके बाद इस दवा में से चार आना भर दवा लें और आठ आना भर, शहद में मिलाकर प्रतिदिन प्रातः काल खाया करें तो गर्मी से हुई घबराहट समाप्त हो जायेगी।

29. कफ और खाँसी की दवा

(पत्र सं. –21)

वंशलोचन चार आना, इलायची चार आना भर, पीपर चार आना, नागकेसर चार आना भर, कमलगट्टा चार नग, एक छंटाक मिश्री। इन सब औषधियों को खरल करके बारीक चूर्ण बनालें फिर पूरे चूर्ण की 7 पुड़ियॉ बनायें, तथा प्रातः काल 1 पुड़िया दवा, आठ आना भर शहद में मिलाकर चाटें। इस प्रकार 7 दिवस चाटने से खाँसी दूर हो जायेगी।

परहेज – तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च और कढ़ाई की बनी वस्तुऐं मरीज को 14 दिन तक नहीं देवें।

30. घाव के गलाव की दवा

(पत्र सं. –21,22)

मोमबत्ती का मोम छँटाक भर, मुरदासन एक छदाम भर, हल्दी धेला भर, मोम को छोड़कर बाकी दवाइयों को पीस कर फिर मोम को पिघलाकर एवं मिलाकर चने के समान गोलियां बना लेवें। और अब रूई का फाया बना कर जल में भिगोकर फिर निचोड़ कर इसको घी में धो–धो कर उसी में गोलियों को भी डाल लें। फिर गोली को गलाव वाले घाव पर रख कर, रूई के फाये को रखकर पट्टी कर दें, अगले दिन प्रातः काल पट्टी खोल कर फिर झरी से पानी डाल कर उस गलाव वाले घाव को साफ कर लें, फिर दूसरी गोली साफ रूई के फायें को घी में डाल कर ओर गोली को घी में डालकर इस नई गोली को घाव के ऊपर रखें, ओर फिर रूई का फाया रख कर पट्टी बांध दें। अगलें दिन प्रातःकाल झारी के पानी से घाव को धोकर नई गोली, नया फाया नई पट्टी बांधें। इस प्रकार 15 दिन तक उपचार करें। तो फोड़ा, गलाव, बाल तोड़ का घाव, व्रण शूल ये सभी रोग ठीक हो जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31. स्त्री के आँचल पकने की दवा

(पत्र सं. –22)

जवासे की जड़ को बछिया के गोबर में खूब बारीक पीस कर ठन्डी–ठन्डी लेप करने से आँचल ठीक हो जायेगें। यदि इस ठन्डी दवा के लेप से आराम नहीं हो तो जवासे की जड़ों को पीसकर बछिया का गोबर एक हाथ में लेकर उसमें पानी मिला कर किसी मिट्‌टी के बर्तन में खदका लें, फिर सहता–सहता गर्म लेप इस दवा का आँचलों पर पाँच दिवस तक लेप करें तो ठीक हो जाते हैं।

अथवा

नुस्खा – तम्बोली के यहां से बंगाले पान की कतरन लेकर पहले घृत में दोनों आँचलों पर घी में डुबा कर रखें। फिर एक–एक पान घृत में चुपड़ कर अलग–अलग दोनों आंचलों पर बांध दें इसी प्रकार दिन में दो बार करने से शीघ्र आराम हो जायेगा।

32. अतिसार से दस्त की दवा

(पत्र सं. –23)

नुस्खा :– एक छंटाक सौंफ, आधी छटांक पोस्त के डोडे, छोटी हरड़ नग (14) इन सभी को गाय के घृत में रख लें उसके बाद बादाम के समान रंग होने तक मंदी–मंदी आँच पर भून कर खूब बारीक पीस कर चूर्ण बना लें। फिर इस चूर्ण की मात्रा की दुगनी मात्रा में मिश्री मिला कर रख लें, इस दवा में से एक माशा चूर्ण गर्म पानी के दो घूंट के साथ प्रातः काल मरीज को देने पर आठ दिवस तक उपचार चलने से खून, राद[1] आदि बिलकुल समाप्त हो जाते है। खाने में मूंग की दाल, चावल, गेंहू की पतली रोटिंया खायें।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई नहीं खाना चाहिये।

33. नकसीर की दवा

(पत्र सं. –23)

(राम प्रसाद बाह्ममण, कुम्हेर, भरतपुर)

नुस्खा – गेन्दा की पत्ती (2 तौला) काली मिर्च नग (21), इलायची छोटी नग (11) इन सभी को ठन्डाई की तरह घोंट कर दिन में दो बार प्रातः काल, व संध्या को मरीज को पिलाया करें, तो गर्मी के कारण होने वाली नकसीर खत्म हो जायेगी।

परहेज – गर्म चीज नहीं खायैं।

अथवा

(पत्र सं. –24)

नुस्खा – इलायची नग (21), बादाम की मींजी एक छटांक, मिश्री आधा पाव, वच (4 आना भर), पोस्त चार तौला इनको ठन्डाई की तरह घोट कर मरीज को दो दिन तक प्रातः काल व सन्ध्या के समय दें, तो गर्मी के कारण हुई घबराहट ओर नकसीर का रोग दूर हो जायेगा।

1.मवाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

34. बवासीर के मस्से की दवा

(पत्र सं. –24)

बकरी की मींगनियों को भून कर काजल बना कर रखें, फिर मरीज के मस्सों पर सरसों का तेल चुपड़ दें, तथा ऊपर से मींगनियों का काजल (चूर्ण) बुरक दें। दिन में दो बार इस प्रकार करें। तीन दिवस में इससे आराम मिलेगा।

35. फोड़े की दवा

(पत्र सं. –24)

(किशनलाल पटवारी कुम्हेर, जिला भरतपुर)

नुस्खा –नीम की नरम–नरम सुर्ख रंग की कोपलें, ईंट का चूरा, गाय का घी, इन तीनों औषधियों को कांसे की थाली में रख कर, कांसे के लोटे से खूब रगड़े, जब चूर्ण काजल के समान बन जाये, तब उस मल्हम को मरीज के फोड़े पर लगाये तो फोड़ा ठीक हो जायेगा।

36. बावले सियार/कुत्ते के काटने की दवा

(पत्र सं. –25)

(अर्जुन सिंह, गांव सुलेठौ)

कर्स[1] के पेड़ की छाल को कूट पीस कर, घोट कर ठन्डाई की तरह पीया करें। तो दो दिवस तक पिलाने से बावले या पागल सियार के काटने का मर्ज चला जाता है, ओर बावले कुत्ते के काटने के मर्ज को भी यही उपचार ठीक करता है।

37. हाज़मे की दवा

(पत्र सं. –25)

(हीरालाल वैश्य कुम्हेर, जिला भरतपुर)

अकरकरा, कालीमिर्च, सौंठ, वच, दालचीनी, जाफरान, मोथा, पीपरामूल, जावित्री, सालिम मिश्री, लहसुन सफेद व सुर्ख, मस्तंगी, इन्द्रजौ, पोस्त, करंज, मुनक्का बबूल का गौंद, इन सभी औषधियों को समान मात्रा में लेकर खूब बारीक खरल कर पीस लें और चने के प्रमाण गोलियां बनायें, किन्तु इसमें जो गौन्द है उसको गोली में डालने से पहले भून लें, दिन में तीन बार में तीन गोलियां खायें, तो हाजमा ठीक हो जायेगा।

38. स्त्री को गर्भ ठहराने व वाजीकरण की दवा

(पत्र सं. –26)

अफीम, जायफल, कस्तूरी, कपूर, इन सब औषधियों को समान भाग ले कर खूब बारीक पीस कर बंगला पान के रस में भिगो कर चार–चार रत्ती प्रमाण की गोलियां बनायें फिर जिस समय पुरुष स्त्री के समीप जाये उस समय एक गोली को मुख में रखले तो वीर्य स्तम्भन हो जायेगा ओर स्त्री के गर्भ स्थापित हो जायेगा।

1. तिन्दुक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

39. वाजीकरण की दवा

(किशनलाल ब्राह्मण, कुम्हेर, भरतपुर)

कसौंधी के पेड़ के छिलके, और बीजों को खूब बारीक पीसकर, शहद में मिला कर गोलियां बना लें, नित्य प्रति गाय के दूध के साथ खाया करे तो वीर्य पुष्ट हो जायेगा।

40. पुष्टाई की दवा

(पत्र सं. –26)

गुडहल के फूल, किशमिश, मिश्री, ये सभी एक–एक पाव व दो सेर कनेर के फूल, सालिम मिश्री, पिस्ता, चिलगोजा इनमें से हर एक दो तौला लेकर कूटकर फिर बरसे हुए मेघ के तीन सेर पानी में मिला कर आठ दिन तक सूरज की धूप में रख दें, फिर छान लें, प्रातः काल प्रतिदिन चार तौला खुराक लेने से पुष्टाई हो जायेगी।

41. खाँसी, जुकाम, आफरा की दवा

(पत्र सं. –27)

आधा सेर जूफा, दो सेर पानी में रात को भिगों दें, फिर उबालें, जब पानी जल कर आधा सेर शेष रह जाये तब जूफा को मल कर उसके पानी को छान लें, अब इस दवा के पानी में एक सेर बूरा में किमाम पकायें, फिर इस दवा में से दो तौला रोज खाया करें। तो खांसी, जुकाम ओर पेट का आफरा दूर हो जायेगें।

42. गले की गर्मी की दवा

(पत्र सं. –27)

दो सेर लाल शहतूत पानी में मल लें, छान कर इस पानी को उबालें ओर जोश दें और इसमें एक सेर खांड डाल कर उसमें किमाम पकायें।
2 तौला नित्य प्रति खाया करें, तो गले में आग की सी जलन का कष्ट दूर हो जायेगा।

43. पेट के दर्द की दवा

(पत्र सं. –27)

10 बड़ी हरड़ (पीले रंग की) कूट कर पानी में भिगो दें, चौथे दिन हरड़ो को खूब पानी में मल कर छान लें। अब इस रस को अलग कर दें ओर उन भीगी हरड़ो को ग्यारह पान में कूट कर भिगो दें, चौथे दिवस मल कर उसके पानी को छान कर अलग निकाल लें, इसमें एक सेर खांड में किमाम पकायें फिर इस दवा में से दो तौला नित्य प्रातः काल खाई जाये तो पेट का सब प्रकार का दर्द दूर हो जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

44. घबराहट की दवा

(पत्र सं. –28)

रूई के फूल (कपास) के फूलों को लें, फिर गुलाब के फूलों के अर्क में पानी मिलाकर खूब उबालें, पानी जब आधा जल जाये तो इस मिश्रण के दुगनी तौल के कंद[1] में किमाम पकायें, फिर इस सभी दवा में से एक तौला दवा प्रातः काल खाया करें तो मरीज के दिल को शक्ति मिलेगी व गर्मी की घबराहट दूर होगी।

45. बुखार व जुकाम की दवा

(पत्र सं. –28)

पोस्त, कासनी, बर, तुख्म, खमारत प्रत्येक को एक–एक तौला लेकर आधा सेर पानी में उबालें जब यह चौथाई रह जाये, तब आधा तौला सिरका ओर एक पाव खाण्ड में इनके साथ किमाम पकायें और खुराक दो तौला रोज लें।

अथवा

बनफशा शरबत वाला ओर गुलवनफशा आधा–आधा सेर मात्रा में लेकर तीन सेर पानी में रात को भिगोयें व सवेरे के समय आँच पर उबालें, जब तीन पाव पानी रह जाये, तो सवासेर खांड या कंद मिला कर किमाम पकायें। फिर नित्य प्रति दो तौला दवा खाने से बुखार दूर होता है।

46. जलोदर की दवा

(पत्र सं. –29)

सौंफ दो तौला, सौंफ की जड़ दो तौला, गुलाब के फूल दो तौला, पलाश के (टेसू) फूल 1 तौला, मुंलहटी 2 तौला, खतमी 2 तौला, खुबानी 2 तौला, रेवन्द चीनी तीन तौला, खांड सफेद 24 छंटाक।

बनाने की विधि :–

सौंफ व सौंफ की जड़ को तथा मुलहटी को कूट कर इन सब औषधियों में दो सेर जल मिलाकर भिगो दें, फिर चार पहर तक आग पर पकाये तथा आधा सेर जल रह जाने पर इसको पानी में मले व बारीक कपड़ें से छान लें, फिर खांड या कन्द मिला कर, किमाम पकायें। चासनी पक जाये, तब रेवन्द चीनी को 3 तौला पीस कर मिलायें अब यथा योग्य लेते रहें। तो दिमाग की गर्मी, प्यास को समाप्त करता है तथा जलोदर की बीमारी को दूर करता है। जलोदर की बीमारी के दस्त बंद हो जाते है।

परहेज :– तेल, गुड़, खटाई, लालमिर्च इन्हे नहीं खायें, उपर बताई दवा सात दिन तक खायें।

47. लू से उपचार की दवा

(पत्र सं. –30)

दो सेर इमली को कूटी कर दो सेर पानी में चार पहर तक भिगो देवे। फिर मल के उसके पानी को कपड़े में छान लेवै। फिर जल को जोश देवै। जब आधा सेर पानी बाकी रह जाय तब तीन सेर कन्दिया खांड में किमाम पकायें। लेकिन यह शरबत मिट्टी की हाँडी में पकाया जाता है या कलई के बरतन में। खुराक चार तोले से पांच तोले तक फायदा देता है।

1. मिश्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri
फायदा – यह शरबत दस्तावर है और लू लग जाने में फायदा करता है।

परहेज – तेल, गुड़ खटाई नही खायें।

अथवा

(पत्र सं. –30,31)

शरबत गुलाब – पाव सेर गुलाब की पत्ती के आठ हिस्से करलें फिर चार सेर पानी में एक हिस्सा गुलाब का डाल कर जोश दे तब आधा सेर पानी जल जायें तब उसको छान ले फिर दूसरा हिस्सा गुलाब का इसी पानी में डालकर जोश दे और पहले पत्तीयों को छानकर अलग कर दें, फिर इस छने हुये पानी में सात बार जोश (उबाली) दें। इसमें तीन पाव कन्द मिलाकर किमाम पकायें। इसमें से नित्य–प्रति दो तोला खायें, तो प्यास की तकलीफ बन्द हो जायेगी।

48. हिचकी की दवा

(पत्र सं. –31)

हरा पोदीना आधा सेर को पानी में उबाले जब आधा पानी जल जाये तब खांड मिला लें और किमाम पकायें, फिर नित्य प्रति दो तौला पीयें तो तीन दिवस में हिचकी जाती रहेगी।

49. विषम ज्वर की दवा

(पत्र सं. –31)

(गिरराज प्रसाद, कुम्हेर)

तुलसी पत्र नग सात, कालीमिर्च नग सात, नागरमोथा तीन माशा, अतीस एक माशा

इन सब औषधियों को पानी के साथ पीस कर लुगदी बनाकर खाते रहने से वर्षा का, विषम ज्वर दूर हो जायेगा।

अथवा

नागर मोथा ओर पित्तपापड़ा के काढे को बनाकर 4–4 तौले की मात्रा में दिन में दो बार पीने से विषम ज्वर ठीक हो जायेगा।

50. सर्दी से बुखार की दवा

(पत्र सं. –32)

(किशोरी दत्त शास्त्री)

अजवाईन एक भाग, गुड़ दो भाग मिलाकर तीन–तीन माशे की तीन गोलियां बनायें, ज्वर आने से तीन घन्टा पहले एक–एक गोली एक–एक घण्टे के बाद तीन बार खा लें।

ज्वर का वेग तथा जाड़ा रूक जाता है।

अथवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूनी हुई गुलाबी फिटकरी, एक माशा, गुड तीन माशा मिलाकर एक या दो बार खा लेने से भी ज्वर दूर हो जाता है। लेकिन हवा न लगने पाये। खाने में हल्का भोजन करें।

अथवा

(पत्र सं. –32,33)

कन्जे की गूदी (8) तौला, अतीस एक तौला, पीपर छोटी (छ) माशा, रात को पीसकर कपड़े में छान लें। इस चूर्ण को एक–एक माशा की मात्रा में खुराक तीन–तीन घण्टे के अतंराल में पाँच बार दिन में देने से विषम ज्वर दूर हो जाता है। अथवा कंजे की गूदी एक तौला, पुरानी छोटी पीपर एक तौला, बबूल की पत्ती पाँच माशा, सफेद जीरा पाँच माशा, तुलसी की पत्ती तीन माशा कालीमिर्च तीन माशा सबको पानी में खरल करके झाड़ी बेर के बराबर आकार में गोली बनाकर छांया में सुखा ले एक–एक घन्टे के अंतराल से एक–एक गोली जल के साथ देने से विषम ज्वर जाता रहेगा।

अथवा

भूनी हुई गुलाबी फिटकरी, समुद्र फेन, सेन्धा नमक, काली मिर्च, शुद्ध कुचला, कन्डा की राख इन सब चीजों को बारीक पीसकर कपड़छान कर रख लें, व इस मिश्रित चूर्ण में से डेढ रत्ती तौल की खुराक एक दिन में तीन–चार बार देने से विषम ज्वर चला जायेगा।

अथवा

सफेद हरताल को दो या तीन दिन तक घीकुवार (ग्वारपाठा) के रस में घोट कर सुखा लेना चाहिये, और किसी मिट्टी की हांडी में बंद करके गज पुट में फूंक देना चाहिये। फिर इस मिश्रण को चार रत्ती की मात्रा में एक दिन में तीन बार शहद के साथ में चटायें।

अथवा

(पत्र सं. –34)

काली मिर्च नग चालीस, सौंठ एक तौला, आधा सेर जल में उबालें, जब आधा जल रह जाये, तब छान कर बचे हुए काढ़े को फिर आग पर चढायें ओर दो तौले बताशे उसमें डाल दें। उसी प्रकार एक या दो उबाल आ जाने पर गर्म–गर्म पीने से जाड़े से आने वाला ज्वर व विषम ज्वर बिलकुल दूर हो जायेगा। हल्का भोजन करें।

51. आतसक की दवा

(पत्र सं. –34)

(हीरालाल वैश्य, कुम्हेर)

कडोल को कूट कर छान लें, अब पहले दिन एक माशा भर, उसके बाद दूसरे दिन से दो माशा भर सात दिवस तक प्रति दिन एक माशा बढाते जायें ओर पानी के साथ इस चूर्ण को लेते रहें तो आतसक ठीक हो जायेगा।

परहेज :– खटाई, लालमिर्च व गर्मी की कोई वस्तु न खायें। हल्का भोजन करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

52. दिमाग को पुष्ट करने की दवा

(पत्र सं. –35)

मुन्डी धनिया, बालछड़, बनफशा, गिरी, बादाम, उश्तखुददुश, गुलेतुर्ख, ये सभी एक–एक तौला लेकर बारीक पीस लें ओर आठ तौला मिश्री इनमें मिलाकर इस मिश्रण में से नित्य प्रति एक तौला खाया करें, तो दिमागी ताकत बढ़ेगी साथ में भैंस का दूध व गाय का घी यथा शक्ति खायें तो सात दिवस में शरीर दुगना पुष्ट हो जायेगा।

53. प्रदर रोग में योनि मार्ग से खून जाने की दवा

(पत्र सं. –35)

(गिरराज हिन्दी पुस्तकालय कुम्हेर)

यदि रोग दो चार दिन का ही हो तो दो तौला या इससे कुछ अधिक अरन्डी का तेल दूध में मिलाकर पिलाना चाहिये।

अथवा

रात को चार तौला गुलाब का गुलकंद खा कर ऊपर से पाव दूध पीना चाहिये इससे प्रदर रोग जाता रहेगा।

अथवा

(पत्र सं. –35, 36)

बड़ी हरड़ की छाल तीन माशा, बहेड़ा की छाल तीन माशा, आंवला तीन माशा, सौंठ दो माशा, दारूहल्दी पांच माशा, पठानीलोध्र पाँच माशा, गुलाब के फूल तीन माशा, मिश्री दो तौला इन सभी औषधियों को बारीक पीसकर कपड़ें से छान लें, तीन माशे की मात्रा एक दिन में तीन बार ताजे पानी के साथ रोगी को दी जाय तो (5) दिन में प्रदर ठीक हो जाता है।

अथवा

दारूहल्दी एक तौला, रसौत एक तौला, बबूल का गौंद एक तौला, राल छःमाशा, पीपल की लाख एक तौला इन सब औषधियों को खूब बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में से तीन माशा की एक खुराक बनायें व दिन में तीन बार यह तीन–तीन माशा वाली खुराक ताजा पानी के साथ खाये तो प्रदर रोग समाप्त होगा।

अथवा

(पत्र सं. –36,37)

नागर मोथा (6) माशा, छोटी ईलायची तीन माशा, नाग केसर (6) माशा, गेरू (6) माशा दो तौला मिश्री इन सभी दवाईयों को जौ के बराबर कूट कर आधा सेर पानी में उबालने रख दें, जब पानी जल कर एक पाव रह जाय तब छान कर इस दवा को ठन्डी करें व दिन भर में तीन बार पिलावें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

केला की फली उसमें मक्खन, मिश्री मिला कर तीन बार खाने से प्रदर रोग ठीक होता है।

54. मुंह पर मुंहासे की दवा

(पत्र सं. –37)

(हरकिशन, गांव इन्दुको जिला–भरतपुर)

नुस्खाः–

काले तिल, चिरौंजी, गोले की गिरी थोड़ी सी वच इन सबको पानी में पीसकर लेप बनाकर मुख पर लगाना चाहिये, फिर कुछ समय पश्चात मुख को पानी से साफ करें तो मुख के मुहांसे तीन दिन में समाप्त हो जायेंगे।

55. कान के दर्द की दवा

(पत्र सं. –37)

नुस्खाः–

बकरी का दूध कान में डालने से कान का दर्द मिटता है ओर शरीर में मालिश करने से उस स्थान के दाह का रोग मिटता है।

56. हाथ पांव के तलवों में जलन की दवा

(पत्र सं. –38)

बकरी के ताजे दूध में सेन्धा नमक मिलाकर तलवों पर लगाये ओर कांसे की कटोरी से स्थान को घिसे तो हाथ पांव की जलन ठीक हो जाती है।

57. जुकाम की दवा

(पत्र सं. –38)

(सामलिया नम्बरदार गांव इन्दूको जिला–भंरतपुर)

गाय के दूध में कच्ची खांड मिला कर खाने से जुकाम में लाभ होता है।

58. पेट में काँच चले जाने पर उसको बाहर निकालने की दवा

(पत्र सं. –38)

गाय के दही को पीने से पेट का काँच निकल जाता है। गाय का दही दिन में 2–3 बार पीना चाहिये।

59. आधा सीसी रोग की दवा

(पत्र सं. –38)

दही, भात, मिश्री मिलाकर प्रतिदिन चार दिवस तक प्रातः काल खाने से आधा सीसी जाती रहेगी।

60. कंसेर के विष को उतारने की दवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पत्र सं. –38)

गाय के दही में चीनी डाल कर पीने से कंसेर का विष दूर हो जाता है।

61. सिर के दर्द की दवा

(पत्र सं. –38)

गाय के दही में, वडवेरी[1] के पत्ते मिलाकर लेप करने से सिर का दर्द दूर होता है।

62. जमाल गोटा से जुलाब में जलन की दवा

(पत्र सं. –38)

गाय के दही में 3 माशा कतीरा या पीसी हुई सुपारी मिलाकर चाटी जाय तो जलन में आराम होता हैं।

63. भूख बढाने की दवा

(पत्र सं. –39)

नागकेसर, सौंचर, धनिया, लैन्डी पीपर, दालचीनी, तमालपत्र, जीरा, अम्लबेतस पीपरी मूल, हरड़ इन सबकों समान भाग लेकर चूर्ण बना लें, चूर्ण में अनार के दानों के रस की सात भावना देनी चाहिये। चौथाई तौला से आधा तौला मात्रा तक खुराक ली जा सकती है। इससे भोजन में अरूचि ओर अजीर्ण दूर होते है।

64. उदर रोग, आफरा, स्थान परिवर्तन से पानी बदलने की दवा

(पत्र सं. –39,40)

जवाखार आधा सेर, सौंचर छाल आधा सेर, बड़ा गेरू आधासेर, नमक आधा सेर, सेन्धा नमक, आधा सेर, सज्जी खार आधा सेर, यव क्षार आधा सेर, आक के पत्ते पकें हुए, (32) डन्डा थूहर के पत्तें (32), इन्द्र वारणफल नग (5) ग्वार पाठा नग (3) हरी, भुई रीगंणी पाव सेर, बड़ी रींगणीं की जड़ पाव सेर, सरसों पाव सेर, केचलवण आधा सेर, फिटकरी एक पाव, नवसादर एक टका भर, टंकड खार एक छंटाक भर, खूब बारीक कूटकर हंडिया में भरकर कपड़ मिट्टी करके महागजकुट की आंच देनी चाहिये। ठन्डा होने पर कपड़े से छान कर शीशी में भर कर रख लेना चाहिये। इससे सभी उदर रोग, पेट का आफरा ओर स्थान परिवर्तन से लगा दोष दूर हो जाता है। संयम, परहेज से रहें।

65. पित्त ज्वर आदि के लिए चूर्ण

(पत्र सं. –40)

विरयाली, सिंघाड़े के बीज, हरड़, सूखी गिलोय, गुर्च, गेंगडे[2] को जलाकर उसका (कोयला) कड़ु चिरायता, काली जीरा, सूखे पत्ते नीम के, काली मिर्च इन सबको चूर्ण कर कपड़े से छान कर लगभग एक पाव की मात्रा में चूर्ण बनायें। आधा तौला से लेक़र एक तौला तक लेने पर पित्त ज्वर में लाभकारी है। परहेज से रहें।

66. संग्रहणी, खाँसी, ज्वर की दवा

(पत्र सं. –40,41)

(त्रिलोक चिन्तामणी गुटिका)

शुद्धपारा भाग एक, गंधक शुद्ध भाग तीन, अकरकरा भाग तीन, शुद्ध बच्छनाग भाग एक, अजवाइन भाग एक, वच भाग एक, सौंठ भाग एक, लेन्डी पीपर काली मिर्च भाग एक, अफीम भाग एक, समुद्रफैन भाग एक, लहसुन की कली भाग एक, राई भाग एक, दारू हल्दी भाग एक, हल्दी भाग एक, भांरगी मूल भाग एक, शुद्ध हरताल भाग एक, नौसादर भाग एक, सुरोखार भाग एक, शुद्ध सोमल भाग एक इन सब चीजों को बारीक पीस चूर्ण बना लें व इस दवा में अदरक के रस में चने के प्रमाण की गोलियां बना लें सवेरे एक गोली लें तो संग्रहणी, खांसी ज्वर ठीक हो जायेगा।

1.बड़े बेर के वृक्ष 2. गांगेरण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

67. फोड़ा, बवासीर, की दवा

(पत्र सं. –41)

(सुखाराम फौजदार, गांव–खानका)

जंगली गोभी को पीसकर, घी में छौंक कर उसकी टिकिया बनाकर गर्म–गर्म यदि फोड़े पर बांध दें तो फोड़ा जल्दी बैठ जाता है अथवा पक कर फूट जाता है। और यही यदि बवासीर के मस्सों पर टिकिया बांधी जाय तो लाभ होता है। चक्षुसूल में भी इसकी टिकिया बांधने से लाभ होता है।

इसकी जड़ की ठंडाई मूत्रघात तथा उपंदस को अच्छा करती है। बवासीर में इसके पत्तों की ठंडाई भी पिलाते हैं।

68. संग्रहणी, अतिसार, खूनी दस्त की दवा (वारतंग बूटी)

(पत्र सं. –42)

(रामसिंह फौजदार गांव सूरोतो)

इस रूखड़ी की पहचान यह (वारतंग बूटी) एक बालिश्त लम्बी बूटी होती[1] है। इसमें एक बाल निकलती है। स्वाद कसीला, हीकदार होता है। शरद ऋतु में पैदा होता है। और इसी रस के सेवन से सग्रहणी, अतीसार खूनी दस्त भी जाते रहते हैं। इसके (पाँच) माशे बीज रोजीना फांकने से संग्रहणी जाती रहती है। इसके पत्तो का रस निकाल कर फोड़े पर लगाने से फोड़े में आराम मिलता है।

69. बवासीर की दवा

(पत्र सं. –42)

हरा कसीस लकड़ी की राख, उपदंश तथा बवासीर में काम देती है।

70. कोढ़, मोतिया बिन्द की दवा

(पत्र सं. –42)

हिंगोर की छाल का चूर्ण खाने से कोढ़ को आराम होता है। खुराक (छ) माशे है।

मोतिया बिन्दु पर इसकी मींग घिस कर लगाते है, तो आराम होता है।

71. बवासीर की दवा

(पत्र सं. –42)

मुचुकन्द के फूलों को पीसकर चूर्ण करके उसका हलवा, बवासीर में लगाने से रक्त तत्काल बंद करता है।

---

1. मरोड़ फली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

72. मस्तक दर्द, मुंह के छाले, बवासीर, जूं मिटाने, एवं रतौंधी की दवा

CC0. Public Domain. Digitized by eGangotri

(पत्र सं. –43)

बकायन के पत्ते पीसकर लगाने से मस्तक का दर्द दूर होता है और इसकी छाल मुख में चबाने से मुख के छाले जाते रहते है, और इसके पत्तों का चूरा 6 माशे जल के साथ खाने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है। इस पेड़ के फल को पीसकर मुण्ड में लेप कर देवैं तो जूं दूर हो जायेगी। और प्रति दिवस इसके पत्ते खाने से रतौंधी दूर हो जायेगी।

अगर बच्चे की पसली चलती हो तो इसके पत्ते पीसकर अधगरम पेट पर बांधे।

बवासीर हो तो फल की धूनी देना, पत्ते पीसकर बांधना। मींजी खाना बवासीर की उत्तम दवाई है।

73. विशूचिका, कुत्ता काटने की दवा

(पत्र सं. –43)

बाजरे की जड़ का काढा विशूचिका[1] की उत्तम औषधि है। फूलो का चूर्ण गुड़ में मिलाकर दे तो कुत्ता काटे रोगी को दो दिन में ठीक कर देता है।

74. योनि की दवा

(पत्र सं. –43)

बैंगन के फल का चूरा योनि में दो दिवस चारों समय लगा रहे तो योनि सुकड़ जायेगी।

75. छाजन की दवा

(पत्र सं. –44)

(देवीसिंह फौजदार, सूरोतो गांव)

थूहड़ इसकी लकड़ी की राख 21 दिवस खाण्ड में मिलाकर 6 माशे नित्य प्रति खाने से छाजन को अच्छी करे।

76. हृदय रोग

(पत्र सं. –44)

गंधेल[2] घास औटा कर पीने से हृदय के सभी रोग दूर हो जायेंगे।

77. खुजली की दवा, वद रोग की दवा

(पत्र सं. –44)

पटसन के पत्तों का रस खुजली को अच्छा करता है। तथा इनका भूरता करके बद रोग पर बांधने से ठीक हो जायेगा। लेकिन भुरता सात दिवस तक बांधे।

78. कण्ठमाला रोग

(पत्र सं. –44)

जौ की जड़ को वछिया के पनोत[3] में पीस कर कंठमाला पर बांधे तो सात दिन में रोग जाता रहेगा। दिन में तीन चार बार लेप करें।

---

1. हैजा 2. सर्प गंधा 3. मूत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

79. मुहांस की दवा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पत्र सं. –44)

(शिव सिंह फौजदार, गांव इंदूको)

झाड़बेरी की लकड़ी की राख को घृत में मिलाकर मुँहासों पर लगाया करैं, तो मुँहासे जाते रहेंगे। दिन में तीन चार बार लगायें।

80. नहरूआ रोग (नारू)

(पत्र सं. –44)

चौलाई जड़ की लुगदी बछीया के पनोत में पीसकर नंहरूआ (नारू) पर बांधे तो नहरूआ जाता रहेगा।

81. पथरी रोग

(पत्र सं. –45)

चौलाई की भुजीया करके खाने से पथरी रोग जाता रहता है।

82. बवासीर, आमवात एवं पेट के कीड़े

(पत्र सं. –45)

करौंदे का रस पीने से बवासीर, आमवात, पेट के कीड़े दूर होते हैं।

83. ज्वर

(पत्र सं. –45)

करौदें के रस को कान में टपकाने से ज्वर जाता रहता है।

84. विसारा लगना (विषम ज्वर)

(पत्र सं. –45)

विसारा लगने पर कड़वी कचरी को आँच में भूनकर कचरी का मुंह काटकर खांड भरक़र उंगली में पहनावैं।

85. पीनस का लाभ

(पत्र सं. –45)

करौदें के पुष्प को सूंघने से पीनस में लाभदायक होता है।

86. काम शक्ति बढाना

(पत्र सं. –45)

करौदें के पत्ते खाने से काम शक्ति तीव्र हो जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

87. अजीर्ण, श्वास रोग

(पत्र सं. –45)

आडू[1] का फूल खाने से अजीर्ण तथा श्वास रोग दूर होता है।

88. आवाज़ बैठ जाय तो दवा

(पत्र सं. –45)

(सामलिचा फौजदार, इंदूको)

चावल गुड़ में मिलाकर पकावै और सोते समय एक घंटा पीछे, दो चमचे इसका गुनगुना जल पीवैं, तो इसी प्रकार दोनों समय 3 दिवस तक करैं तो आवाज़ का बैठना ठीक हो जायेगा।

89. सफेद दाग की दवा

(पत्र सं. –46)

(घनश्याम बहोरो, गांव अवारको)

जंगली अंजीर की छाल नौ तौले भर, चीता लकड़ी 4 तौले, गंधक 4 तौले काली हरड़ तौला, धनीया एक तौला इन सब औषधियों को गाय के बच्चे के मूत्र में मिलाकर औटावै, जब काटी हो जाय तब जंगली बेर के बराबर गोलियां बनावैं फिर 50 दिवस एक गोली दोनों समय खाया करैं, तब सफेद दाग जो शरीर, हाथ पैर में पड़ जाते हैं सो बिलकुल ठीक हो जाते हैं। इस दवा का परहेज तैल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च, गरम वस्तु दुगने दिवस तक नहीं खावैं। खाने के वास्ते मूंग की दाल खूब पानी वाली, मसालेदार में, गेहूं की रोटी हलकी–हलकी डाल कर खायें परन्तु दाल में काला नमक और काली मिर्च डाली जाय।

90 बिवाई की दवा

(पत्र सं. –47)

शीशम का तेल निकालकर बिवाईयों पर दिन में दो बार लगावैं तो बिवाई जाती रहेगी।

91. सर्दी से सिर दर्द की दवा

महुए के पत्तों को मीठे तेल में खूब औटावै, फिर छानकर तैल को सिर पर मलैं तो सर्दी का सिर दर्द जाता है।

92. वाय (वायु) में गांठ बढ जाये और टीस मारै तो दवा

(पत्र सं. –49)

शतावर को लाकर महीन–महीन टुकडा करैं, फिर इनको घी में छौकंकर या हलुआ बना कर खावैं या साग करके खावैं तो वाय से हाथ पैर की टीस मारना एवं गांठ बढ़ने से आराम होगा।

93. आंख के जाले की दवा

(पत्र सं. –49)

(रामहेत फौजदार, गांव धंघूको)

असली सांठी की जड़ को खूब बारीक पीसकर और असली शहद में मिलाकर आंखों में खूब अंजन करने से 21 दिवस में आराम होगा।

---

1. अडूसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

94. दस्त की दवा

(पत्र सं. –50)

(शिवसिंह फौजदार, गांव धंधू)

हरी उरसत[1] की छाल को टका भर पीस कर पाव भर दही में मिलाकर पीलावैं तो दस्तबंद हो जायेंगे।

पहचान –इसके पत्ते नीम जैसे होते हैं व पीठ चिकनी होती हैं। इसकी छाल भी चिकनी है, यह लम्बा पेड़ होता है और छत्तरीदार होता है। यह रूखड़ी ज्यादातर गोरधन स्थान में होती है।

95. हरताल फूंकने की विधि

(पत्र सं. –50–51)

एक तोले हरताल को आधा पाव नकछिकनी की लुगधी में गलहिकमत करके फूंक लो, पाँच सेर सत्यानासी का लुग्धा बनाकर एक तोला हरताल रख कर हांडी का मुंह बंद करके बीस सेर उपलों की आग दें। रतनजोत की इस खुरी का लुग्धा एक एक छटांक में रख कर फूंक लो। घी कुवार के अर्क में खूब खरल करके खुराक करैं। फिर आंवले की सेर भर लुग्धी में रखकर दस सेर आँच दे। एक छटांक हरताल को एक सेर विनोले की लुग्धी में रखकर मिट्टी के बरतन में तीन गिल हिकमत[2] करके एक मन आरने कंडों की आग दें या एक तोला हरताल को ढाक या पीपल पर ओंगा की राख एक सेर में रख कर फूंकैं। यह दवा बाल किशन दत्त की किताब से नकल की गई है।

96. गरमी की बिमारी में टांकी पड़ जाय तो दवा

(पत्र सं. –51)

कटी सुपारी की राख कर लें फिर पहले घी से जख्म को चुपड़ कर राख भुरक दें। इसी प्रकार सात दिवस दोनो समय करें तो टांकी जाती रहेगी। खाने के वास्ते घी अधिक खायें।

97. प्रमेह की दवा

(पत्र सं. –51)

गाय के कच्चे दूध में मिश्री एक तौला मिलाकर उलट पलट करके लस्सी बनाकर पीये। प्रातःकाल पीने से प्रमेह रोग जाता रहेगा।

98. हैजा की दवा

(पत्र सं. –52)

(चरणसुख फौजदार, गांव इंद्रको)

पोदीना हरा आठ आना भर, प्याज का अर्क आठ आना भर। पहिले प्याज का अर्क निकालें। फिर पोदिना को मिलाकर चटायें तो हैजा जाता रहेगा।

---

1. शिग्रु 2. समपक मिश्रण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

99. खूनी दस्त की दवा

(पत्र सं. –52)

आधा पाव जल में एक पैसा भर मिश्री और पैसा भर सौंफ दोनों को भिगो दे ओर दो घंटा भिगी रहनी चाहिए। फिर इसका अर्क ऊतरने पर कपड़े से छानने के बाद दिन में 2–3 बार पीने से तीन दिनों में खूनी दस्त बंद हो जाती हैं। लेकिन खूनी दस्त वाले को ज्वर नहीं होना चाहिए वरना वाय भर जायेगी।

परहेज – तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च नहीं खानी चाहिए। भुने गेहूँ के दलिया में नमक मिलाकर खिचड़ी खानी चाहिए।

100. आँख दुखने की दवा

(पत्र सं. –53)

(मेंडूराम लोधो, गांव विलावटी)

ग्वारीपल[1] गेरू को छाछ में घीसकर आँखों पर लेप करें जब सूख जाय तब आँख दुखनी ठीक हो जायेगी।

101. गर्मी से घबराहट की दवा

(पत्र सं. –53)

(कल्ला नम्बरदार लोधा, गांव विलावटी)

दो तौला शहद, मुहार को आधा सेर पानी में मिलाकर पिलावैं, इसी प्रकार दो बार दिन में करके पिलाने से आराम होता है। इसी प्रकार 2 पीपर भुरभुरा कर खूब पीस लें ओर शहद में मिलाकर चाटने से आराम होता है।

102. बिच्छु की दवा

(पत्र सं. –53)

(गिरिराज सिंह लोधे, गांव सुपावस)

आक के पीले पतल को आग पर अच्छी तरह सेक कर उसका अर्क नाक में सुंघाने से बिच्छु से काटे व्यक्ति को राहत मिलती है।

यह दवा आधा शीशी का दर्द भी ठीक करती है।

103. धारदार हथियार से चोट लगने पर (पत्र सं. –53)

दर्ब की जड को पानी में खूब घिसने के बाद चोट वाले स्थान पर लेप करने से घाव ठीक हो जाता है। इसको दिन में कई बार लगावें, सूखने पर पुनः लगायें।

104. पुष्टाई की औषधी

(पत्र सं. –54)

(रामरतन लोधो गांव, रणधीरपुरा)

पाव भर बादाम की मींगी, आधा पाव चिलगोजा, आधा पाव छोटी ईलायची, पाव भर पिस्ता, सवा दो सेर खाण्ड, सवा सेर मैदा, छंटाक भर गोरख मुडी। सर्वप्रथम भैंस का ताजा घी 2) सेर लें, फिर मैदा को कुछ घी में भूनकर पाक बना ले। उसके बाद खाण्ड की चासनी में मिलाकर थाली में ठण्डा करें। फिर उपरोक्त मेवा को जौकूट करके डाल दें। फिर इस थाली वाले पाक में से आधा–आधा पाव की कतली, पाव भर लें। फिर नित्य प्रति एक कतली प्रातः काल खाया करें, शरीर पुष्ट हो जायेगा। यथा–शक्ति सुबह–शाम गाय का दूध एवं घी पीया/खाया करें। प्रति दिन 100 बैठक लगानी चाहिए। परहेज – तेल, गुड़, खटाई नहीं खायें।

---

1. ग्वारपाठे के स्वरस से भावित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

105. नकसीर की दवा

(पत्र सं. –55)

(रामकिशन लोधो, गांव पालको)

2 तौला गैंदा की पत्ती — 2 तौला संखाहुली,

2 तौला रतन जोत, — 21 नग काली मिर्च,

4 तौला मिश्री

2 तौला शहद में उपरोक्त जड़ी बूटियाँ व काली मिर्च इन सब को खूब घोट लें। 2 तौला छोटी इलायची छिलके सहित पीसकर कपड़े से छानकर मिश्री शहद मिलाकर दिन में दो बार सात दिनों तक पीने से नकसीर बंद हो जाती है। गर्मी से घबराहट मुंह से खून आना, माथे में चक्कर आना, सुस्ती पिंडलियों का भड़कना आदि से राहत मिलती हैं। परहेज – तेल, गुड़, खटाई से परहेज रखें।

106. आतसक की दवा

(पत्र सं. –56)

(रामपाल लोधो, गांव गंगरसोली)

जिस इन्द्री पर घाव पड़ जाय, उसको गुलाब जल से साफ करें। फिर 2 माशा वंशलोचन 2 माशा इलायची, को महीन पीसकर, इंद्री पर घी चुपड़ दें और इनको भुरक दें। इसी प्रकार सात दिवस तक। प्रातः काल और सांय काल तक करें तो टांकी जाती रहेगी। यथा शक्ति घी खायें व गाय का दूध पीयें।

107. कान के दर्द की दवा

(पत्र सं. –56)

(रामकुमार ब्राह्मण, गांव रीठोडी)

अनार का छिलका गाय के बच्चे के मूत्र में उबालकर कान में दो या चार बूंद डालने से कान का दर्द ठीक होता है।

108. चौथईया ज्वर की दवा

(पत्र सं. –56)

(धरम सुख, लोधो गांव गंगरसोली)

धनन्तरगट एक रूखड़ी (पौधा) होता है, जिसके पत्ते के रस में काली मिर्च मिलाकर, कपड़े में छानकर के, जिस समय बुखार आये तब उसके नासका (नासिका) में फूंक देवें। बुखार से आराम मिलता है।

109. चौथईया ज्वर कान के दर्द की दवा

(पत्र सं. –57)

कउआठोडी यह रूखड़ी (झाड़ी) बयाना (भरतपुर)की तरफ मिलती है।

कउआठोड़ी के पत्तों को कुचल कर अर्क निकाल लेवैं, फिर कान में दो या तीन बूंद डालें तो कान का दर्द, चौथईया ज्वर जाता रहता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

110. जलन्धर की दवा

(पत्रं सं. –57)

पत्थर चूर पौधे के पत्ते का रस निकालकर पाव भर पानी में डालने के बाद रोगी को पिलाने से सात दिनों में आराम मिलता है।

111. संग्रहणी की दवा

(पत्र सं. –57)

(चंदाराम वैश्य, वराती राधा कुण्ड)

छुआरा का चूर्ण दही के साथ 6 माशे रोजाना लिया करें तो संग्रहणी जाती रहेगी। दवाई सेवन के समय घी का प्रयोग नहीं करें।

112. नासूर की दवा

(पत्र सं. –57)

इमली के बीजों को पानी में भिगोकर एक घंटा बाद इनके छिलके पानी के साथ पीसकर, कोडी की राख[1] करके इसमें मिलावें, उसके बाद नासूर पर बत्ती बनाकर रखने से नासूर ठीक होता है।

113. मूत्र में खून बंद करने की दवा

(पत्र सं. –58)

चाकसू[2] के 21 दानों को महीन पीसकर फाँके व ऊपर से चंदन चूरे का पानी पीयें तो सात दिन में मूत्र में रूधिर आना बंद हो जाता है। अथवा जवासा को पानी में पीसकर सात दिनों तक पीने से आराम मिलता है।

114. पेशाब में चिनग[3] बंद करने की दवा

(पत्र सं. –58)

- दूध में सुर्ख फिटकरी पीसकर, मिश्री दो तौला मिलाकर पीवैं, तो पेशाब में चिनग बंद होती है।

115. प्रमेह की दवा

(पत्र सं. –58)

(प.गिरिराज प्रसाद, कुम्हेर)

दो रूपया भर वजन के गोंद का पानी अथवा उतने ही वजन के अलसी का काढ़ा तथा जीरा व तकमरियें[4] का लुहाव[5], गिलोय का रस तरबूज के बीज, मुगलाई दो दाने, गौखरू इत्यादि, चिकनी शीतल दवाओं में से किसी एकाध को पीस घोट कर 5–6 घंटे बाद मधु तथा शक्कर के साथ देना चाहिए। इसमें तेल, गुड़, खटाई, मिर्ची का सेवन नहीं करना चाहिए। घी यथा शक्ति खाना चाहिए।

---

1. कपर्दिका भस्म 2. शीतल चीनी 3. चिनगारी 4. तुरकरूहा 5. लुआब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

116. इन्द्री जुलाब की दवा

(पत्र सं. –59)

पाखाणा भेद, सुरोक्षार, श्वेत चीनी, इलायची दाना इन चारों वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण बनाने के बाद, आधा तौला की मात्रा में, तीन–तीन घंटे के अंतर से, ज्यादा दूध पानी के साथ मिलाकर सुबह ही एकाधिक वार पीने से मूत्र की तेजी से सभी रूकावट घुलकर जलन कम हो जाती है, ओर प्रमेंह शान्ति हो जाती है। परंतु परहेज के रूप में बिना चुपड़ी गेहूँ की रोटी और मूंग की दाल खायें। सात दिन में प्रमेह जाता रहता है।

<u>अथवा</u> – सेमल की जड़ के एक तौला छाल का लुबाब बनाकर पानी में मिलाकर छानने के बाद शक्कर के साथ 6–6 घण्टे में पीना चाहिए।

<u>अथवा</u> – दो दो रूपये भर गूर्च पीसकर उसके पानी को साफ कर उतनी ही शक्कर मिलाकर सुबह–शाम दोपहर में पीने से प्रमेह रोग जाता है।

<u>अथवा</u> – राल शक्कर को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण कर पाव–पाव तौला दो दो पहर या सुबह शाम खाने से मूत्र प्रमेह मिट जाता है।

(पत्र सं. –60)

<u>अथवा</u> – त्रिफला के पानी में चने भिगोकर सुबह–सुबह नित्य खाने से प्रमेह रोग मिट जाता है।

त्रिफला, त्रिकुटा[1] इन दोनों के चूर्ण को शहद में प्रातःकाल छः माशे के लगभग मिलाकर चाटने से प्रमेह रोग जाता रहता है।

<u>अथवा</u> – आँवला ओर लींडी पीपर का चूर्ण आधा तोले मधु के साथ देने से प्रमेह रोग जाता रहता है।

<u>अथवा</u> –आँवला या पीपर का चूर्ण सवेरे शाम शहद में मिलाकर देने से प्रमेह रोग जाता रहता है।

अथवा – 10 तौले धनिया के काढ़ा, पाव सेर पानी में भिगोकर कपड़े से छान लो। उसमें 5 तौले शक्कर और पाव तौले पिसी हुई इलायची में मिलाकर एक शीशी में भर तीन या चार समभाग करके दो–दो पहर में पाँच सात दिन पीने से प्रमेह रोग बिलकुल जाता रहेगा।

<u>अथवा</u> – एक रूपया भर सौंफ पानी में पीसकर ज्यादा पानी में मिला, घोल कपड़े से छान शक्कर मिलाकर दो–दो पहर के पीछे करके पीने से प्रमेह रोग जाता रहता है।

(पत्र सं. –61)

<u>अथवा</u> – खारतरें[2] की गोंद पाव से आधा तौले भर और उतनी ही शक्कर मिलाकर जल में मिलाओ। इससे दस्त अजीर्ण वाले बंद हो जाते है और अजीर्ण ठीक होता है।

<u>अथवा</u> – उत्तम चंदन पत्थर पर पानी में घिसकर तौले भर जल में मिला दुगनी खाण्ड मिलाकर दो दो पहर के बाद पीलानी जारी रखने से सब गुहीया[3] की दाह 3 दिवस में बिलकुल जाती रहेगी। परन्तु परहेज के साथ रहना दुगने दिवस तक। खाने में यथा शक्ति घी खायें।

1. त्रिकुट 2. खाखरा –पलास 3. गुहेन्द्रिय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

117. सन्निपात

(पत्र सं. –61)

हिंगुल का 5 तौले के बराबर चौरस एक पूरा टुकड़ा लेकर मिट्टी के एक मजबूत पात्र में भर उसके आसपास नजदीक–नजदीक दस तोले समूची लौंगो की परत बनाओ फिर उसे चूल्हे पर रखो फिर प्याज का रस निकालो चूल्हे में आँच जलाओ और हिंगलो के टुकड़े पर थोड़ा–थोड़ा प्याज का रस डालो, धीमी आँच से जब वह रस पक जाय तो फिर डालो, ऐसा बार–बार करें। इसी प्रकार प्याज का रस धीरे–धीरे पिलाओ, यह औषधी (पत्र सं. –62) सात आठ दिनों में तैयार होगी। लगातार अखण्ड आँच रखने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इतना ही रस पिलाओ, जितने का काम है। किन्तु इतना याद रखो कि पात्र में जो हिंगलों है, वह सूखने न पावै नही तो आंच की गर्मी से वह उड़ जाता है। इस तरह चूर्ण को करके एक चोड़े मुँह की शीशी में ही रखो फिर रोगी को दो। रोगी की ताकत और जठराग्नि का विचार कर अंत की मात्रा एक रत्ती भर दो। वायु में मधु के साथ, पित्त में मक्खन के साथ तथा कफ पर नागर के पत्ते में अथवा तुलसी के रस में दें। और सन्निपात में अदरक के रस में दिया जाता है। इसको खायें तो दुगने दिवस तक परहेज से रहें।

(करीम बकस मुसलमान की पुस्तक से)

118. संग्रहणी की दवा

(पत्र सं. –62)

हिंगुल दो तोले, मोर के अण्डे के सूखे खोखले 14 तौले दोनों को मिलाकर चूर्ण कर पहले सफेद प्याज के रस में तीन दिन घोटने के बाद में आक के दूध में तीन दिन घोटे। फिर कल्दार रूपये के समान चकती बनाकर इन्हें छाया में सुखाओं। घोटने में कमी नहीं होनी चाहिए। फिर सूखी हुई चकतियों को मिट्टी के एक मजबूत पात्र में भरें। (पत्र सं. –63) उस पर मुँह बन्द कर तथा कपड़ मिट्टी कर चार मन कंडे की वराहपुट से पकायें जब खोखले ठण्डे हो जाये तब कपड़े से छानकर शीशी में भरें। उपयोग में लाने की वही रीति है। इससे सात रोज से संग्रहणी दूर हो जायेगी।

119. नामर्दी का इलाज

(पत्र सं. –63)

(हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल, शहर अलीगढ़)

वीर बहुटी, केंचुआ, मालकांगनी, अकरकरा, हाथी दांत का चूर्ण, जायफल, जावित्री, कुचला सफेद चोंटनी[1] एक–एक छंटाक बारीक कूट कर इसमें एक छटांक गंध विरोजा मिलावें। इसको घोटकर आतिशी शीशी में भरकर पाताल यंत्र द्वारा तेल निकाले ओर इस तेल में एक तोले के हिसाब से तीन मासे लिनीमंट कोटीन जो एक अंग्रेजी दवा का नाम है, मिलावें और इसको इस प्रकार सेवन करें कि रात को सोते समये 4–5 बूंद तैल इन्द्री के अगले भाग को छोड़ कर मलें और एक टुकड़ा पान का गरम करके उस पर लपेट कर कपड़े की पट्टी से बांध देवें तो इसी प्रकार सात रोज के करने से वह रोग जाता रहेगा।

1. आक के पुष्प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

120. स्वप्न दोष की दवा

(पत्र सं. –64)

वंश लोचन, छोटी इलायची, सालम मिश्री, इसबगोल की भूसी, मस्तंगी, दालचीनी, शीतल चीनी, विदारी कंद, वहमन सफेद गाजुरा, गोंद ढाक, सतगिलोय, तालमखाने, वीजवग्ध[1], ईमली के बीज, शिलाजीत, मोचरस छः माशे, इन सब औषधियों को कूट छानकर चूर्ण बना और दुगनी मिश्री मिलायें, फिर छः माह प्रातः काल दूध के साथ सेवन करें तो स्वप्न दोष दूर हो जायेगा।

121. नहरूवा की दवा

(पत्र सं. –64)

(बालक दास बखाजी, कुम्हेर)

स्त्री का पहना हुआ चूड़ा आधा और कड़वा तेल छटांक भर, कुकर भंगरा[2], 1 तौला भर इनको तेल में खूब औटायें, जब तेल मात्र रह जाय, तब इसको रूई के फोये से चुपड़ दें। इसी प्रकार सात दिवस के करने से नहरूआ जाता रहता है। इसी औषधी से वेची[3], रतूआ स्त्री का आंचल पक जाय तब भी अच्छा करता है। फोड़ा, फुन्सी इत्यादि रोगों को आराम होगा। लेकिन पानी नहीं लगने दें।

122. मिरगी की दवा

(पत्र सं. –65)

काली मिर्च तौला भर, गुड़ आधा पाव और एक तौला शंख का कीड़ा, इनको खूब बारीक पीस कर गोली झड़बेरी के बराबर बनायें, फिर जिस समय मिरगी आये उसके उतरने पर एक गोली दें तो मिरगी जाती रहती है। लेकिन जब मिरगी आये तभी दें। तो बहुत बेहोश हो रहा हो, तो इस काढ़े को जल में धोकर उस जल को मुख में (मुंह किसी प्रकार खोलकर) डाल दें, तो होश में आ जायेगा, फिर गोली दें।

123. दस्त की दवा

(जब स्त्री के पेट में बच्चा हो)

(पत्र सं. –65)

(रामनारायण दरजी, भरतपुर, वेराती कुम्हेर)

सौंफ 2 तौला भर, पोस्त के छिलके 3 तौला। इन दोनों औषधियों को घृत (गाय के) में बादाम के माफिक भून लें। फिर खूब बारीक पीसकर बराबर की खाण्ड मिलाकर 6 माशे की 12 पुड़िया बनायें। फिर अगर रोगी को खांसी नहीं हो तो छाछ पाव भर के साथ फक्की लेवे। इसी प्रकार दोपहर से संध्या समय लें। चार दिन तक जो खांसी रहे तो पानी के साथ लेने से आराम होगा।

---

1. बहुफली 2. कृष्ण भृंगराज (भांगरा) 3. विचर्चिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

124. दिमागी ताकत की दवा

(पत्र सं. –66)

(श्यामलाल भार्गव, कुम्हेर)

मगज चारों तरह[1] के 4 तौलाभर, लिसौड़[2] 1 तौला, निलोफर 5 माशे, जाफरान 5 माशे, बादाम छटांक भर, नारियल का गोला छटाँक भर, दाख छटांक भर, सुपिस्तान 1 तोला, सखतअनार, सखत शहतूत 2 तौला भर, खमीरा संदल[3] आधापाव, घृत एक सेर भर, दूध एक सेर पहले सब औषधियों को खूब बारीक पीसकर घृत में खूब भूनों, फिर सभी वस्तुओं को मिलाकर इस हलुआ में से प्रातः काल 1) तौला और संध्या समय 1) तौला इस प्रकार सात दिवस के खाने से स्मरण शक्ति यानी दिमागी ताकत खूब बढेगी। लेकिन परहेज, तेल, गुड़, खटाई, स्त्री संसर्ग का ज्यादातर दुगने दिवस परहेज रखें। खाने में गाय का घृत लें। भैंस का दूध अधिक पीवैं। सब्जी में काली मिर्च डालें।

125. सांस (फूलने) की दवा

(पत्र सं. –67)

वायविडंग नग 1, सोंठ की गांठ नग एक, काली मिर्च 21 नग । इन सब औषधियों को खूब बारीक पीस कर पानी के साथ फक्की लगावें। निराहार प्रातःकाल ही इसी प्रकार सात दिवस के करने से सांस फूलने में आराम होता हैं। परहेज – तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च, स्त्री परहेज, चिकनी वस्तुएं नहीं खायैं। गेंहूँ भूने का दलिया खायें, खिचड़ी खायें, दोनों समय दवा लेवें।

126. बवासीर की दवा

(पत्र सं. –67)

कटोर[4] के छिलकों को साफ करके छाँया में सूखा कर लें। फिर खूब बारीक पीस लें। इसमें बूरा बराबर का मिलालें। फिर गाय के दूध के फेन साथ फक्की 6 मासे भर लेवैं। इसी प्रकार 21 दिवस तक करें तो बवासीर का खून जाता रहेगा।

अथवाः– सेलखड़ी को खूब बारीक पीस लें और बराबर का बूरा मिलाकर 6 माशे ही गाय के दूध के साथ फक्की लें, तो रोग जाता रहेगा।

127. सिर में ताकत का सुगंधित तेल

(पत्र सं. –68)

केतकी जड़, पियाबासा रे के फूल, कुम्हेर की जड़ (कुम्हेर की तलहटी में मिलती हैं), भांगरा, त्रिफला, तिली का असली तैल, पहले तिली के तेल को साफ करके फिर इसमें दवा पीसी हुई को आँच पर भून कर औटा लें। जब तेल मात्र रह जाय तब छान कर ठंडा करके इसे शीशी में भर लें और मस्तक और बालों पर लगायें तो सिर की ताकत बढेगी।

---

1. बादाम, पिश्ता, अखरोट, खसखस 2. श्लेष्मान्तक, लिसौड़ा 3. चन्दन 4. कुटज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

128. जहन बढने की दवा

(पत्र सं. –68)

चीनी खाँड आधा पाव, मालकांगनी आधा पाव, दोनों को खूब बारीक पीस कर कपड़छान कर लें। बाद में इस दवा की छः मासे की फाकी पानी के साथ प्रातः काल लगाये। इसी प्रकार 21 दिवस करें तो जहन खूब बढेगा।

129. हाजमे का चूरण

(पत्र सं. –68)

तीनों प्रकार के अजवायन, दोनों जीरे, कड़वीहड़, वायविडंग, धनिया, कपूर, पोदीना, शीतल चीनी, काली मिरच इन औषधियों को सम भाग लेकर खूब बारीक खरल करें फिर कपड़ छान कर लेवें। इसको खाना खाने के बाद में 6 माशे खाये तो खाना हजम होगा। दस्त साफ होगा। बदहजमी नहीं होगी, भूख बढेगी।

130. एडियाँ (पैरों का फटना) की दवा

(पत्र सं. –69)

चिरोंजी के बीजों को खूब बारीक पीसकर खांड बराबर की मिलाकर दूध की लस्सी पाव भर के साथ 6 मासे की फक्की लगावें। दो या तीन बार फक्की लेने से स्त्री के पैरों का फटना ठीक होगा।

131. दस्त बंद करने की गोली

(पत्र सं. –69)

आम की भुनी गुठली नग एक, अतीस छः माशे, नारियल का तेल धेला भर। पोस्त के छिलके नग 2, अफीम चार रत्ती, दाख तीन माशे, इनको खूब बारीक पीसकर गोलीयां झरबेरी के बेर बराबर बनाये, इसको एक गोली खाने से दस्त बन्द हो जायेगे।

132. पागलपन दूर होने की दवा

(पत्र सं. –70)

मगज चारों, चार तौला भर, मैदा आधा पाव, घी आधा पाव, दूध पाव भर, पहले मैदा को घी में भूने और मगज को भून कर मिला लें, फिर दूध को डाल कर हलवा बना लें, फिर सिर की हजामत (घोटमोड़) बनावें। फिर हलवा सिर पर बांधे, इसी प्रकार तीन दिवस तक बांधे तो पागलपन बिलकुल जाता रहेगा। इस प्रकार कई दिन करने से पागलपन जाता रहेगा।

133. कामदेव घृत

(पत्र सं. –70)

सांडे की चर्बी और मुर्गी के अंडे का द्रव एक तोले में छः मासे वीरबहूटी मिलाकर आँच पर रख दें। जब वीरबहूटी जल कर काली पड़ जाये तो आग से नीचे उतार कपड़े में छान लें। इसमें केसर कस्तूर चार, दो रत्ती भर जायफल, जांवित्री, लोंग, अकरकरा, गौ लोचन दो माशे मिला कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
घुटाई करें, फिर रात्रि को सोते समय तो इन्द्री के अग्र भाग को छोड़कर बाकी पर खूब मर्दन करें और प्रातःकाल गर्म जल से साफ कर दें। इसी प्रकार सात रोज करने से नामर्दगी जाती रहेगी।

134. खांसी की दवा

(पत्र सं. –71)

रतन सिंह फौजदार, गांव वरकोली

पान का अर्क एक तौला, अदरक का रस एक तौला, फल कटेरी का अर्क आठ आना भर, अडूसा का अर्क एक तौला भर, जावित्री आठ आना भर, शहद असली एक तौला, इन सब अर्को को व शहद को मिलाकर औटावे और जब गाढा हो जाये तब चना प्रमाण गोली बना लें। फिर एक – एक गोली सुबह, दोपहर और शाम लें। इसी प्रकार तीन दिवस तक दें तो खांसी जाती रहेगी।

परहेज तेल, गुड़, खटाई, चिकनी वस्तुए नहीं खायें। खाने को मूंग, घी, दाल, गेहूँ की रोटी, हल्का खाये साग मैथी का खायें।

135. साँस की दवा

(पत्र सं. –71–72)

पान का अर्क एक तौला, अदरक का अर्क एक तौला, फल कटेरी का अर्क आठ आना, अडूसा का रस एक तौला, जांवित्री आठ आना भर, शहद असली एक तौला भर, महुआ का अर्क एक तौला भर, सहजने की छाल एक तौला, गुड़ पुराना तीन साल का एक तौला भर, इन सब औषधियों को मिलाकर खूब औटायें, जब गाढा हो जाये तो चना प्रमाण गोलियां बना ले फिर एक गोली प्रातः दुपहर व संध्या के समय खायें तो सांस रोग तीन दिवस में जाता रहेगा।

परहेज- तेल, गुड़, खटाई, लाल मिरच, उड़द की चिकनाई वस्तुएं नही खायें, खाने में भुने गेहूँ का दलिया खायें। लेकिन दुगने दिन तक परहेज करते रहें। इस औषधी को उपर की विधि से दवा दी जाये तो दमा पाँच दिवस में जाता रहता है।

136. वाय रोग की दवा

(पत्र सं. –72–73)

वायविडंग आठ आना भर, पीपरमूल आठ आना भर, चव्य दो आना भर, चित्रक दो आना भर, आलू बुखारा नग 2, नीम गिलोह आठ आना भर, पीपर एक आना भर, काली मिर्च दो आना भर, सौंठ दो आना भर, इन सब औषधियों को 1½ पाव जल में खूब औटालें, जब जल 1½ छँटाक रह जाय, तब छानकर वाय के रोग वाले मनुष्य को प्रातः काल दे, फिर जो शेष रह जाय उसको संध्या समय इसी ऊपरी विधि से दे दिया करे। इस प्रकार तीन दिवस देने से वाय रोग जाता रहता है।

खाने को इस रोगी को हलुआ छुआरों का खिलाया जाये। परहेज इस हलुआ को तीन दिवस तक देवें, फिर मूंग की दाल गेहूँ की रोटी देवें।

137. चोट के कीड़े दूर करने की दवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पत्र सं. –73)

नगदपट[1] एक पौधा होता हैं यह चौमासे में होता हैं, इसके पत्ते तुलसी के से होते है। फूल इसमें तुलसी का सा होता हैं और यह पेड़ गांव खरीका तहसील उज्जैन में होता हैं। इसकी विधि – इसके पत्त्ते को लेकर खूब कूट लेंवे। फिर जिस जगह पर कीड़ा हो उसको पहले पानी गरम से साफ कर लें। फिर थोड़ा सा चूरा घाव में भरकर ऊपर से उन पत्तों को भर दें, उपर से पटी से लपेट दें। फिर कपड़े से बाँध दें। इस प्रकार तीन दिवस तक दोनों समय करें तो कीड़ा दूर हो जायेगा।

138. आधा सीसी दर्द की दवा

(पत्र सं. –74)

मिश्री, केसर इन दोनों वस्तुओं को समान भाग में ले, गाय के घी में बादाम की मिजीं भून लें। फिर पीस कर जिस तरफ के हिस्से में दर्द हो उसी तरफ के नाकुआ में सूंघें। इसी प्रकार 7 दिवस तक करें तो आधा सीसी दर्द जाता रहता हैं।

139. पुष्ट की दवा

(पत्र सं. –75)

दालचीनी, काले तिल, वंसलोचन, छोटी इलायची के बीज, भोंफली, केसर इन सब औषधियों को समान भाग लेकर खूब बारीक पीस कपड़ छान करलें, फिर प्रातः इस दवा से 6 माशे दवा और गाय का ताजा घी छटांक भर, मिश्री दो तोला खूब मिलाकर चटाया करें ओर संध्या को छटांक भर घी में दूध आधा सेर मिला कर पिया करें तो इन्द्री पुष्ट रहे।

140. मकड़ी फिरने की दवा

(पत्र सं. –75)

ज्वार का दलिया और हल्दी जौ कूट, इन दोनों को बछिया के पनोत में पीस कर मकड़ी के फिरे हुए पर लेप करें।

141. गर्भ के रहने की दवा

(पत्र सं. –75)

लौंग, अफीम ये दोनों दो तौला भर जांवित्री, छोटी इलायची 2 तौला भर, जायफल एक आना भर, कमल गट्टा नग चार इन सब औषधियों को लेकर महीन पीस लें ओर फिर पान के रस में गोली 2 माशे प्रमाण की बना लें। सोते समय एक गोली खायें और मैथुन करें तो गर्भ रहेगा।

142. पसली का बुखार

(पत्र सं. –76)

रामप्रसाद ब्राह्मण गांव, हडियोरी

सौंठ एक तौला, गिलोय एक तौला, देवदारू एक तौला, लाल चंदन एक तौला, धनिया एक तौला, चिरायतो एक तौला, नीम की छाल, इन औषधियों को जोकूट कर लेवें। फिर एक हांडी एक सेर जल भर कर दवाइयों को डालकर बबूल की लकड़ी की आँच दें। जब पानी, जल कर तीन पाव रह जाय तब छान कर ठंडा करके एक बोतल में भर लें। फिर एक तौला दवा और आठ आना भर शहद मिला कर चाट लिया करें। इसी प्रकार सात दिवस तक दवा चाटैं तो पसली बुखार जाता रहेगा। लेकिन 14 दिवस तक गुड़, तेल, खटाई, लालमिर्च, उड़द की दाल, चने का साग ये वस्तुएं नहीं खायें। खाने मे बहुत पतली मूंग की दाल व गेंहूँ की हल्की–हल्की रोटियां खायें, किंतु काला नमक काली मिर्च डाल कर खाया करें।

---

1. वनतुलसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

143. सांस, दमा, पुरानी खांसी की दवा

(पत्र सं. –77)

हरकिशन ब्राह्मण गांव, हड़ताल

ज्वार आधा सेर को आक के दूध में 8 रोज तक भिगोयें व सुखावैं। फिर इसी प्रकार डंडा थुहर के दूध में सात दिवस तक भिगोंयें व सुखा लें। फिर एक कुल्ला (कुल्हड़) में इस ज्वार को भरकर कुल्हड़ का मुँह कपड़ मिट्टी करके पांच सेर उपले की आँच में फूंकें, फिर इससे ज्वार मुनका (ज्वार के दाने) को 2 चावल की बराबर पान में रखकर सुबह–शाम खाया करें। 21 दिवस में सांस,दमा,पुरानी खांसी ये रोग जाते रहेगें। खाने के वास्ते भुने गेहूँ का दलिया खाया करें। परहेज– तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च, स्त्री संग,चिकनाई की वस्तुएं, कढ़ाई की चीजे नहीं खाये तो आराम होगा।

144. तिल्ली बढ़ने की दवा

(पत्र सं. 77–78)

गरम पानी पाव भर में दो छटांक अमृत धारा दिया करें, इसकी एक खुराक तीन बूँद हैं। इससे रोग जाता रहेगा।

परहेज गुड़,तेल,खटाई, लाल मिर्च, छाछ नहीं खायें।

145. खुजली (खाज) की दवा,

(पत्र सं. 78)

हरिनारायण ब्राहमण

ओंगा के पेड़ की राख पाँच सेर लें, फिर एक हांडी में इसे रख दे। फिर एक हांडी में इस राख में से आधी राख को दाब – दाब कर भर लें। फिर पारे को बीच में रख दें। उपर से इसी राख की बची राख को खूब दाब लें और ऊपर कच्चे चने रख देवें। फिर 24 से आखे (पूरे) उपलो की आँच के बीच इस हांडी को रख दें।

और इसको इतनी देर रखे कि चना हांडी के मुंह के उपर रखें हैं वह भाड़ की तरह भुन जाये तो उस हांडी को निकालकर ठन्डी होने पर इस पारे को निकाल लें, तो पारा शुद्ध हो जायेगा, फिर इस पारे को खाज बीमारी, पुष्टाई आदि रोगों में लिया करैं तो पारा अपना असर करेगा।

146. उदर रोग का चूर्ण

(पत्र सं. 79–80)

रामपाल ब्राह्मण

ब्राह्मणी बूंटी आधा पाव, अजमोद आधा पाव, सौंठ आधा पाव, बच आधा पाव, शतावरी आधा पाव, हरड़ छोटी आधा पाव, कूट आधा पाव, हल्दी आधा पाव, जीरा भुना हुआ आधा पाव, बड़ी हरड़ छँटाक भर इन सब औषधियों को खूब बारीक पीसकर खरल करें, फिर कपड़छान करलें। फिर दवाई में से चार माशे चूर्ण प्रातः गाय के ताजे घी में मिलाकर खाया करें, भोजन करते समय यथा शक्ति घी जरुर खाया करें। संध्या समय यथा शक्ति भैंस का दूध पीया करें। लेकिन दूध में कम मीठा डालकर पीया करें। इस दवा को 12 वर्ष तक खायें तो कभी बीमारी उदर रोग नहीं होगी और आँखों की ज्योति बढेगी। शरीर पुष्ट रहेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खाने में उम्र भर उड़द की धुली दाल खूब मसालेदार और जौ चने की दरैमा रोटी घी से चुपड़ कर खाया करें। परहेज – तेल, गुड़, खटाई, मिर्च, कड़ाई की चीजे नहीं खायें। नही तो रोग बढ़ जायेगा। अजमाई दवाई हैं दुगने वर्ष तक परहेज करें।

147. सिर मे घाव होने की दवा

(पत्र . 80)

चेतराम गुर्जर

नीम की निंबोली आधा पाव, तेल मीठा आधा पाव, पहले निबोंलियां को तेल में मिलाकर खूब औटावैं जब कस निकल आयै तब छानकर बोतल में रख लें। पहले स्त्री के माथे को नीम के गरम पानी से साफ करलें फिर इसको उन पर लगाया करै तो माथे के घाव ठीक हो जायेगें।

148. सुजाक रोग की दवा

(पत्र सं. 81)

रामहंस ब्राह्मण

भूने हुए चना का आटा, इसकी रोटी में सेन्धा नमक डालकर रोटी सेक लें। फिर सरसों के तेल से खूब चुपड़कर तर करलें। फिर दो घंटे बाद खायैं। इसी प्रकार सात दिवस करै या खायैं तो सुजाक रोग जाता रहेगा। परहेज – गुड़,तेल,खटाई, लाल मिर्च नहीं खायें।

149. टांकोन[1] की दवा

(पत्र सं. 81)

हरकिशन नम्बरदार गांव, बहेरा

तवाखीर 2 माशे, पपरीया कत्था 2 माशे, ईलायची छोटी के बीज 4 माशे, शीतल मिरच 3 माशे, गाय का लोनी घी 121 बार साफ किया हुआ। पहले सब दवाइयों को खूब बारीक पीस लें। फिर कपड़ छान करलें, फिर लोनी घी से इन्द्री की सुपारी को चुपड़ देवै। फिर उपर दवाईयों के चूरे को बुरक देवैं। इस प्रकार दूसरे दिन इन्द्री को साफ कर लेवैं और दवा को सात दिवस तक करें तो आराम मिलेगा।

150. पसलियों का बुखार

(पत्र सं. 82)

गिरवरसिंह फौजदार, गांव बहेरा

खूब कला छः माशे भर, मिश्री छः माशे भर, को जौकूट करके आधा पाव जल औटायें जब जल टका भर रह ज़ाय, तब छान कर रोगी को पिलायें तो इसी प्रकार तीन दिवस में पसली बुखार जाता रहेगा। परहेज – गुड़,तेल,खटाई, लाल मिर्च, उड़द की दाल छाछ नहीं खावैं, खाने के वास्ते मूंग की दाल और गेंहूँ की रोटी खायें।

---

1. घाव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

151. दस्त बंद करने की दवा CC-0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पत्र सं. 82)

आम की गुठली की मींगी निकाल, इसकी राख कर लें, फिर इसमें अफीम 2 रत्ती डाल कर पानी में घोलकर दो दिवस तक पिलायें तो दस्त बंद हो जायेगें। परहेज – गुड़,तेल,खटाई, लाल मिर्च, उड़द की दाल, छाछ नहीं खायें, चावल, मूंग की दाल, खिचड़ी ये खायें, दुगने दिवस तक परहेज करें।

152. ऐंठा की दवा

(पत्र सं. 82)

ऐंठा के पेड़ की जड़ को लायें, फिर इसमें से दो तोला भर गाय के कच्चे दूध के साथ खूब बारीक पीस लें। फिर पांच तौला भर को पिलायें। गाय का आधा सेर दूध ऊपर से पिलायें। इसी प्रकार सात दिवस तक पिलायें तो ऐंठा रोग जाता रहेगा। परहेज – तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च, कड़ाई की चीजे, चिकनाई की चीजें नहीं खाये।

153. विषम ज्वर की दवा

(पत्र सं. 83)

शहद मुहारकर आठ आना भर, पीपर नग दो, छोटी इलायची के बीज आठ आना भर, वंश लोचन चार माशा, गिलोय सत आठ आना भर, चार माशा दाल चीनी इन सब दवाइयों को खूब बारीक पीसकर कपड़छान कर लें। फिर शहद में मिलाकर प्रातः काल चाट लें, तो इस प्रकार 21 दिन चाटने से विषम ज्वर जाता रहेगा। परहेज दूने दिन तक रहेगा।

154. हाजमा का जुलाव

(पत्र सं. 84)

सनाय छः माशा, बड़ी हरड़े दो आना भर रेवन्द चीनी आठ आना भर, इन तीनों दवाईयों को कूट कपड़ छान करके बूरा मिलाकर माशे की फक्की गर्म जल के साथ दें आराम होगा।

155. हैजा की दवा

(पत्र सं. 84)

प्याज पाव भर, पैसा भर जीरा, सफेद मिश्री चार तौला। पहले प्याज का और जीरे का अर्क उतारें। फिर पोदीने का अर्क दो तौला मिला दें। मिश्री को पीसकर अर्क में मिला दें तो हैजा जाता रहेगा।

156. पीलिये की दवा

(पत्र सं. 84)

जंगली साठी[1] (एक रूखड़ी जड़ है)। इसको लच्छा में बांधकर रविवार को धूप देकर बांध दें, तो पीलिया हटता जायेगा, माला लटकती जायेगी। इसी प्रकार आठवें दिवस पूरी माला हो जायेगी। फिर सब शरीर में होकर निकालें। और आक के पेड़ पर डाल आये तो पीलिया जाता रहेगा। खाने को चने की रोटी, बिना चुपड़ी खायें। और सबका परहेज करें।

1. पुनर्नवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

157. वाय रोग की दवा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पत्र सं. 85)

भारंगी छः माशे, वायविडगं छः माशे खूबकला, ताल मखाने दोनो छः माशे भर, पीपरा मूल छः माशे, लौग, जायफल 4 माशे, जावित्री चार माशे, नागर मोथा चार माशे, हरड़ छोटी नग 2 इन सब दवाईयों को जौ कुट करके आधे सेर पानी में चढायें, फिर जब आधा रह जाय तब छान कर रोगी को पिलायें। इसके योग को संध्या समय पिलायें, हवा लगने नहीं दें। खाने के वास्ते साबूदाने की खिचड़ी खिलाया करें। परहेज तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च नहीं खायें। इसको सात दिवस तक दोनों समय करें तो वायु रोग जाता रहेगा।

158. पैर के घाव भरने की दवा

(पत्र सं. 85–86)

पानी में कटेरी को पीसकर, कपड़े पर लगाकर चिपका दें तो घाव ठीक हो जायेगा।

श्री जमना प्रसाद द्वारा श्री 108 माजी साहिबा की सेवा में यह कापी उपस्थित की है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आयुर्वेदिक शास्त्र के प्रयोग सिद्ध नुस्खे पृष्ठ 74 से 103

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3.

आयुर्वेदिक शास्त्र के प्रयोग सिद्ध नुस्खे

डॉ. कमल किशोर सांखला
गवेषक,
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान विभाग में आयुर्वेद के नुस्खे एवं विभिन्न बीमारियों के ईलाज से संबंधित सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ विद्यमान हैं। इन ग्रन्थों में निहित ज्ञान का उपयोग आम–जन में हो, इसी के दृष्टिगत हमारे विभाग की भरतपुर शाखा में संगृहित ग्रन्थांक 706 एवं 716 के अनुवाद का कार्य मुझे सौंपा गया। सम्पादित मूल ग्रन्थ का लेखन ई. 1920 में भरतपुर राज्यादेश से करवाया गया। जिसमें विभिन्न गाँवों के वैद्यों द्वारा आजमाएँ गए नुस्खों का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही वैद्यों के गाँव एवं उनके नाम का विवरण दिया गया है। जो इस प्रकार है :– केवलराम ब्राह्मण. गाँव वैल्हारे मरमपुर, कन्हैया पौद्दार गाँव लाल कुंआ, नदबई, पण्डित रामहंस गाँव नगर, रामसिंह बटवार चौकी भीतरेड़ी, ब्रजमोहन पटवारी गाँव चबूतरा नगर, चंदरमल गाँव नगर, जोधराज गाँव अचुनियां आदि प्रमुख है। ग्रन्थांक 706 में ग्रन्थ लिपिकर्त्ता का नाम किशोरी लाल वैश्य उल्लिखित है। प्रस्तुत आलेख में विभिन्न 98 रोगों एवं बीमारियों के नाम को अकारादिकम में प्रस्तुत करते हुए आलेख में समाविष्ट औशधियों, रोगों एवं द्रव्यों की पहचान तथा उत्पति संबंधी पाद टिप्पणियां सम्मिलित कर अंत में प्रस्तुत की गई है।

रोगों के उपचार के साथ–साथ दवाई सेवन के समय ध्यान देने योग्य सावधानियां अर्थात परहेज के बारे में उल्लेख किए गए है। ग्रन्थ में लिखित अनुभूत नुस्खे जिसमें औषधि की मात्रा एवं यथार्थ परीक्षा हेतु जड़ी–बूटियों को जानने वाला ज्ञानवान तो होना जरूरी ही है इसके साथ–साथ नुस्खे प्रयोग में लेने वाले रोगी का आयुर्वेद की पद्धति में श्रद्धा एवं विश्वास भी जरूरी है। ग्रन्थ अनुवाद में औषधि के नाम एवं मात्रा का उल्लेख यथा स्थान पर ज्यों का त्यों लिखने का प्रयास किया गया है, फिर भी इसमें रही त्रुटि शुद्धि पाठकों की जिज्ञासा का शमन करेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3.

अनुक्रमणिका

सूची निम्नानुसार है–

क्र.स.	रोग का नाम एवं उपचार विधि	पृष्ठ सं.	मूल हस्तलिखित ग्रन्थांक एवं ग्रन्थ संग्रह स्थान	
1.	अंग के गांठ की विधि	79	716	भरतपुर
2.	अजीर्ण की औषधि	79	716	""
3.	अजीर्ण से उबकाई आकर दस्त लगने तथा पेट दर्द बन्द करने का नुस्खा	79	716	""
4.	अण्डवृद्धि का चूर्ण	80	716	""
5.	अण्डवृद्धि की दवाई	80	706	""
6.	अतिसार की दवा	80	716	""
7.	अर्शोपरि	80	716	""
8.	आँख की दवा	80–81	716	""
9.	आँख के फूला की दवाई	81	706	""
10.	आँख के रोगों की दवा (अंजन)	81	716	""
11.	आँख दुखनी (दर्द) की दवा	81	706	""
12.	आग से झुलसने की दवा	81	706	""
13.	आधा शीसी	81	716	""
14.	आम (आंव) की दवा	81	716	""
15.	आम वात	82	716	""
16.	उदावर्त्त की औषधि	82	716	""

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17.	उन्माद की दवा	82	716	"
18.	उपदंश की औषधि	82	716	"
19.	उरक्षत रोग का नुस्खा	82	716	"
20.	कटे हुए अंग पर लगाने की दवाई	83	706	भरतपुर
21.	कठोदर	83	716	"
22.	कब्ज एवं उदर रोग का नुस्खा	83	716	"
23.	कब्ज दूर करने की दवा	83	706	"
24.	कमलवाय	83	716	"
25.	कीड़े (कृमि) के रोग की औषधि	83	716	"
26.	कुष्ठ की दवा	84	716	"
27.	खाँसी (कफ) की दवाई	84	706	"
28.	खाँसी की दवा	84	716	"
29.	खुस्की की दवा	84	716	"
30.	खुस्की से खाँसी की दवा	84	716	"
31.	खूनी बवासीर का नुस्खा	84	716	"
32.	गठिया की औषधि	85	716	"
33.	गम्भीर घाव की दवा	85	716	"
34.	गर्मी की दवाई	85	716	"
35.	गर्मी के ठसका की दवाई	85	706	"
36.	गूमड़ा (फुंसी) का उपचार	85	706	"
37.	घाव के कीड़े मारने की दवाई	86	706	"
38.अ	जिगर पीलिया की औषधि	86	716	"
38.ब	जी मिचलाना (उल्टी, उबकाई)	86	716	"
39.	ज्वर की औषधि	86	716	"
40.	ज्वर तथा खाँसी की औषधि	87	716	"
41.	ज्वर का नुस्खा	87	716	"
42.	ज्वर के बाद हाथ पैरों में जलन व नेत्रों में हाज़मा होने के उपचार की विधि	87	716	"
43.	ज्वरांजन	87	716	"
44.	ताकत और प्रेमह की औषधि	87	716	"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

45.	तिल्ली की दवा	87	716	""
46.	दस्त बन्द करने की दवाई	87–88	706/716	भरतपुर
47.	दाद की औषधि	88	716	""
48.	नकसीर की औषधि	88	716	""
49.	नजला एवं पतले कफ की दवाई	88	706	""
50.	नारू की दवा	88	716	""
51.	नासूर की दवा	88	716	""
52.	पसली दर्द की दवाई	89	706	""
53.	पक्षाघात	89	716	""
54.	पागल कुत्ते के काटने के पश्चात् उपचार की विधि	89	716	""
55.	पागल कुत्ते के काटने के उपचार	89	706	""
56.	पाचक चूर्ण	89	716	""
57.	पाण्डु रोग	90	716	""
58.	पाँव दर्द के उपचार की औषधि	90	716	""
59.	पित ज्वर का नुस्खा	90	716	""
60.	पित्त की छर्दि	90	716	""
61.	पुष्टि वर्धक औषधि	90	716	""
62.	फटे होंठ के उपचार की दवाई	90	706	""
63.	फोड़ा की दवाई	90–91	706	""
64.	फोड़े फुंसियों के घाव भरने की दवाई	91	706	""
65.	बदहज़मी की दवाई	91	706	""
66.	बदहज़मी होकर दस्त बंद करने की औषधि	91	716	""
67.	बवासीर का नुस्खा	91–92	716	""
68.	बवासीर की दवाई	92	706	""
69.	बिच्छू काटने के पश्चात् उपयोगी दवा	92	716	""
70.	बुखार की दवाई	92	706	""
71.	भगन्दर (नासूर) की औषधि	92	716	""
72.	मलेरिया का नुस्खा	92–93	716	""
73.	मस्से के दर्द की औषधि	93	716	""
74.अ	मिर्गी की औषधि	93	716	भरतपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

74.ब	मिमाई का नुस्खा	93–94	716	""
75.	मुँह के छालों की दवाई	94	706	""
76.	मूत्र अवरोध की औषधि	94	716	""
77.	मूत्र उतरने की दवा	94	716	""
78.	मूत्र कृछ्छू की औषधि	94	716	""
79.	यक्ष्मा (टी.बी.) रोग का नुस्खा	94	716	""
80.	रक्त पित्त	95	716	""
81.	राज यक्ष्मा का नुस्खा	95	716	""
82.	राजरोग	95	716	""
83.	रूधिर विकार की दवाई	95–96	706	""
84.	वमन की औषधि	96	716	""
85.	वादी के शूल की औषधि	96	716	""
86.	वायु शूल की दवा	96	706	""
87.	विषम ज्वर	96	716	""
88.	शीत ज्वर का नुस्खा	96–97	716	""
89.	श्ंवास की दवा	97	716	""
90.	श्वेत कुष्ठ की दवा	97	716	""
91.	सर्प काटने के पश्चात् उपचार की विधि	97	716	""
92.	सिर भड़कने (दर्द) से उपचार की औषधि	97	706	""
93.	सुजाक की औषधि	98	716	""
94.	हाजमा और जीगर ठीक करने का शर्बत	98	716	""
95.	हाजमे का चूर्ण	98	716	""
96.	हैजा की दवा	98	716	""
97.	होंठ फटने के उपचार	98	706	""
98.	विविध रोगों के नुस्खे	98–99	716	""
	अनुक्रमणिका इस आलेख में आए हुए द्रव्यों, रोगों एवं विविध औषधियों की	99–103	716	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1. अंग के गांठ की विधि

अंग की गांठ पर अंकोल[1] के फूल को गो मूत्र में पीसकर, गर्म करके तीन–चार बार लेप करने से गांठ बैठ जाती है।

अंग की गांठ पर बार–बार बर्फ रखने से गांठ गल जाती है।

2. अजीर्ण की औषधि

हरताल[2] शुद्व भाग–एक, शीसे[3] की भस्म भाग–एक, पारा शुद्व भाग–एक,

गंधक आँवला सार शुद्व भाग–एक, काली मिर्च भाग–एक

इन सभी को आठ प्रहर खरल करने के बाद, एक रत्ती सामग्री को 6 माषा के साथ प्रयोग लेने से सभी प्रकार के अर्जीण, खाँसी, तिल्ली[4], गुल्म[5], उदर रोगों से छुटकारा मिलता है।

अजवांयन 10 टंक नीबू के रस में दो बार भिगोकर सुखाने के बाद उसे पीसकर कपड़े से छानलें उसके बाद आधा पाव चीनी की चासंनी में पाक बनालें।

लगभग एक तोले की मात्रा में सुबह–शाम खानें से भोजन पाचन होता है तथा पेट की वायु मिट जाती है।

कूलींजन[6] 5 टंक को पीस, छान कर पाव चीनी की चासनी में मिला कर पाक बनाने के बाद सेवन करने से वायु रोग जाता है। भोजन पाचन होता है। कलेजे को गुण करता है, खट्टी डकार आनी बंद हो जाती है। शीत शूल दूर होती है।

सामग्री :– काबली हरड़ की छाल, बहड़े की छाल, आँवले की मुलेटी, सौंठ, इलायची के दाने, बालछड़, चैती गुलाब के फूल।

ये सभी वस्तुएं दो–दो तोला की मात्रा में लेकर, 2 तोला शुद्व मावा लेकर सभी को पीस छानकर घी में (मकरोवें) मिलाकर, शहद व मिश्री मिलाकर एक–दो बार सेवन करने से भूख बढ़ती है तथा कोष्ट[7] एवं वीर्य को बढ़ाती है। यह औषधि बवासीर के लिए भी गुणदायक है।

सामग्री :–

सोंठ – 2 भाग, फुला हुआ सुहागा[8]–1भाग, पीली हरड़ की छाल–1भाग, सैंधा नमक–1भाग, भुनी हींग–1भाग

इन सभी को कूटकर कपड़े से छानने के बाद सहजने की जड़ तथा पानी के रस में बेर के आकार की गोली बनाकर , सुबह–शाम सेवन करने से तिल्ली,अजीर्ण एवं आफरा नष्ट होता है।

3. अजीर्ण से उबकाई आकर दस्त लगने तथा पेट दर्द बंद करने का नुस्खा

पीने के तमाखू के गुल का एक रत्ती मात्रा में क्षार[9] निकालकर पान के साथ सेवन करने से उपरोक्त पीड़ा में लाभ मिलता है।

यह औषधि श्वांस तथा खाँसी पर भी काम देती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

4. अण्ड वृद्धि का चूर्ण

त्रिकुटा[10], बिल्व पत्र के जड़ की छाल, निसोत[11], चित्रक[12] की छाल

सभी बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण बनाकर बकरी के दूध के साथ सेवन करने से आराम मिलता है।

5. अण्ड वृद्धि की दवाई

त्रिफला का एक टंक चूर्ण लेकर सुबह–शाम गाय के मूत्र के साथ पीने से अण्ड वृद्धि का रोग जाता रहता है।

अरण्ड की जड़ और लौंग इन सभी को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसने के बाद कपड़े से छानकर लगभग 3 माषे की दवाई लेकर इसको घी के साथ सुबह–शाम पीने से अण्ड के रोग से छुटकारा मिलता है।

6. अतिसार[13] की दवा

बेर की पत्ती 3 माषा, सफेद जीरा 2 माषा

इन दोनों सामग्री को पीस कर तीन छटांक पानी में छानकर पीने से अतिसार दूर होता है।

आम की छाल के 2 तोला गुद्दा को पाव पानी में उबालकर, छानने के बाद गरम–गरम पीने से अतिसार दूर होता है।

रार, सोंठ, सोंफ, अनार का छिलका, पोस्त के दाने।

ये सभी बराबर मात्रा में लेकर, कूटने के बाद कपड़े से छानकर जितनी मात्रा इन समस्त सामग्री की हों उसके आधे भाग के बराबर मिश्री मिलावे। आठ मात्रा जल के साथ लेकर, मसूर की दाल का सेवन करने से अतिसार नष्ट होता है।

7. अर्शोपरि[14]

गुदा के अन्दर पाँच अँगुल के बीच में तीन वली होती हैं। नीचे की वली मे मस्सा साध्य है। अर्थात जल्दी ठीक होता है। बीच की वली में कष्ट साध्य अर्थात् कठिनता से जाते है। और ऊपर की में असाध्य है।

कड़वी बॅंदाल[15] की धूनी गुदा में देने से मस्सा गिर पड़ता है। इसी बॅंदाल इन्द्रायण का कुछ दिन काढ़ा सेवन करने से आवदस्त लिया जाय अर्थात गुदा काढ़े से धोई जाय तो टीस चबका (दर्द) बंद होकर मस्से मुरझा जाते हैं।

पीपर मिर्च के साथ पानी में घोटकर पीने से खून बन्द होता है।

8. आँख की दवा (सभी तरह की)

सुहागा 10 तोला, नोसादार 10 तोला, फिटकरी 10 तोला, कलमी सोरा 10 तोला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन सभी वस्तुओं का पाँच बोतल अर्क खींच लेवे फिर उस अर्क में इतनी ही दवा फिर डालकर तीन बोतल अर्क खींच लेवें। आँख में डालने से आराम मिलता है।

9. आँख के फूला की दवाई

काले सरस के बीजों को पानी में घिसकर आँख में लगाने से आँख का फूला कट जाता है।

सुबह–शाम आँखो में जल के छींटे लगाने से आँख में किसी तरह का रोग नहीं रहता।

10. आँख के रोगों की दवा (अंजन)

निर्मलीज (चुन्नी) माषा–6, शुद्व सीसा तोला–1, नीम की कोंपल माषा–4, खिरनी[16] के बीज माषा–4,सोने का बूरा माषा–6, मोती माषा– 2, हाथी के नोंह माषा–1, गुलाब के फूल माषा –4, खपरिया माषा–4, मूंगा की जड़ माषा – 4

इन सभी सामग्री को गुलाब जल के साथ खूब अच्छी तरह खरल करें, खरल घिसने वाला नहीं हो इस बात की सावधानी रखें। घिस कर तैयार हो जाए तब सलाई से नेत्रों में अंजन करनें से सभी प्रकार के नैत्रों के रोगों से छुटकारा मिलता है।

11. आँख दुखनी की दवा

गुलाब जल में फिटकरी को महीन पीस कर आँख में लगाने से आँख का दर्द (दुखनी) ठीक हो जाती है। यह दवाई गर्मी के मौसम की है।

बाजरे के आटे की टिकिया बनाकर एक तरफ से कच्ची और दूसरी तरफ से पक्की सेककर आँख पर बांधने से आँख अच्छी हो जाती है और आँख का पानी निकाल देती है। यह दवाई सर्दी के मौसम की है।

12. आग से झुलसने की दवा

जब कोई आग से झुलस जाय तब जले हुए स्थान पर हुक्का का पानी, झुलसने वाले स्थान पर डाल देने से तुरन्त आराम हो जाता है।

13. आधा शीसी

बिना बुझा हुआ चूना एक माषा, नोसादर एक माषा।

दोनों हथेली पर रखकर उसमें दो बूंद पानी डालकर रगड़कर सूंघने से आधा शीसी तुरन्त ठीक होती है।

14. आम[17] (आंव) की दवा

बबूल गोंद, वंशलोचन[18Ist], नो शास्ता, गिलै अरमति

इन सभी को कपड़े से छानकर उसमें ईसबगोल, तुख्मरयां, वारतंग, कनोचा, सभी समान मात्रा में मिलाकर 1/4 भाग औषधि को दूध, सोंफ के अर्क, अनार के साथ प्रातः एवं संध्या में उपयोग करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15. आम वात

हरड़ की छाल का चूर्ण

अरण्डी के तेल के साथ नित्य पीने से आम वात दूर होता है।

सामग्रीः—चित्रक, कुटकी, तज, देवदारू, गिलोय, अतीस[19] तथा हरड़ की छाल

इनको समान (बराबर) भाग में लेकर चूर्ण बनाकर लगभग दो टंक प्रतिदिन पीने से उक्त रोग दूर होता है।

16. उदावर्त्त[20] की औषधि

जवाखार – 1 टंक, खुरासानी वच[21] –1 टंक

इनको पानी में महीन पीसकर पीने से मूत्र रोकने से उदावर्त्त दूर होता है।

17. उन्माद[22] की दवा

कूठ[23] तोला –1, असगंध[24] तोला–1, सैंधा नमक तोला– 1, अजवायन तोला–1, जीरा तोला– 2, त्रिक़टु तोला– 3, चिरायता– 1, शतमूली[25] तोला– 1, वच. खुरासानी[26] तोला– 1

इन सभी का चूर्ण बनाकर तीन माषा ब्रह्मी के रस की भावना देवै। दस माषा घी तथा 20 माषा शहद मिलाकर सेवन करें। उसके बाद पाव भर गाय का दूध पीने से उन्माद समाप्त होकर बुद्धि तीव्र होती है।

18. उपदंश की औषधि

आम की अन्तर छाल – 5 तोला, धतूरे के बीज– 5 तोला, आक की जड़– 5 तोला, सिंदूर 8 तोला।

इन सब को पीस कर टिकिया बनावे। 18 छाया में सुखा कर बड़े हुक्का में पीवै। एक सुबह एवं एक शाम पीवैं, धूँए को अन्दर तक जाने दें। तो इसकी गरमी से कलेजा तक का दाग जाता है।

19. उरक्षत[27] रोग का नुस्खा

छोटी इलायची– 2 तोला, तेजपात– 2 तोला, दाल चीनी– 2 तोला, मुनक्का– 2 तोला, दूध से शुद्व की हुई पीपर– 2 तोला,मिश्री– 4 तोला, मुलेठी– 4 तोला, खजूर –4 तोला, कायफल, 4तोला।

सभी का महीन चूर्ण कर आधे तोले के मात्रा की गोली बनाकर, गोली को सुबह–शाम खाकर, ऊपर बकरी या गाय का ताजा दूध मिश्री मिलाकर पीने से उरक्षत रोग हो छूटकारा मिलता है।

इसी तरह निम्न औषधियां भी उपयोगी है :–

चुन्नी गुलाबी– 7 माषा, बरक चाँदी के– 7 माषा, बरक सोनें– 3 माषा

सामग्री गुलाब जल के साथ महीन खरल एक से दो रत्ती की खुराक लेने से उरक्षत रोग से छूटकारा मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20. कटे हुए अंग पर लगाने की दवाई

शरीर का कोई हिस्सा किसी धारदार हथियार एवं नुकीले औजार से कट जाय तो उस पर शराब लगा देने से ठंडक पड़ जाती है और आराम मिलता है।

21. कठोदर

लौंग, सुहागा, एलूवा (कलमी) सोरा को पीस कर चूर्ण बनाने के बाद 4 माषा की खुराक गर्म पानी के साथ लेने से कठोदर रोग में आराम मिलता है।

22. कब्ज एवं उदर रोग का नुस्खा

अजवायन–60 तोला, काला नमक–30 तोला, बैंगन–5 नग, धतुरा– 5 नग, आक के पीले पत्ते–25 नग, थूहर की लकड़ी (डंडी) 3 फीट (डेढ हाथ)

इन सभी को कूट कर एक हांडी में भर लें। आँच (अग्नि) पर रखकर भस्म बनाकर 4 माषा ठण्डे पानी के साथ सोते समय पीने से कब्ज एवं उदर रोग से छुटकारा मिलता है।

नोट :– इन औषधियों को कूटने में कोई धातु पात्र प्रयोग में नही लेना चाहिए।

अनार के फल – 5, ग्वार पाठा– 5, थुअर के डन्डा– 3 हाथ, बैगंन– 5, कटेरी के फल– 50, धतूरा के फल– 10, आक के पत्ते– 1 किलो, पाचों नमक – 1 किलो

सभी को कूट कर एक हांडी में भरकर ऊपर कपड़े से बांध ले। चार प्रहर तक धीमी आंच पर रखे। ठण्डा होने पर निकालकर 6 माषा की मात्रा में सेवन करने से उदर रोग से आराम मिलता है।`

23. कब्ज दूर करने की दवा

काला नमक– एक पैसा भर, काली मिर्च – एक पैसा भर , नौसादर– एक पैसा भर

इन सभी वस्तुओं को लेकर कूट पीसकर कपड़े से छानने के बाद, चीनी का बूरा मिलाकर लगभग 1 तोला दवाई गर्म पानी के साथ लेने से तुरन्त दस्त हो जाती है।

24. कमल वाय

आक के पौधे के मध्य का पत्ता अर्थात् टोंही लेकर निम्न विधि से सेवन करने से कमल वाय मिट जाती है :–

आक का पत्ता – 3 माषा, गुड़– एक तोला

दोनों को मिलाकर गोली बनाले तथा प्रातः काल सात दिन तक सेवन करें। सेवन के बाद दूध पीने से कमल वाय मिट जाती है।

25. कीड़े (कृमि) रोग की औषधि

वच, अजमोद, पलाश, पर्पटक, हींग, कम्पितलक, निशोथ

ये सभी दवाई बराबर लेकर कूट कर चूर्ण बनालें। लगभग 6 माषा की मात्रा में प्रातः समय (फाकने) एवं गो मूत्र के साथ अथवा छाछ के साथ लेने से कृमि रोग का नाश होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

26. कुष्ठ की दवा

नीम की छाल जो ऊपर उठी हुई होती है। इसे लेकर खूब महीन पीसने के बाद 1 से 4 तोला तक पानी के साथ उपयोग करने के पश्चात् बिना नमक की चने के आटे की रोटी का सेवन करने से कुष्ठ रोग ठीक होता है।

27. खाँसी – कफ की दवाई

तांबे की भस्म, बाजरे के आकार की लेकर पान के साथ रखकर सुबह–शाम खाने से कफ एवं खांसी समाप्त होती है।

सुबह–शाम बंबूल का दातून करना चाहिए तथा मिर्च तेल खटाई का परहेज करते हुए मूंग की दाल, गेंहू, बाजरे की रोटी खानी चाहिए।

28. खाँसी की दवा

काकड़ा सींगी[28] पानी में पीस कर काली मिर्च के आकार की गोली बनाकर मुँह में रखने से कफ की खाँसी से राहत मिलती है।

सरसों को पीसकर शहद में मिलाकर चाटने से कफ, खाँसी मिटती है।

काकड़ा सींगी को पीस कर शहद के साथ चाटने से कफ की खाँसी मिटती है। यह दवा बच्चों की खाँसी एवं खरखराहट के लिए भी उपयोगी है।

29. खुस्की की दवा

जिसको खुस्की हो उसे शहद, अदरक एवं पान का रस एक रत्ती की मात्रा में मलाई के हलुवा में देकर दूध का सेवन करने से खुस्की मिट जाती है।

30. खुस्की से खाँसी की दवा

मूंगा[29] की भस्म शहद एवं मलाई के साथ चाटने से खुस्की खाँसी बंद होती है।

भीमसेनी कपूर[30] – माषा 5, कस्तूरी– माषा 5, लोंग मिर्च– माषा 11, पीपर– माषा 11,बहड़े की छाल – माषा 11, कुलीजंन– माषा 11, अनार का छिलका – माषा 5

इन सभी को पीसकर पानी के साथ घोटकर चने के बराबर गोली बनाकर एक–एक सुबह–शाम लेने से छूटकारा मिलता है।

आक के फूल के मध्य (बीच) की चोखूंटी जो फूली हुई हो, उसे लेकर इसके बराबर मात्रा में लौंग लेकर पानी से घोटकर एक रत्ती की गोली बनाकर सुबह–शाम लेने से खाँसी समाप्त होती है।

31. खूनी बवासीर का नुस्खा

हरड़ की छाल, बेहड़े की छाल, आंवले, मजीठ[31], दारू हलदी[32], वच[33], गिलोय[34], नीम की छाल ये सब वस्तुएं एक–एक माषा लेकर तीन छटाँक पानी में चढ़ा दे जब आधा पानी रह जाये तब छान कर सुबह–शाम पीने से खूनी बवासीर से आराम मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

32. गठिया की औषधि

संखिया सफेद[35] – 4 तोला, रोगन[36] जर्द – 4 तोला, गाय का घी– 4 तोला

ये सभी कढ़ाई में डालकर आँच पर चढ़ा दे और मंदी आँच 32 प्रहर तक देने के बाद आँच से उतार दे। कढ़ाई में डाली हुई संखिया को निकाल लें उसके बाद काढ़ा की मालिश दर्द की जगह पर करने से आराम मिलता है।

33. गंभीर घाव की दवा

सांभर के चमड़े की भस्म मात्रा – एक पैसा भर, बड़ की कोंपल– एक पैसा भर, कोड़ी की भस्म– 4 माषा, पुरानी सुपारी की भस्म– एक पैसा भर, राल – एक पैसा भर, मोम– एक पैसा भर, नीला थोथा– 3 माषा, कत्था– पैसा भर, गाय का घी– चार पैसा भर

इन सभी को पीसकर बड़ की कोंपल घी में जरायले। फिर उसी घी में मोम तथा सभी दवाई डालकर लुगदी बनाने के बाद पानी से अच्छी तरह धोकर रूई के फांये पर दवा को लगाकर गंभीर घाव पर लगानें से घाव भर जाता है।

34. गर्मी की दवाई

सफेद फूल की चमेली को लेकर उसमें काली मिर्च जलाकर ठण्डाई की तरह महीन पीसकर, पानी में छानकर सुबह–शाम पीने से शरीर की गर्मी निकल जाती है।

बहुफली को मिश्री और काली मिर्च के साथ खूब महीन ठण्डाई की तरह घोटकर गाय के दूध के साथ छानकर सुबह–शाम पीने से शरीर में ताकत आती है तथा नामर्द का मर्द बन जाता है। धातु बहना बन्द हो जाता है।

रोगी को मूँग की दाल एवं गेहूँ की रोटी के अलावा अन्य चीजों से परहेज रखना चाहिए।

35. गर्मी के ठसका की दवाई

गजरी का पौधा नर्म जगह पर नदी के किनारे पर होता है। चेत्र माह में इस पेड़ में अजवायन जैसी छोटी फोंदी आती है। इस पेड़ को पत्ते सहित उखाड़ कर उसमें काली मिर्च मिलाकर खूब महीन पीस कर पानी के साथ सुबह के समय पीने से गर्मी का ठसका बन्द हो जाता है।

इसमें तेल, खटाई, गुड़, उड़द की दाल और लाल मिर्च का परहेज रखना चाहिए। यह दवाई गर्मी के मौसम की है। 7 दिन तक इस दवा का सेवन करना चाहिए तथा 15 दिन तक परहेज रखना चाहिए।

36. गूमड़ा (फुंसी) का उपचार

कलेवा, जली हुई कौड़ी, मुरदाशन, पपरिया कत्था[37], राल[38], सिंदूर

इन सभी चीजों को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसकर महीन करने के बाद उसमें घी मिलाकर मरहम बनाकर गूमड़ों पर लगाने से गूमड़े ठीक हो जाते है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

37. घाव के कीड़े मारने की दवाई

CC-0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेल– एक तोला, सिंदूर– एक तोला, मोम– एक तोला

इन तीनों को गरम करके, पकने के बाद जमा लें। डीकामाली यह पंसारियो के यहाँ मिलता है।

इसे लेकर महीन पीस कर, कपड़े से छानने के बाद गर्म दवाई में मिला लेंवे। इस दवाई को घाव पर लगाने से घाव के कीड़े मर जाते हैं। डीकामाली में ऐसी तासीर है कि उसको चाहे जिसके साथ उसे घाव पर लगा देने से घाव के कीड़े मर जाते हैं।

घाव में खाने का सूखा चूना भर दें तथा उस पर कपड़े की पट्टी बांधने से भी कीड़े मर जाते है।

गरम–गरम छोटी–छोटी आग की अंगारिया भर देवै तो घाव के कीड़े भर जाते हैं।

मरूऐं के पत्ते को महीन पीसकर घाव में भरने से कीड़े मर जाते हैं। यह दवा पशुओं के घाव के कीड़ो की है इसको हम मनुष्य के घाव पर भी लगा सकते हैं।

38 (अ). जिगर पीलिया की औषधि

सफेद चन्दन, दारू हलदी

इन दोनों को पीसकर छानने के बाद शहद में लेने से पीलिया में आराम होता है।

मेंहदी के पत्तों को रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल हाथ से मलकर छानने के बाद मिश्री मिलाकर पीने से पीलिया में आराम होता है।

त्रिफला, मडूंर भस्म फुका मांडूर, बेर की गुठली, मिर्च, सोनामुखी

ये सभी बराबर मात्रा में लेकर कूट कर पीसने के बाद शहद के साथ गोली बनाकर कर नित्य सेवन करने के बाद ऊपर गौ का तक्र पीने से जिगर में तथा पीलिया में फायदा होता है।

38. (ब). जी मिचलाना (उल्टी, उबकाई)

रीठे की गिरी को निकालकर चार घड़ी तक पानी में भिगोने के बाद जब नरम (मुलायम) हो जाय तो थोड़ा–थोड़ा चबाने से कै करना और जी मिचलाना बन्द होता है।

पके हुए छुहारे को मुँह में रखने से पित्त से जी मिचलाना बन्द होता है।

काली मिर्च– 3 भाग, पीपर– 6 भाग, अनार दाने– 12 भाग, जवा खार (यवक्षार)– 1 भाग

इन सभी को कूट पीसकर गुड़ के साथ मिलाकर 8 माषा की गोली बनाकर खाने से जी मिचलाकर कै (उल्टी) बन्द होती है।

39. ज्वर की औषधि, (लक्षण–प्यास, घबराहट, उबकाई)

गीला धनिया, लाल चंदन, नीम की गिद्वी, पद्माक्ष[39]

इन सभी वस्तुओं का काढ़ा (वांट) कर पीने से उपरोक्त लक्षण वाले ज्वर से छुटकारा मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

40. ज्वर तथा खाँसी की औषधि

CC-0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शहद, अदरक का रस तथा पान का रस

इन सभी को एक रत्ती की मात्रा में देने से ज्वर शान्त होता है। बुखार आने से पहले देने से बुखार नहीं आता। यह दवा खाँसी वाले के लिए भी उपयोगी है।

41. ज्वर का नुस्खा

पुराने आक की जड़ निकालकर छोटे–छोटे टुकड़े कर छांया में सुखाकर जलाने के बाद भस्मी करलें उसके बाद एक मजबूत ढ़क्कन वाली बोतल में भरकर किसी कुँए के पास तरावट की जगह में छः माह तक गाड़ कर रख दें। उसके बाद जमीन से निकालकर खुराक लेने से ज्वर ठीक होता है।

42. ज्वर के बाद हाथ पैरों में जलन तथा नेत्रों में लालिमा होने की उपचार विधि

रसोत[40], मुसब्बर[41], हीरा कसीस, अतीस[42]

सभी सामग्री बराबर मात्रा में लेकर पान एवं अदरक के रस में चार दिन घोटकर 2 रत्ती की गोली बनावे। दोनों समय भोजन के एक घन्टे पहले एक या दो गोली का सेवन करने से शीत ज्वर नहीं आता।

43. ज्वरांजन

नीम की निंबोली, सफेद जीरा, छोटी पीपर तीनों वस्तुएं बराबर लेकर करेले के रस में मिलाकर 21 दिन तक आँख में अंजन करने से ज्वर मिट जाता है।

44. ताकत और प्रमेह की औषधि

चांदी की भस्म– 3 माषा, मूंगा की भस्म– 3 माषा, बंग[43] भस्म– 3 माषा, रस सिन्दूर– 9 माषा, सोने का बर्क – 1 माषा, कस्तूरी– 1 माषा।

इन सामग्री के बराबर मिश्री मिलाकर खरल करे उसके बाद एक दिन मक्खन के साथ तथा पाँच दिन गुलाब जल के साथ खरल करें। काढ़ा हो जावे तब दो रत्ती की गोली बनाकर दूध के साथ सुबह–शाम गोली का सेवन करने से धातु पुष्ट तथा वीर्य बढता है।

45. तिल्ली की दवा

एक हांडी में आक के पत्तो की तह (एक पर एक रखकर) हर पत्ते पर सैंधा नमक भुरक (छिड़क) कर धीमी आँच पर रखकर भस्म बनाकर सुबह–शाम एक माषा गरम पानी के साथ सेवन करने से तिल्ली के विकार से छुटकारा मिलता है।

46. दस्त बंद करने की दवा

4 तोला लाल फिटकरी, 1तोला कच्ची हींग, 2 तोला अफीम।

लाल फिटकरी को फुलाते समय अफीम भी छोड़ देवें। जब धूम रहित हो जाये तब उसमें हींग मिलाकर खरल करने के बाद उसमें तीन रत्ती शहद मिलाकर सेवन करने से सभी प्रकार के दस्त बन्द हो जाते है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सफेद फूल की दुद्धी लगभग एक पैसा भर लेकर उसमें 21 नग काली मिर्च मिलाकर पानी के साथ बारीक पीस लेने के बाद, पानी के साथ पीसी हुई दवाई को छानकर पीने से दस्त तुरन्त बंद हो जाते है।

दवाई के साथ थोड़ा चीनी का बूरा मिला लेना चाहिए। दवाई लेने के बाद मूंग की दाल के साथ गेहूँ की रोटी का सेवन करना चाहिए।

47. दाद की औषधि

खरबूजा की मींजी पीसकर मक्खन में पिठी बनाकर दाद पर मालिश करने से दाद मिट जाता है।

48. नकसीर की औषधि

दूब का रस, अनार की कली का रस, अमल तास के फूलों का रस

इन सभी के रस को नाक (नस्य) देने से नकसीर बन्द होती है।

49. नजला एवं पतले कफ की दवाई (यह दवाई नजले के लिए है जो कंठ पर होता है)

वत्सनाभ, हंस पातिक (हंसपाद हिगुंल) सिंदरफ, पीपर छोटी

इन तीन वस्तुओं को बराबर तीन भाग में लेकर प्रथम तेलिया मीठे को गाय के मूत्र में भीगो लें जब नरम हो जाये तब उपरोक्त तीनों वस्तुओं को मिलाकर खरल करें, बिलकुल महीन हो जावे तब एक रत्ती की खुराक सुबह–शाम में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

इस दवा को अदरक और पान के साथ भी लिया जा सकता है। तेल, खटाई का परहेज रखना चाहिए।

50. नारू (नहरवा) की दवा

खोल सुहागे[44] की माषा – 1, गुड़ माषा– 4

इनकी गोली बनाकर सेवन करें।

केशला (पलाश) के फूल माषा – 2, गुड़, तेल – 2

रविवार के दिन गोली बनाकर सूर्य के सामने खाने से आराम मिलता है।

51. नासूर की दवा

मेंहदी के पत्ता – 2 माषा, राल– 2 माषा, नीला थोथा– 2 माषा, कत्था– 2 माषा।

गाय का मक्खन एक सो एक बार धुला हुआ। उपरोक्त सामग्री में मिलाकर नासूर पर लगाने से आराम मिलता है।

नीला थोथा – 5 टंक, मिर्च– 20 टंक, बावची– 20 टंक, आमला सार गंधक शुद्ध– 20 टंक।

इन सभी को कपड़े से छानकर 7 गोली बेर के आकार की बनाकर सुबह–शाम एक–एक गोली का सेवन करने के बाद गेहूँ की रोटी के साथ घी का सेवन करने से उपदन्स जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

52. पसली दर्द की दवाई

असली सफेद मिट्टी का तेल लेकर इसे हाथ में लगाकर दर्द की जगह मर्दन करने से कुछ फायदा होने लगे तब सुलगते आग से दूर रहकर सिकाव करे, बाद में रूई से सिकाव कर गर्म–गर्म पट्टी दर्द की जगह बांधने से पसली का दर्द बंद हो जाता है।

53. पक्षाघात[45]

महुँए का रस– 5 टंक, गूगल– 5 टंक, कुचला बीज– 5 टंक, बकरी की मिंगनी– 5 टंक।

इन सभी को महीन पीस कर शरीर में लेप करे। उसके बाद कमर के बराबर खड्डा खोदकर उसमें अग्नि जलाकर लाल करें। फिर आग निकालकर गढ़े के चारों ओर आरू (आड़) के पत्ते बिछा दे फिर रोगी को उसे गड्डे में बिठाकर पसीना आने तक वहीं रखें।

अरंड की जड़, उर्द, कोंच के बीज, अरेठी की जड़

इनका काढ़ा बनाकर उसमें भूनी हींग और सेंधा नमक मिलाकर पीने से पक्षाधात दूर होता है।

54. पागल कुत्ते के काटने के पश्चात् उपचार की विधि

भूनाग (केचुँए) सूखे हुए –1 तोला, लोहवान (लोबान)–1 तोला, मिश्री–8 माषा।

इनको कूट–पीस कर कपड़े से छानकर चूर्ण बनाने के बाद लगभग तीन माषा की मात्रा में पानी के साथ सुबह–शाम सात दिनों तक लेने से आराम मिलता है।

55. पागल कुत्ते के काटने का उपचार

अंकोल के पेड़ की छाल को खूब महीन पीसने के बाद कपड़े से छान लें।

पागल कुत्ते के काटने पर उपरोक्त पीसी हुई सामग्री को लेकर उसमें गाय के दूध की छाछ को लेकर 4 माषा काली मिर्च मिलाकर दवाई का सुबह–शाम सेवन करना चाहिए।

दवाई का सेवन 3 पखवाड़े तक दो बार तथा 3 पखवाड़े के बाद दिन में 1 बार दवाई का सेवन करना चाहिए। 3 महीने बाद 3 वर्ष तक दो–तीन दिन में एक बार दवाई देनी चाहिए। रोगी को अपनी छाया नहीं देखनी चाहिए।

तेल, खटाई, गुड़, मिर्च, उड़द की दाल तथा तली भूनी हुई वस्तुओं से परहेज करना चाहिए।

तब तक दवाई का सेवन करें जब तक गेहूँ की रोटी और मूंग की दाल में सैंधा नमक एवं काली मिर्च डालकर कम घी को प्रयोग में लेना चाहिए।

काटने वाले स्थान पर पानी बिलकुल नहीं लगाना चाहिए। रोगी की झूठन किसी को नहीं खिलानी चाहिए।

56. पाचक चूर्ण

हींग 2 तोला, नींबू 1 किलो

हींग को नींबू के रस में गर्म कर गाढ़ा हो जाने पर बाजरे के आकार की गोली बनाकर भोजन के बाद सेवन करने से पाचन शक्ति ठीक रहती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

57. पांडु रोग[46]

त्रिफला, चीता, वाय विड़ग, नागर मोथा, सोंफ, सोंठ, मिर्च, पीपर

ये सभी दवा बराबर मात्रा में महीन पीस कर कपड़े से छानने के बाद शहद मिलाकर गोली बना लें। गोली सेवन के बाद गौमूत्र अथवा छाछ पीने से पांडु रोग नष्ट होता है।

इसकें साथ–साथ हृदय रोग भगंदर कुष्ठ, अर्श[47] संग्रहणी, मंदाग्निश्रूल[48], पेट पीड़ा इन सभी रोगों में उपर्युक्त विधि उपयोगी रहती है।

त्रिफला पानी में भीगो कर सुंघने से पांडु रोग नष्ट होता है।

58. पाँव दर्द के उपचार की औषधि

सांभर नमक, तिल, हल्दी

इनके बराबर धतूरे के बीज लेकर पानी में पीसकर, तीनों के बराबर गाय का मक्खन लेकर इनको पकावे और पकते समय चौगुनी मात्रा में गाय का मूत्र मिलावैं। उबलकर जब घी मात्र रह जाय तब उसे पाँव के तलुओं में मलने से पाँव का दर्द (पाँव की फूटन) दूर होती है।

59. पित्त ज्वर का नुस्खा

नीम के पत्तो को पीसकर, हाथ से मसल कर, काढ़ा निकाल कर शरीर में मर्दन करने से तृषा[49], दाह[50], मोह से पीड़ित पित ज्वर शान्त होता है।

60. पित्त की छर्दि[51]

सफेद चन्दन–4 माषा, कटारे का रस–4 माषा

इन सभी को मिलाकर शहद के साथ चाटने (खाने) से पित्त की छर्दि समाप्त होती है।

कपूर कचरी को कूट छान कर पानी मे पीसकर मूंग के आकार की गोली बनाकर दो–तीन गोली पानी के साथ लेने से छर्दि समाप्त होती है।

61. पुष्टि वर्धक औषधि

रूमी मस्तंगी[52] माषा – 1, बंशलोचन माषा – 1, मिश्री माषा – 16

इनको मिलाकर बिना घोटे हुए दूध के साथ फांकने तथा दूध में मीठा डालकर उपयोग करने से पुष्टि बढ़ती है।

62. फटे होंठ के उपचार की दवाई

छोटी इलायची लेकर खूब महीन पीस कर कपड़े से छानने के बाद उसमें घी मिलाकर होठ पर लगाने से होठ अच्छे हो जाते है।

63. फोड़ा की दवाई

नागर बेल का पत्ता जिसका फूल जो गुलाबी रंग का होता है। इसके पत्ते को पीसकर उसकी टिकिया बनाकर घी में छोंक कर फोड़े पर बांधने से फोड़ा फूट जाएगा और इसी दवाई से घाव भी भर जाएगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि फोड़े पर सूजन हो जाये तो मूली के पत्तों को मोड़कर उसका अर्क निकाले फिर अर्क को उस फोड़े पर निचोड़ दे तथा पत्तों को गर्म करके उसी पर बांधने से फोड़े की सूजन उत्तर जाती है।

64. फोड़े फुंसियों के घाव को भरने की दवाई

नीलाथोता, कबेलो[53], मुरदाशन, सिंदरफ।

इन चारों वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीस महीन करने के बाद 21 बार इसे तेल में मिलाकर कपड़े से छानने के बाद, कपड़े को फोड़े के ऊपर घाव पर चिपका दे। चार–पाँच दिन में घाव ठीक हो जाता है।

65. बदहज़मी की दवाई

सौंठ एक छटांक को लेकर सिकाई करे उसके बाद कूटकर उसमें 1 छटांक चीनी का बूरा मिलाकर, लगभग 1 छटांग दवाई का सेवन करने से बदहज़मी ठीक होती है।

66. बदहज़मी होकर दस्त बंद करने की औषधि

सौंठ, मिर्च, पीपर, बड़ी इलायची के दाने, सैंधा नमक, शाही जीरा, दाल चीनी, चित्रक के जड़ की छाल।

ये सभी सामग्री बराबर मात्रा में लेकर महिन कपड़े से छानने के बाद चार माषा दही के मठ्ठे में मिलाकर तीन–चार बार सेवन करने से दस्त बन्द होती है।

67. बवासीर का नुस्खा

बन गोभी को काली मिर्च के साथ घोटकर पीने से खून बन्द होता है इसकी लुगदी घी में छोंककर बांधने से टीस, चबक (दर्द) नष्ट होता है।

1 सूखा आमला रात को भिगोने के बाद प्रातःकाल घोटकर आधा पाव पानी में छानकर उसमें 2 तोला मिश्री डालकर पीने से रक्त बन्द होता है।

कंगी (बला) की पत्ती 21 नग, काली मिर्च 21 नग

पानी में पीसकर 7 गोली बनाने के बाद एक गोली सुबह–शाम खाने से खूनी बवासीर में फायदा होता है।

नीम की निंबोरी की मींजी, वकायन की मींजी, रसोत, एलुआ[54], काली मिर्च, गेरू

उपरोक्त सामग्री को महीन पीसकर मकोय के रस में झाड़ी बेर बराबर गोली बनावे। सुबह–शाम पानी के साथ में लेने से खूनी बवासीर से फायदा होता है।

दो भाग मिश्री हुलहुल[55] के बीज भाग 1 पीस छानकर सुबह–शाम दो–दो माषा पानी के साथ लेने से खूनी बवासीर में फायदा होता है।

करेले की जड़ को छाया में सुखाने के बाद पाव भर जौ कुटकर तीन किलों पानी के साथ उबाले। जब आधा किलो पानी रह जाय तब छान कर पाव भर शाम को तथा आधा पाव सुबह को दस–ग्यारह दिन तक पीने से बवासीर और खून बंद हो जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अडूसा की पत्ती छाया को सुखा कर पीसने के बाद दिन में चार–पाँच बार मलने से मस्से कमजोर हो जाते है और दर्द से राहत मिलती है।

68. बवासीर की दवाई

लहसुन की टिकिया या भांग की टिकियॉ बना कर इनको घी में छोंक कर मस्सों पर बांधने से तमाम मस्से गिर पड़ेगे यह दवाई बवासीर की है। खटाई, लाल मिर्च एवं गरम वस्तुओं से परहेज रखना चाहिए। इस टिकियॉ को सोते समय बांधना चाहिए।

69. बिच्छु काटने के पश्चात उपयोगी दवा

जमाल गोटा की मिंजी को पानी में घिस कर डंक पर लगाने से तुरन्त आराम होता है।

औंगा की जड़ पानी में घिसकर डंक पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

70. बुखार की दवाई

गाय के दूध की छाछ में पीपर को आठ पहर तक भीगोकर गर्म तवे या कड़ाई में छाछ के साथ डालने के बाद, खुश्क होने के बाद पीपर को निकालकर रख दे।

बुखार वाले रोगी को पीपर का सेवन करने से बुखार ठीक हो जाता है।

सौंठ पीपरामूल, सांभर नमक इन सभी वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर पीसने के बाद दवाई को कपड़े से छानने के बाद चार–चार माषे की पुड़िया बना कर बुखार आने से पहले या बुखार चढ़ते ही पुड़िया को फांककर ऊपर से गर्म पानी पीने से बुखार बंद हो जाता है। दवाई खाने के बाद हल्का भोजन खाना चाहिए।

71. भगन्दर की औषधि

हरड़ की छाल –6 तोला, बहड़े की छाल –6 तोला, आँवला– 6 तोला, गूगल– 20 तोला।

गुगल को गाय के दूध में उबालकर त्रिफला को कूटने के पश्चात् उसमें गूगल मिलाकर उस पर हथोड़ा की चोट लगाकर मोम के समान करने के बाद 2 तोले की एक गोली बनाकर खेरे के काढ़े (मिश्रित घोल) के साथ सुबह–शाम पीने से भगन्दर स्वतः नष्ट होता है।

नाहर के अगले पंजे की हड्डी को पानी के साथ घिसकर भगन्दर पर लगाने से भगन्दर जाता है।

इसी तरह बिल्ली की हड्डी भी काम देती है।

चमेली की पत्ती, बड़ की पत्ती गिलोय, सौंठ, सैंधा नमक इस सभी का मठा पीस कर भगन्दर पर लेप करने से आराम होता है।

72. मलेरिया का नुस्खा (जिगर पर तिल्ली होकर कमल वाय दूर करने का नुस्खा)

सामग्री – शुद्व पारा, गन्धक, मीठा तेल, जमाल गोटा, तपकी हरताल

ये सभी वस्तुएं शुद्व होनी चाहिए। फुला हुआ सुहागा, सोंठ, काली मिर्च, पीपर, हरड़ बहेड़ा, आँवले की छाल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभी औषधियां बराबर मात्रा में लेकर, गन्धक पारे की कजली करने के बाद भांग के रस में घोटकर एक रत्ती की गोली बनाकर निम्नलिखित वस्तुओं के साथ प्रयोग करे –

पांडु में रास्नादि अर्क के साथ में, शीतांग में अदरक के रस में

जुलाब कराना हो तो गरम जल में काली मिर्च के साथ घोटकर पीने से मलेरिया ज्वर दूर होता है।

हजारदाना नामक जंगल की जड़ी के साथ काली मिर्च घोटकर पीने से मलेरिया ज्वर शीघ्र नष्ट होता है।

73. मस्से के दर्द की औषधि

अरहर की पत्ती, सरेस की पत्ती, धोक फूल[56], भांग की पत्ती, लोध[57]

इन सभी वस्तुओं को कूटकर पानी में उबालकर मस्सों में बफारा देने से मस्सों की टीस एवं दर्द में राहत मिलती है।

गैंडे के सींग को रेती से रेत कर अग्नि पर रखकर धूनि देने से मस्से कट जाते हैं।

कुचला को अग्नि पर रखकर गुदा में धूनी देने से बवासीर दर्द और मस्से का खून बन्द हो जाता है।

दो चार बड़े–बड़े बिच्छू को मीठे तेल में डालकर फिर तेल और बिच्छू को शीसी(बोतल) में भरकर मजबूत ढक्कन से बंद कर उसे चालीस दिन तक धूप में रख लें। उसके बाद उसे छानकर दूसरी बोतल में रख लें। तेल को मस्से पर लगाने से मस्से ठीक होते हैं।

सोंठ–4 माषा, काली मिर्च–9 माषा, पीपर–13 माषा, तज–18 माषा, इलायची बीज–1 तोवा, तेजपात–2 तोला, नाग केसर–2 तोला

इन सभी को कूट कर चूर्ण बनाने के बाद एक तोला सुबह–शाम पानी के साथ लेने से अरूचि, गोला, तिल्ली मंदाग्नि, श्ंवास, कंठरोग, हृदय रोग आदि बिमारियों से युक्त बवासीर रोग से तत्काल छुटकारा मिलता है।

74 (अ). मिर्गी की औषधि

वन तुलसी के पत्तो को पीसकर रस निकालने के बाद एक बोतल में रख लें। जिस समय मिरगी आवे तब चारपाई पर लिटाकर थोड़े–थोड़े रस की बूंदे नाक में सुंघावे, थोड़ी देर ठहरने के बाद नाक को नीचे की तरफ कर दें और पानी झड़ने दे। नाक से मरा हुआ कीड़ा निकले उस पर निगाह रखें, नही तो छींक द्वारा निकाले।

इस विधि को दस दिनों तक करें, मिर्गी से छुटकारा मिलेगा।

74. (ब) मिमाई (गर्मी सुजाक) का नुस्खा

भिलाये – एक सेर (1 किलो), राल – आधा सेर ($^{1/2}$किलो), तपकिया– पाव भर, सांखिया सफेद – आधा पाव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनका पाताल यन्त्र में तेल निकालकर जब तेल जम जाय तब निकाल ले। चोट वाले पुरूष को दूध में मिलाकर पिलाने से आराम मिलता है।

ये कूट पीसकर नौ टका पानी में उबाले, जब छः टका पानी रह जावे तब छानकर इन्द्री में पिचकारी लगावें तीन दिन में सुजाक समाप्त हो जाती है।

75. मुँह के छालों की दवाई

प्रायः सुबह के समय वाय विड़ग[58] के जल से कुल्ला करने से मुख के छाले ठीक हो जाते है।

76. मूत्र अवरोध की औषधि

चीनिया कपूर[59] की बत्ती बनाकर लिंग एवं भग में रखने से रूका हुआ मूत्र उत्तरने लगता है।

77. मूत्र उतरने की दवा

मूसे की विष्टा को लेकर, तंदूल के जल से बारीक पीसकर, नाभी (टूंडी) के नीचे लेप करने से मूत्र उतरने लगता है।

त्रिफला, सैंधा नमक, गोखरू और कटेरी के बीज इन सभी वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसकर कपड़े से छानने के बाद लगभग 6 माषे की दवाई को पानी के साथ पीने से मूत्र उतरने लगता है।

गोखरू[60], हरड़, पाखान भेद[61] और कलयाना इन सभी को बराबर मात्रा में लेकर कूटने के बाद काढ़ा बनालें, काढ़े को छानने के बाद शहद मिलाकर दिन में दो–तीन बार पीने से मूत्र उतरने लगता है।

78. मूत्र कृछ्रू[62] की औषधि

बंग भस्म[63] माषा – 7, जहर मोहरा माषा – 1, मोती माषा – 1, नागोरी गोंद माषा– 1,बर्क चांदी के माषा – 1

विही दाने केलुआव (चिकनाहट) में घोटकर जल में छानकर गोली बनावें। आधा माषे की खीरा ककड़ी के बीज घोटकर जल में छानकर सात दिन तक गोली का सेवन करने से मूत्र कृछ्रू में आराम होता है।

79. यक्ष्मा (टीबी) रोग का नुस्खा

वैक्रान्त माठी की भस्म– 1 भाग, अभ्रक भस्म सहस्त्र पुटी– 4 भाग, शुद्ध ताम्र भस्म– 2 भाग, चांदी भस्म– 4 भाग, मोती भस्म– 4 भाग, मूंगा भस्म– 6 भाग, पारे की भस्म – 2 भाग, सुर्वण भस्म– 4 भाग

इन सभी को मूषा कर्णी के रस में खरल कर टिकिया बनाकर छाया में सुखाने के बाद टिकिया से दुगनी शुद्ध गंधक टिकिया के ऊपर नीचे रखकर शराब संपुट में रखकर गजपुट की आँच देने के बाद भस्मी करलें जिसमें तीन पीपर पीसकर दो रत्ति दवा में मक्खन एवं मलाई के साथ चाटने से यक्ष्मा रोग नष्ट होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोती मूंगा की भस्म राज यक्ष्मा के ऊपर गुणकारी होती है।

80. रक्त पित्त

माजूफल[64], बम्बूल की पत्ती, बेर की पत्ती

इन सभी को पानी में पीसकर ठंडा करने के बाद पेट पर लेप करें तो खून की कै आना बन्द होती है।

बंबूल का गोंद पिष्टी

ये सभी बराबर पीस कर हुल्लास के साथ शर्बत देने से मुँह की राह खून आना बन्द होता है।

पका हुआ गूलर, छुहारे, दाख (किसमिस)

इनको शहद में मिलाकर खाने से रक्त पीत से सात दिनों में छुटकारा होता है।

धनियां, आँवले, अडूसा[65], दाख, पिला (पित) पापड़ा

इन सभी को बराबर मात्रा में कूट, पीसकर, 5 बार (टंक) भिगो देने के बाद ठंडे पानी में प्रातः काल छानकर उसमें मिश्री मिलाकर पीने से रक्त पित समाप्त होता है।

81. राज यक्ष्मा का नुस्खा

भीम सेनी कपूर, लौंग, इलायची छोटी, दाल चीनी, नाग केशर, जायफल, खस (उशीर), सोंठ, शाही जीरा, काला अगर, वंशलोचन, कमल गट्टे की गिरी, पीपल छोटी, चंदन सफेद, सुगंध वाला कंकोल[66], जटा मासी।

इन सभी दवाईयों को बराबर मात्रा में लेकर, कूट पीसकर छानने के बाद इन सामग्री के भाग की आधी मात्रा में मिश्री मिलाकर आधे माषे से 2 माषा की मात्रा में प्रयोग करने से राज यक्ष्मा रोग से छुटकारा मिलता है।

82. राज रोग[67]

गिलोप सत और सार ये दोनों एक टंक लेकर शहद और मक्खन के साथ खाने से छुटकारा मिलता हैं।

पारे की भस्म भाग–3, सोने की भस्म भाग–1, मैनासिल भाग–1, गंधक भाग 1

इन सभी को इकट्ठा कर एक बड़ी पीली कौडी में भरने के बाद बकरी के दूध में सुहागे को पीसकर उस सुहागे से कौड़ी का मुख बन्द कर दें। फिर उस कौडी को कुलड़ में रखकर बन्द कर दें। उसके बाद धीमी आँच देकर ठण्डा हो तब निकाल ले।

इसको राज मृगांक कहते है, मात्रा प्रमाण 4 रत्ति वर्धमान पीपर के साथ शहद, मक्खन, को मिलाकर चाटने से राज रोग से छुटकारा मिलता है।

83. रूधिर विकार की दवाई

बड़ी हरड़, बहेड़े आंवले, गिलोय[68], जीरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सभी वस्तुओं को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसकर कपड़े से छानने के बाद सुबह–शाम 6 माषे की खुराक पानी तथा गर्म दूध के साथ लेने से रूधिर ठीक होकर आरोग्यता बनी रहती है इस दवाई के सेवन से कब्जी की शिकायत नहीं रहती।

दवाई लेने वाले को तेल, खटाई से परहेज रखना चाहिए।

84. वमन की औषधि[69]

अनार दाने खट्टे – 17 माषा, शाही जीरा– 14 माषा, किसमिस (दाख)– 17 नग

कुट पीसकर 4 माषा की गोली बनाकर सुबह–शाम सेवन करने से आराम मिलता है।

हुलास, मगज विसारी, वाय विडंग तोंला– 1, बन्दाल के डोडा तोला– 1, अफीम माषा– $4^{1/2}$ लौंग माषा– 6, काली जीरी– 2 तोला, काली मिर्च– 1) माशा, कनैर सफेद पत्ता– 11 नग, कश्मीरी तमाखू– 2 तोला।

इन सभी को कूट पीस छानकर हुक्का कर लेवैं। सूंघने से आराम मिलता है।

85. वादी के शूल की औषधि

शुद्ध कुचला[70] 1 तोला, शुद्ध गूगल 6 माषा, पीपल 3 माषा,

अदरक के रस में दो रत्ती की मात्रा की गोली बनाकर खाने से शूल बन्द होती है।

86. वायु शूल की दवा

हुलहुल के बीजों को लेकर चिलम में रखकर इनको तम्बाकू की तरह दिन में दो बार पीने से वायु शूल का दर्द बंद हो जाता है। बीजों को तम्बाकू के साथ मिलाकर पीना चाहिए। उड़द की दाल खाने हो परहेज रखना चाहिए।

87. विषम ज्वर

– तुलसी के पत्तो का रस बनाकर काली मिर्च के साथ लेने से ज्वर दूर होता है।

– द्रोण पुष्पी अर्थात् गौमा[71] के रस को काली मीरच के साथ उपयोग करने से ज्वर नाश होता है।

– सहदेवी पीले[72] (पीत) फूल की जड़ को अच्छे नक्षत्र में निम्न मंत्र का छः बार मनन कर मस्तक पर बांधने से ज्वर दूर होता है।

"शिरो बद्धा ज्वरं हन्ति सहदेवी जटा यथा"

88. शीत ज्वर का नुस्खा

सर्द बुखार आने से एक घन्टा पूर्व हुलहुल के रस की दो–चार बून्दें कान में डालने से शीत ज्वर नष्ट होता है।

एक तोला कंजा[73] की मींजी, छः माषा भांग, तीन माषा काली मिर्च।

इन सभी को जल के साथ खरल में पीस (वांट) कर बेर के आकार की गोली बनाकर ज्वर के एक घंटे पहले पानी के साथ सेवन करने से शीत ज्वर नष्ट होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस सभी सामग्री को नीबूं के रस में दो दिन तक रखकर घोटने (वांटने) के बाद ड़ेढ किलो अदरक के रस में मिलाकर एक रत्ती की गोली बनाकर रखें। भोजन के बाद दो गोली का सेवन करने से हाज़मा उत्तम रहता है।

89. श्वांस (सांस) की दवा

गुल बनप्सा[74], जूफा, नीलोफर, बहेड़े की छाल, मुलैटी, गुलाब के फूल, अनार का बक्कल।

ये सभी पाँच 2 तोला की मात्रा में लेकर पाँच सेर (किलो) पानी में एक रात तक भिगोकर बाद में उबाले। जब आधी मात्रा में रह जाय तब मल कर छान लें उसके बाद 40 तोला मिश्री मिलाकर चासनी बनाले फिर उसमें 10 तोला शहद, पाव भर बादाम की पिठी मिला दें।

इसके बाद निम्नलिखित सामग्री उपरोक्त में मिलाकर आठ प्रहर पानी में रखें। सुबह–शाम लगभग 2 तोला की मात्रा में खुराक लेने से श्वांस में आराम मिलता है –

वंशलोचन 6 माषा, छोटी इलायची के दाने 6 माषा, सोंठ 6 माषा, काकड़ा सींगी 6 माषा।

90. श्वेत कुष्ठ की दवा

हीरा कसीस, सीसे का बुरादा, लोहे का चूरा।

इन तीनों को इकट्ठा कर भंगरे के रस मे घोट कर दाग पर लगाने से दाग मिट जाता है।

महेन्द्र कीर्ति, वावची, गुलै बांस के जड़ की छाल।

इनको गाय के मूत्र में घोटकर गोली बनाकर दाग पर लगाने से दाग मिटता है।

अन्यच, चिरमिठी[75], कूट[76], वच, चित्रक

नीबूं के रस में घोटकर गोली बनाकर काँजी में घोटकर लगाने से फायदा होता है।

अंजीर के दूध में मनुष्यास्थि को घिस कर दाग पर लगाने से श्वेत कुष्ठ समाप्त होता है।

91. सर्प काटने के पश्चात् उपचार की विधि

आम की छाल तोला– 5, सफेद कन्नेर के जड़ की छाल तोला– 5, तूतिया बिलायती तोला– 1, अफीम तोला– 1)

इन सभी को कूट–पीसकर कपड़े से छानने के बाद लगभग तीन माषा दवाई पानी के साथ लेने से आराम मिलता है।

बड़ा सर्प काट जाय तो जिस जगह सर्प काटा उस जगह पर नस्तर देकर बन्द लगा देना चाहिए।

पंचागुली[77] (पंचांगडा) की जड़ जिसको खोदने पर जड़ के नीचे सर्प भी निकलते है। यह जड़ लगभग 6 माषा की मात्रा में खिलाने के बाद ऊपर से घी एवं काली मिर्च का सेवन करने से विषैले सर्प का जहर कम होता है। तथा आराम मिलता है।

92. सिर भड़कने (दर्द) से उपचार की दवा

चन्दन में कपूर मिलाने के बाद साफ पत्थर पर घिसकर तमाम माथे (सिर) पर भौंह तक दवाई का लेप करने से सिर भड़कना बंद हो जाता है।

यह दवाई गर्मी के मौसम में ही उपयोग लेनी चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

93. सुजाक की औषधि

शंख को ग्वार पाठे के बीच में रखकर फिर उसको आरने जंगलीन में आँच देवै। बाद में हांडी में भरकर पुट लगा दें। जब भस्म हो जाय तब कुलफा के एक तोला बीज घोटकर आधा पाव जल में छान ले। तीन रत्ति भस्म मुख में डालकर उस जल को पी जावें।

खटाई, मिठाई, नमक, मिर्च से परहेज रखना चाहिए।

94. हाज़मा और जीगर ठीक करने का शर्बत

केवड़े का अर्क 20 तोला, गुलाब का अर्क 20 तोला, नींबू का रस 40 तोला, पेंठे का रस 40 तोला, तरबूज का रस 40 तोला, गाजर का रस 40 तोला, पोदीना का रस 80 तोला, गुडहल के फूल 200 नग, मुनक्का 20 तोला।

इन सभी को मलकर नीचे लिखित दवाईयों को कपड़े से छानकर, ऊपर लिखित सामग्री की पोटली बनाकर आठ दिन तक रख दे।

वहमन सफेद जौ– 1 तोला, वहमन सुरक– 1 तोला, वशंलोचन– 1 तोला, छोटी ईलायची के दाने – 1 तोला, आंवला सत– 1 तोला, धनियां की गिरी– 1 तोला।

इन सभी मे $1^{1/2}$ किलो मिश्री मिलाकर शर्बत बनाकर प्रतिदिन खुराक लेने से हाज़मा एवं जीगर ठीक रहता है।

95. हाज़मे का चूर्ण

जावंत्रि 3 तोला, क्षार दाल चीनी 3 तोला, क्षार शीतल चीनी 3 तोला, जवाक्षार 3 तोला, अजवायन शत 2 तोला, फुला हुआ सुहागा 6 तोला, छोटी इलायची के दाने 16 तोला।

इनको मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से हाज़मा ठीक रहता है।

96. हैजा की दवा

अफीम –1 तोला, हींग– 2 तोला, मिर्च– 3 तोला।

सभी को पानी मे घोटकर चने के आकार की गोली बनाकर एक से दो की मात्रा में खाने से हैजा समाप्त होता है।

97. होंठ फटने के उपचार

घी में मोम मिलाकर उसमें छोटी इलायची के बीज को पीसकर मिलाने के बाद, दवाई को होंठ पर लगाने से होंठ अच्छे हो जाते है।

98. विविध रोगों के नुस्खे

(राज रोग, अरूचि, क्षय, खांसी, श्वांस, गोला, बवासीर, वमन, कंठ रोग)

सामग्री

भीम सेनी कपूर – टंक 5, तज –टंक 5, काली मिर्च–टंक 5, जायफल – टंक 5,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लौंग– टंक 5, नाग केशर–टंक 7, पीपर– टंक 8, मौंठि – टंक 4

इन सभी को महीन पीस कर सामग्री के बराबर मिश्री शहद मिलाकर पीने से उपरोक्त रोगों से छुटकारा मिलता है।

अनुक्रमणिका इस आलेख में आये हुए, द्रव्यों, रोगों एवं विविध औषधियों की

आलेख पृष्ठ औषधियों एवं रोगो के नाम एवं पाद टिप्पणी क्रमांक

अंकोल	(1)	3 से 6 मीटर ऊँचा वृक्ष जिसके पुष्प सफेद होते है। यह वृक्ष राजस्थान उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल तथा दक्षिण भारत में पाया जाता है।
हरताल	(2)	खनिज द्रव्य जो पीले रंग के चमकीले परतो वाले ढेले के रूप में प्राप्त होता है। इटली एवं ईरान इसके उत्पादक है। कृत्रिम हरताल का निमार्ण भारत में भी होता है।
शीशा	(3)	धातु (श्वेत वर्ण का भारी मृदु धातु) इसे संस्कृत में नाग कहते हैं।
तिल्ली	(4)	यकृत
गुल्म	(5)	वाय गोला–हृदय, नाभि के आस–पास होता है।
कूलींजन	(6)	आदिवासी सुगन्धित पौधा जो हिमालय प्रदेश विशेषतः बंगाल और दक्षिण भारत में होता है।
कोष्ठ	(7)	पाचन शक्ति
सुहागा	(8)	अम्लिय द्रव्य (रोहितक नामक वृक्ष का द्रव्य)
क्षार	(9)	मिश्रित रस
त्रिकटु	(10)	तीन प्रकार की पीसी हुई औषधि।
निशोथ	(11)	पौधे की बेल जिसमें दूध जैसा स्राव निकलता है।
चित्रक	(12)	एक प्रकार का सफेद पौधा जो विशेषतः बंगाल, उत्तरप्रदेश, दक्षिण भारत में पाया जाता है।
अतिसार	(13)	दस्त, जुलाब
अर्शोपरि	(14)	मलद्वार के मस्से
बंदाल	(15)	जंगली पौधे की लताएं जिसमें फल होता है।
खिरनी	(16)	फल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम	(17)	अन्न विकार
वंशलोचन	(18)Ist	बांस के सफेद रंग के अपारदर्शी नीली आभा के छोटे–छोटे टुकड़े।
आम वात	(18)IInd	गठिया रोग
अतीस	(19)	पौधे की जड़, यह जड़ कन्ददार होती है।
उदावर्त्त	(20)	पेट फूलना
खुरासानी वच	(21)	हिमालय प्रदेश में पाया जाने वाला शाखा रहित पौधा जो छायादार जगह पर मिलता है।
उन्माद	(22)	मस्तिष्क रोगी
कूठ	(23)	घने वर्षा वाले क्षेत्र में उगने वाले पौधे की जड़।
असंगध	(24)	राजस्थान के नागौर क्षेत्र में पाये जाने वाला पौधा जो 5 से 6 फुट ऊंचा होता है। पौधे की जड़ का क्षार उपयोगी होता है।
शतमूली	(25)	शतावरी का झाड़ीनुमा कांटेदार क्षुप। सर्दी के मौसम में इसके फल मिलते हैं। उन्माद के लिए जड़ (मूल) उपयोगी है।
खुरासानी	(26)	एक प्रकार के बीज जो अजवाईन के आकार से बड़े होते है। हिमालय प्रदेश के कश्मीर गढ़वाल में इसके उत्पादन की प्रचुरता पाई जाती है।
उरक्षत	(27)	साहसजन्य कार्य यथा–बलवान के साथ युद्ध करने, शक्ति से भार उठाने, दौड़ते पशुओं को रोकने, अतिभारयुक्त वस्तु के फेंकने आदि से उत्पन्न शारीरिक कष्ट।
काकड़ासींगी	(28)	मध्यम कद का काकड़ नामक वृक्ष जो उत्तर पश्चिमी हिमालय में मिलता है। पुष्प एवं पत्तियां उपयोगी होती है।
मूंगा	(29)	एक प्रकार का रत्न
भीमसेनीकपूर	(30)	सफेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य, कपूर का उत्कृष्ट प्रकार।
मजीठ	(31)	एक प्रकार का पेड़ जो ईरान और अफगान में होता है। इसकी छाल, जड़, टहनियां, पत्ते सभी उपयोगी होते है।
दारू हलदी	(32)	झाड़ीनुमा पौधा जो हिमालय प्रदेश एवं नेपाल में अधिक मिलता है। इसकी लकड़ी पीले एवं भूरे रंग की होती है जो घूलनशील होती है।
वच	(33)	पूर्वी यूरोप एवं मध्य एशिया का आदिवासी पौधा। मणिपुर, कश्मीर, नागा की पहाड़ियों में मिलता है भूरे रंग की सुगंधित जड़े होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

गिलोय	(34)	पौधा जिसमें मटर के समान फल जिसमें मिर्च के दाने के समान श्वेत बीज पाये जाते हैं। समस्त भारत में यह पौधा पाया जाता है।
संखिया	(35)	समस्त भारत में पथरीली भूमि पर पाया जाने वाला श्वेत पुष्पि पौधा।
रोगन	(36)	द्रव्य (तेल)
पपरिया कत्था	(37)	कत्थे का एक प्रकार, खैर के वृक्ष भारत में पंजाब, बिहार बर्मा में मिलते है। इस पेड़ की छाल से कत्था तैयार किया जाता है।
रार	(38)	पेड़ के चीरा लगाकर प्राप्त द्रव्य।
पद्माक	(39)	एक मध्यम ऊँचाई वाला वृक्ष जिसकी हल्के भूरे रंग की चिकनी छाल होती है। जिसकी पतली चमकीली पपड़िया छूटती है।
रसोत	(40)	दारू हरिद्रा वृक्ष का रस।
मुसब्बर	(41)	धृतकुमारी जो एलेवेरा का भेद है जिसकी पत्तियों से मुसब्बर तैयार किया जाता है। रसक्रिया धूप एवं मंद आंच से की जाती है।
अतीस	(42)	अतीस नाम का पौधा जिसका प्रायः एक ही काण्ड होता है शाखाएं चिपटी होती है जिनमें पत्तीयां गोलाकार होती हे। इस पौधे की जड़ का कन्द उपयोगी होता है।
बंग	(43)	भांग का उपनाम जिसका पौधा लेसदार होता है जिसके द्रव्य एवं पत्तिया उपयोगी होती है।
खोल सुहागा	(44)	सुहागा वृक्ष की खोल (छाल)
पक्षाघात	(45)	लकवा (शरीर के किसी अंग का क्षीण होना)
पाण्डु रोग	(46)	रक्त कणिकाओं के ह्रास से श्वेत पीत हो जाना।
अर्श	(47)	शरीर के मलद्वार के मस्से।
मंदाग्निशूल	(48)	बदहज़मी
तृषा	(49)	प्यास (सामान्य प्यास से अधिक तृषा)
दाह	(50)	जलन
छर्दि	(51)	उल्टी (कय)
रूमी मस्तगी	(52)	झाड़ीदार वृक्ष जो रूमसागर (भूमध्यसागर) के आस पास होता है। वृक्ष का गोंद उपयोगी होती है।
कबेलो	(53)	कोमल शाखाओं का वृक्ष जिसके फल का रस उपयोगी होता है। हिमालय क्षेत्र में पाये जाने वाला वृक्ष।
एलुआ	(54)	एलिया का पौधा जिसे धृतकुमारी पौधा कहते है। पत्तियों का गुदा उपयोगी होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुलहुल	(55)	पील रंग का पौधा जिसकी फलियों में सरसों जैसे काले बीज होते हैं।
धोके फूल	(56)	पहाड़ी क्षेत्र में पाये जाने वाला क्षुप जिसके फूल उपयोगी होते हैं।
लोध	(57)	लोध नामक जंगली वृक्ष जिसकी छाल सफेद होती है। आसाम, बिहार, बंगाल में इसके वृक्ष पाये जाते है।
वाय विड़ग	(58)	विड़ग का सुखाया हुआ फल काली मिर्च के समान छोटे आकार का होता है। भारत वर्ष में जंगली प्रदेशों में पाया जाता है।
चीनिया कपूर	(59)	दाल चीनी प्रजाति के वृक्षों से कपूर प्राप्त किया जाता है। इसके वृक्ष चीन एवं जापान में पाये जाते है। भारत इसका आयात करता है।
गोखरू	(60)	उत्तर एवं दक्षिण भारत में ऊसर एवं परती जमीन में इसके पौधे पाये जाते हैं। गोखरू का गोलाकार, कांटेदार फल होता है। पौधे की जड़, पत्तिया, बीज तथा शाखाएं सभी उपयोगी होते है।
पाखान भेद	(61)	कश्मीर, भूटान की पहाड़ियों में पत्थर की दरारों में पाया जाना वाला पौधा। पौधे की शाखाऐं पत्थरों के बीच फैली रहती है। इसकी पत्तियाँ गोल, लम्बी तथा चौड़ी होती है। पुष्प सफेद, गुलाबी या हल्के जामुनी रंग के होते है।
मूत्र कृछ्रू	(62)	मूत्र त्याग में पीड़ा तथा दाह का अनुभव।
बंग भस्म	(63)	भांग का उपनाम जिसकी भस्म उपयोगी है।
माजूफल	(64)	यूनान, तुर्की, सीरिया तथा फारस में पाया जाने वाला इफेक्टोरिया नामक वृक्ष जिसकी डालियों पर छिद्र कर ईन्फेक्टोरे नामक कीड़े को छिद्र में रखा जाता है। इन स्थानों पर गांठे उत्पन्न हो जाती है। इसे माजू या माजूफल कहते है।
अडूसा	(65)	कंकरीली–पथरीली भूमि पर पाये जाने वाला स्वयंजात पौधा जिसमें सफेद रंग के पुष्प जिसमें बैंगनी रंग की तिरछी धारियाँ होती है। इसके पत्ते, पुष्प, जड़ शाखाएँ सभी उपयोगी होती है।
कंकोल	(66)	भारत में थोड़ी बहुत इसकी खेती होती है। सुमात्रा जावा, मलाया आदि टापू इसके उत्त्पति स्थान है। इसे कबाबचीनी भी कहते है। फल उपयोगी जिसका तेल उड़नशील होता है।
राजरोग	(67)	क्षय जन्य रोग अर्थात तपेदिक रोग अर्थात् शरीर के सभी धातुओं का क्षय होना। इसे राजयक्ष्मा भी कहते हैं। इसको 'रोगराह' या रोगों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा बड़ा माना गया है। पौराणिक कथा के अनुसार चन्द्रमा को अधिक काम के व्यसन से इसकी उत्पति बताई गई है। इस कथानक के अनुसार अत्यन्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामासक्ति या स्त्री से भोग के कारण शरीर का शुक्र क्षय होने पर धातुक्षय के कारण यक्ष्मा रोग शरीर में प्रवेश कर जाता है।

गिलोय	(68)	गुडची अथवा गिलोय के काण्ड प्रायः भारत में मिलते है। मटर के आकार के फल जिसमें बीज श्वेत मिर्च के दाने के समान होते हैं।
वमन	(69)	मॉर्निंग सिकनेस, उल्टी होना।
कुचला	(70)	मध्यम कद का कुचला वृक्ष जो भारत में पाया जाता है जिसका बीज गोल, चपटा टिकियां की तरह होता है। फल नारंगी की भाँति मालूम पड़ता है। फलों में सफेद रंग का गूदा होता है। बीज के छिलके पर रेशम की भाँति छोटे–छोटे चमकदार रोंगटे होते हैं।
गोम (द्रोण पुष्पी)	(71)	हिमालय प्रदेश का पौधा; तना, जड़ पत्तियां, फल छाल सभी उपयोगी रहते है।
सहदेवी	(72)	भारत में सहदेवी के क्षुप स्वयंजात पाये जाते है। अण्डाकार पत्तियां तथा बीज काली जीरी से मिलते जुलते छोटे–छोटे होते है।
कंजा	(73)	ऊंची पहाड़ियों पर पाये जाने वाली झाड़ी जिसमें बेर की तरह गोल बीज होते है। सर्दी के दिनों में फलियों का संग्रह कर धूप में सुखाने से फट जाती है। झाड़ी में पीले काँटे होते हैं।
गुल बनप्सा	(74)	पहाड़ी स्थानों पर पायी जाने वाली वनस्पती जिसकी पत्तियां ह्वदयाकृति गोल होती है। फूल बैंगनी नीले रंग के झुमकेदार होते है।
चिरमिठी	(75)	इमली के पत्तों जैसी वनस्पति जो सफेद एवं लाल रंगों के गुच्छों सी होती है। इसके बीज मूल एंव पत्ते उपयोगी रहते हैं।
कूट	(76)	कश्मीर तथा पंजाब में पाये जाने वाला पौधा। पत्तियां त्रिकोणाकार होती हे। पौधे की सुखाई हुई जड़े उपयोगी रहती हे। अक्टूबर–नवम्बर महीनों में संग्रह की हुई जड़े फायदेमंद होती है।
पंचागुल	(77)	भारत में पाये जाने वाला वृक्ष पत्ते चौड़े जो सात फांक युक्त होते है। जिसके फल में कठोर बीज तथा जिसकी मज्जा सफेद होती है। इसकी जड़े उपयोगी होती है तथा बीज से तेल निकलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभाग में संगृहित गज-अश्वायुर्वेद के दुर्लभ-ग्रन्थ पृष्ठ 104 से 114

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

4.

विभाग में संगृहित गज–अश्वायुर्वेद के दुर्लभ ग्रन्थ

कृमलेश बहुरा
पुस्तकालयाध्यक्ष
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

सुविज्ञात–सुप्रसिद्ध भारतीय प्राच्य परम्परा, संस्कृति एवं शास्त्रों के महत्त्व को विश्व का विदवत् समाज स्वीकार करता है, हमारे प्राचीन शास्त्रों में जीवन के हर पहलू की विशद् विवेचना की गई है। मानव शरीर हैं तो शरीर में व्याधि भी हैं और व्याधि हैं तो उसका उपचार भी अवश्य होना चाहिये। ऋग्वेद में भैशज शब्द आता है "भिशक्तमं त्वा भिशजाशणोमि ऋ. 2/7/16 वेद ब्रह्मा की कृति मानी जाती है आयुर्वेद में वेद नाम रहने से इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा से ही मानी जाती है :–

त्रि सूत्रं शाश्वत पुण्यं बुबुधे यं पितामहः – चरक

सृष्टि की स्थिति बनाये रखने के लिए आयुर्वेद को उत्पन्न किया इसलिये वेदों में आयुर्वेद की चर्चा स्थान–स्थान पर मिलती है। चरक सुश्रुत जैसे आयुर्वेदाचार्यों ने मानव व्याधि का उपचार औषधि व शल्य क्रिया द्वारा किया। मनुश्य वृक्ष एवं पशु में अन्योन्याश्रित संबंध हैं अतः उनकी व्याधि व उपचार को भी प्राच्य वैद्याचार्यों ने अनदेखा नहीं किया व पृथक रूप से वृक्षायुर्वेद, हस्त्यांयुर्वेद और अश्वायुर्वेद शास्त्रों की रचना की गई राजा लोग अपने सेना के हाथी घोड़ों के लिये चिकित्सक की नियुक्ति करते थे– "बालवृद्धव्याधितानां, गोपालकाः प्रति कुर्युः।। पाथिव्याधिकर्ममद जराऽभिप्तानां चिकित्सकः प्रति कुर्युः।। कौटिल्य! चरक संहिता के सिद्धि स्थान में पशुओं के लिये वस्ति विद्यान बनाया है, उससे होने वाले फल का वर्णन है – "अथाधिगम्यार्थमखण्डितंधिया गजोश्ट्रगोऽश्वाव्यजवस्तिकर्म" चरक–

वैदिक चार वर्णों में प्रमुख क्षत्रिय वर्ण पर राष्ट्र रक्षा का भार था अतः उनके सबसे करीब पशु थे गज एवं अश्व, पदाति सैन्य श्रेणी के साथ सैनिकों के समान ही गज–सेना एवं अश्व–सेना रहती थी, रथ सेना के रथों में भी अश्वों का ही प्रयोग किया जाता था अतः गज एवं अश्व का महत्त्व उन सैनिकों से किसी प्रकार कमतर नहीं आंका जा सकता था।

शुभ गज एवं अश्व किसी शासक के इन्द्र के समान ऐश्वर्यशाली बनाने में सहायक होते थे तो अशुभ किसी भी शासक के पतन का कारण भी बन सकते थे अतः पूर्व शास्त्रकारों ने इन पशुओं के जीवन की विशद् व्याख्या इनके शुभाशुभ लक्षण, आकार–प्रकार, आहार–विहार, गुण–दोष के आधार पर की है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालकाप्य, नकुल, जयदेव, सहदेव, भोजदेव, गण आदि अनेक प्राच्य विद्वान हुए हैं जिन्होंने गज एवं अश्वायुर्वेद पर प्रकाश डाला है।

उपरोक्त शास्त्र कई प्राच्य संस्थाओं में उपलब्ध है, हिन्दी, राजस्थानी में भी इस विषय के ग्रन्थ उपलब्ध है। इसी क्रम में राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में उपलब्ध ग्रन्थों की जानकारी सुधी पाठकों को दिये जाने का यह प्रयास है:–

गजायुर्वेद के ग्रन्थ

इन ग्रन्थों में हाथी से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी गई है। गजायुर्वेद का प्रमुख ग्रन्थ "गजायुर्वेद" नाम से हैं जिसके प्रणेता मुनि पालकाप्य हैं, गजस्वरूप, गजचिकित्सा, गज रो बखाण, गज रो बणाव, गज –धर्म तंत्र आदि ग्रन्थों में गज के शुभाशुभ लक्षण, रंग, आकार उनके रहने का स्थान, आयु, उनकी मृत्यु की संभावित ऋतु, पथ्यापथ्य, व्याधि उनके उपचार औषधियों के नाम, व्याधि–लक्षण, दांतो की कल्पना, ऋतु विशेष में होने वाले रोग, कारण व उनका निवारण, हाथियों का पराक्रम, आहार–विहांर, दुग्धपान, मधुपान, स्नेहपान, आदि की विधि व उनके प्रभाव का विस्तार से वर्णन किया गया है।

गजायुर्वेद संबधी उपलब्ध ग्रन्थों की सूची

क्र. सं.	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	समय	पत्र	पूर्णापूर्ण	स्थान
1.	3467	पालिकाप्य गजायुर्वेद	पालिकाप्य	18 वीं.श	200	पूर्ण	जोधपुर
2.	16610	"	"	17 वीं.श	176	अपूर्ण	जोधपुर
3.	4452/92	हाथियां रा बखाण	"	18 वीं.श	130	–	जोधपुर
4.	4924/9	"	"	1993 विं.	11 वां	–	जोधपुर
5.	1653/2	गज–चिकित्सा	"	18 वीं.श.	139	पूर्ण	उदयपुर
6.	1722/2	गज–चिकित्सा अमरसुबोधिनी टीका	"	18 वीं.श.	4(11–14)	पूर्ण	उदयपुर
7.	609/1	गजायुर्वेद	"	18 वीं.श.	67	पूर्ण	उदयपुर
8.	609/2	"	"	1758 विं.	101	पूर्ण	उदयपुर
9.	609/3	"	"	18 वीं.श.	90	पूर्ण	उदयपुर
10.	609/4	"	"	18 वीं.श.	134(230–303)	पूर्ण	उदयपुर
11.	610/1	"	"	1932 विं.	84	पूर्ण	उदयपुर
12.	610/2	"	"	"	82	पूर्ण	उदयपुर
13.	610/3	"	"	1757 विं.	51	पूर्ण	उदयपुर
14.	611/1	"	"	18 वीं.श.	122	पूर्ण	उदयपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15.	611/2	"	"	1673विं.	186	पूर्ण	उदयपुर
16.	612	" सटीक	"	18 वीं.श.	57	अपूर्ण	उदयपुर
17.	613	चतुश्क निर्णय	याग्निक	18 वीं.श.	42	अपूर्ण	उदयपुर
18.	615	"	"	1802 वि.	27	पूर्ण	उदयपुर
19.	616	बृहस्पति गज लक्षण	बृहस्पति	1810 विं.	57	पूर्ण	उदयपुर
20.	3463	गजपोथी बाब हाथियों के इलाज की		18 वीं.श. 19 वीं.श.	55	अपूर्ण	उदयपुर
21.	2601/1	गजवैद्यक भाशा मूल पालकाप्य		19 वीं.श.	97	अपूर्ण	उदयपुर
22.	2591	गजस्वरूप प्रकाश सचित्र (प्रथम स्थान) सूची पत्र सहित		1912विं.	151+98 164+75	पूर्ण	उदयपुर
23.	2733	गजस्वरूप प्रकाश "		1913–24 विं.	201	अपूर्ण	उदयपुर
24.	3934	हाथियों का इलाज		20 वीं.श.	46–62	पूर्ण	उदयपुर
25.	3938	हाथियों का इलाज		"	72	अपूर्ण	उदयपुर
26.	3904	हाथियों का इलाज		1866विं.	148	पूर्ण	उदयपुर
27.	3927/1	हाथियों का इलाज		20 वीं.श.	12	पूर्ण	उदयपुर
28.	3932	हाथियों का इलाज		1866विं.	85	पूर्ण	उदयपुर
29.	3934/1	हाथियों की उत्पत्ति व इलाज		1963विं.	26	पूर्ण	उदयपुर
30.	2471	हाथियों के नाम एवं औशध	बगसीरधि राम	1910विं.	98	पूर्ण	उदयपुर
31.	1293	गज–धर्म–तंत्र सिद्धायोग चिकित्सा	–	19 वीं.श.	91	अपूर्ण	बीकानेर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

32.	1294	सूक्ति रत्नाकार गजायुर्वेद	—	20 वीं.श.	4	अपूर्ण	बीकानेर
33.	2455	गज चिकित्सा	पालकाप्य मुनि	20 वीं.श.	75	अपूर्ण	अलवर
34.	2529	गज चिकित्सा (प्रथम स्थान)	"	1913 वि.	64	पूर्ण	अलवर
35.	2530	गज चिकित्सा(तृतीय स्थान)	"	1913 वि	80	पूर्ण	अलवर
36.	2531	गज चिकित्सा (चतुर्थ स्थान)	"	1913 वि	77	पूर्ण	अलवर
37.	3123	शालिहोत्र—गज परीक्षा	—	19 वीं.श.	97	अपूर्ण	कोटा
38.	6821	हाथी घोड़ों का इलाज	—	19 वीं.श.	71	अपूर्ण	कोटा
39.	6850	"	—	19 वीं.श.	78	अपूर्ण	कोटा

अश्वायुर्वेद से संबंधित ग्रन्थ

प्राचीन काल से वर्तमान तक घोड़ों के बिना मानव जीवन अपूर्ण लगता है। द्रुतगति के कारण पशुओं में घोड़ा शीर्ष स्थान पर रहा है। दुर्गम मार्ग में आवागमन का प्रमुख जरिया पहले घोड़ा ही था उसकी शक्ति की महत्ता इस बात से प्रकट होती है आज के मशीनरी युग में मशीनों की शक्ति तुलना उसके बल (हार्सपॉवर) से की जाती है, रामदेव जी, पाबू जी, महाराणा प्रताप के घोड़े इतिहास प्रसिद्ध है। घोड़ों पर साहित्य की रचना की गई है। मानव जीवन से इतना जुड़ाव होने के कारण ही अश्वायुर्वेद पर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ उनमें प्रमुख हैं नकुल कृत शालिहोत्र इस ग्रन्थ में व अन्य ग्रन्थों में घोड़े के प्रकार व गति, क्षैत्र विशेष के घोड़ों की पहचान विभिन्न प्रकार के रोग उनके लक्षण व निराकरण किये जाने का वर्णन मिलता हैं एक ही रोग के अनेक उपचार बताये गये है।

अश्वायुर्वेद ग्रन्थों की सूचीः—

क्र. सं.	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	समय	पत्र	पूर्णापूर्ण	स्थान
1.	3459	शालिहोत्र	नकुल	17वीं.श.	29	अपूर्ण	जोधपुर
2.	4777	"	"	20वीं.श.	60	पूर्ण	जोधपुर
3.	8631	"	"	19वीं.श.	16—17	पूर्ण	जोधपुर
4.	9176	"	जयदत्त	18वीं.श	33	अपूर्ण	जोधपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.	15846/3	अश्वशास्त्र	जयद्रथ	19वीं.श	128–171	पूर्ण	जोधपुर
6.	16606	अश्व चिकित्सा शास्त्र	जयदत्त	19 वीं.श	39	पूर्ण	जोधपुर
7.	16542	अश्व चिकित्सा (शालिहोत्र)	–	18 वीं.श	141	अपूर्ण	जोधपुर
8.	15846/1	अश्वसार	कान्हाप्रभु वैद्य	1849वि.	1–68	पूर्ण	जोधपुर
9.	16703	अश्वायुर्वेद शास्त्र	गण	18 वीं.श	244	अपूर्ण	जोधपुर
10.	12157	गुणरत्नमाला सस्तबक	–	20 वीं.श	32	पूर्ण	जोधपुर
11.	15846/2	शालिहोत्र	नकुलदेव	1850वि.	59(69–127)	पूर्ण	जोधपुर
12.	16314	शालिहोत्र सटीक	–	19 वीं.श	78	पूर्ण	जोधपुर
13.	18719	शालिहोत्र सटीक	–	18 वीं.श	39(81–119)	अपूर्ण	जोधपुर
14.	25843	अश्वपरीक्षण	–	19 वीं.श	1	पूर्ण	जोधपुर
15.	25574	शालिहोत्र	–	17 वीं.श	2(129–130)	पूर्ण	जोधपुर
16.	30066	शालिहोत्र भाषा टीका सहित	नकुल	19 वीं.श	21	पूर्ण	जोधपुर
17.	36140	अश्व चिकित्सा	–	1718वि.	20	अपूर्ण	जोधपुर
18.	24877/1	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	5	पूर्ण	जोधपुर
19.	38717	शालिहोत्र	–	1708वि.	23	अपूर्ण	जोधपुर
20.	39100	अश्व लक्षण	–	1965वि.	27	–	जोधपुर
21.	7745	अश्व परीक्षा	–	19 वीं.श	2	–	जोधपुर
22.	3573/8	घोड़ावर्णन तथा वर्षा वर्णन दूहा	–	19 वीं.श	30–31	–	जोधपुर
23.	4924/10	घोड़ा रा बखाण	–	1793वि.	11–12	–	जोधपुर
24.	4452/93	घोड़ा रा बणाव	–	18 वीं.श	20	–	जोधपुर
25.	2413	शालिहोत्र	–	1851वि.	8	–	जोधपुर
26.	3549/4	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	40–45	–	जोधपुर
27.	3550/6	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	41–50	–	जोधपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

28.	4777	शालिहोत्र	—	20 वीं.श	60	—	जोधपुर
29.	6826	शालिहोत्र	—	1915वि	105	—	जोधपुर
30.	7730	शालिहोत्र गुटका	—	1943वि	34	—	जोधपुर
31.	7767	शालिहोत्र सचित्र गुटका (118 चित्र)	—	19वीं.श	139	—	जोधपुर
32.	7837	शालिहोत्र सचित्र (48चित्र)	—	19 वीं.श	6—72	—	जोधपुर
33.	8343	शालिहोत्र	नकुल	1794वि	12	—	जोधपुर
34.	9724	शालिहोत्र	नकुल	1826विं	1—52	—	जोधपुर
35.	9336	शालिहोत्र टीका	नकुल	1822विं	39	—	जोधपुर
36.	8566	शालिहोत्र	नकुल	19 वीं.श	98	—	जोधपुर
37.	2413	शालिहोत्र	—	1815विं	8	—	जोधपुर
38.	3549/4	शालिहोत्र	—	19 वीं.श	40—45	—	जोधपुर
39.	3550/6	शालिहोत्र	नकुल	19 वीं.श	—	—	जोधपुर
40.	3459	शालिहोत्र	"	1817विं	22	अपूर्ण	जोधपुर
41.	2414	शालिहोत्र	"	19 वीं.श	347—368	अपूर्ण	जोधपुर
42.	9260/4	अश्व लक्षण	—	19 वीं.श	—	अपूर्ण	जोधपुर
43.	13512/3	शालिहोत्र	नकुल	1850विं.	108—126	पूर्ण	जोधपुर
44.	14276	शालिहोत्र	"	19 वीं.श	1—32	अपूर्ण	जोधपुर
45.	1594	शालिहोत्र भाषा	—	1910विं.	70—92	पूर्ण	जोधपुर
46.	1678	शालिहोत्र भाषा	—	1934विं.	1—134	पूर्ण	जोधपुर
47.	18145	शालिहोत्र भाषा	—	19 वीं.श	17	पूर्ण	जोधपुर
48.	11819/10	शालिहोत्र भाषा	नकुल	19 वीं.श	54—87	अपूर्ण	जोधपुर
49.	22485	शालिहोत्र भाषा—युसुफशानी व पं. हरनाथ	"	1891विं.	76	पूर्ण	जोधपुर
50.	24154/2	शालिहोत्र भाषा	नकुल	1929	4—53	अपूर्ण	जोधपुर
51.	25843	अश्वलक्षण	—	20 वीं.श	1	पूर्ण	जोधपुर
52.	26309	शालिहोत्र	नकुल	1931विं.	134—219	पूर्ण	जोधपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

53.	27991	शालिहोत्र		1887वि.	170–261	पूर्ण	जोधपुर
54.	26602	शालिहोत्र प्रदीपिका सचित्र	"	19 वीं.श	40	पूर्ण	जोधपुर
55.	25680	शालिहोत्र भाषा	–	1897विं.	70–83	पूर्ण	जोधपुर
56.	25125	शालिहोत्र भाषा	–	1867विं.	3–12	अपूर्ण	जोधपुर
57.	28010/7	सालहोत्र	–	19 वीं.श	10	पूर्ण	जोधपुर
58.	30066/4	सालोतर	नकुल	19 वीं.श	75–95	पूर्ण	जोधपुर
59.	34877/1	सालिहोत्र	–	1866विं.	1–3	अपूर्ण	जोधपुर
60.	18719/10	शालिहोत्र एवं (माहिली विगत) शालिहोत्र	–	18 वीं.श	77–119	अपूर्ण	जोधपुर
61.	2370	शालिहोत्र	नकुल	20 वीं.श	7(11–17)	अपूर्ण	जयपुर
62.	10895	शालिहोत्र	"	19 वीं.श	31	अपूर्ण	जयपुर
63.	11856	शालिहोत्र सटीक	"	19 वीं.श	35	पूर्ण	जयपुर
64.	11863	शालिहोत्र	"	1791वि.	61	पूर्ण	जयपुर
65.	4455	घोड़ा चोली गोली विधि	–	20 वीं.श	4	पूर्ण	जयपुर
66.	2370/1	शालिहोत्र	–	20 वीं.श	1–10	अपूर्ण	जयपुर
67.	4252	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	49	अपूर्ण	जयपुर
68.	7884	शालिहोत्र भाषा टीका	नकुल	1833	72–94	अपूर्ण	जयपुर
69.	11819/10	शालिहोत्र	"	19 वीं.श	54–87	अपूर्ण	जयपुर
70.	16453/1	अश्व–शालिहोत्र	भाषा हररूप पुरोहित	1919विं.	1–59	पूर्ण	जयपुर
71.	16159	शालिहोत्र भाषा	–	19 वीं.श	66–126	अपूर्ण	जयपुर
72.	2952	अश्वदर्पण	विष्णुदास	19 वीं.श	77	पूर्ण	उदयपुर
73.	1453	अश्वलक्षण	–	1929वि.	163	पूर्ण	उदयपुर
74.	1524	अश्ववैद्यकसटीक	–	1962वि.	322	अपूर्ण	उदयपुर
75.	417	अश्वायुर्वेद (शालिहोत्र)	नकुल	1727वि.	276	पूर्ण	उदयपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

76.	618	अश्व चिकित्सा सटीक	नकुल	1735वि.	70	पूर्ण	उदयपुर
77.	619	अश्व चिकित्सा सटीक	"	18 वीं.श	20	पूर्ण	उदयपुर
78.	3065	योगमाला भाषा टीका सहित	नकुल	19 वीं.श	45	अपूर्ण	उदयपुर
79.	1432	शालिहोत्र शास्त्र	–	1552वि.	160 (153+7)	अपूर्ण	उदयपुर
80.	1492	शालिहोत्र	–	1974वि.	105	अपूर्ण	उदयपुर
81.	1499	शालिहोत्र संहिता	–	19 वीं.श	150	अपूर्ण	उदयपुर
82.	614	सिद्धियोग चिकित्सा	–	18 वीं.श	66	पूर्ण	उदयपुर
83.	5812	शालिहोत्र	नकुल	18 वीं.श	1–21	अपूर्ण	उदयपुर
84.	4293/4	शालिहोत्र सटीक	"	17 वीं.श	14–17	अपूर्ण	उदयपुर
85.	4174/5	अश्व चिकित्सा	–	19 वीं.श	56–62	पूर्ण	उदयपुर
86.	4249	अश्व चिकित्सा	–	1915वि.	2–31	अपूर्ण	उदयपुर
87.	4253/5	याददाश्त घोड़ा मसावा री?	–	19 वीं.	19–21	अपूर्ण	उदयपुर
88.	4213/16	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	103–105	पूर्ण	उदयपुर
89.	2631	अवश चिकित्सा भाशा	–	20 वीं.श	173–217	पूर्ण	उदयपुर
90.	2094	अश्व लक्षण	–	19 वीं.श	8	पूर्ण	उदयपुर
91.	2650	अश्व लक्षण सचित्र	विष्णुदास	1902विं.	187	पूर्ण	उदयपुर
92.	2645	अश्ववल्गा वर्णन	–	20 वीं.श	12	अपूर्ण	उदयपुर
93.	2340	अश्ववल्गा वर्णन	–	20 वीं.श	172	अपूर्ण	उदयपुर
94.	2943	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	49	अपूर्ण	उदयपुर
95.	1961	शालिहोत्र	–	18 वीं.श	50–51	पूर्ण	उदयपुर
96.	2674	शालिहोत्र	–	1941विं.	22	पूर्ण	उदयपुर
97.	2601/4	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	113–121	पूर्ण	उदयपुर
98.	3784	शालिहोत्र	भाषा	1849विं.	62	पूर्ण	उदयपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

		गुणसागर					
99.	2974/1	शालिहोत्र	भाषा सुकविनिधान	19 वीं.श	72	अपूर्ण	उदयपुर
100.	2237	शालिहोत्र	–	19 वीं.श	137	पूर्ण	उदयपुर
101.	2207	शालिहोत्र	–	1823विं.	108–156	पूर्ण	उदयपुर
102.	2107	शालिहोत्र	–	1887विं.	69	पूर्ण	उदयपुर
103.	2984/8	शालिहोत्र	–	20 वीं.श	4	पूर्ण	उदयपुर
104.	4558	अश्व परीक्षा व सांति	–	20 वीं.श	37	अपूर्ण	चित्तौड़गढ़
105.	5410	गुणरत्नमाला	–	1937विं.	50	अपूर्ण	चित्तौड़गढ़
106.	4479	योग रत्न माला लघु विवृत्ति सहित	–	18 वीं.श	34	पूर्ण	चित्तौड़गढ़
107.	2502	अश्वायुर्वेद	जयदत्त	17 वीं.श	66	पूर्ण	अलवर
108.	2503	अश्वायुर्वेद	"	1913विं.	92	पूर्ण	अलवर
109.	4601	अश्वायुर्वेद	"	20 वीं.श	20	अपूर्ण	अलवर
110.	4838/2	शालिहोत्र	नकुल	1813विं.	41	पूर्ण	अलवर
111.	2429	सार समुच्च (शालिहोत्र)	बिल्हण	20 वीं.श	93	पूर्ण	अलवर
112.	5495	सार समुच्च (शालिहोत्र)	"	20 वीं.श	4	अपूर्ण	अलवर
113.	2430	सिद्धि–योग संग्रह (अश्व प्रशंसा)	गण	1900विं.	5	पूर्ण	अलवर
114.	4836	शालिहोत्र सटीक	नकुल	20 वीं.श	95	पूर्ण	अलवर
115.	4837	शालिहोत्र	भाषा निधान कवि	20 वीं.श	32	पूर्ण	अलवर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

116.	4839	शालिहोत्र भाषा टीका	—	19 वीं.श	94	पूर्ण	अलवर
117.	4840	शालिहोत्र भाषा टीका	म. जसवंत सिंह	1909विं.	56	पूर्ण	अलवर
118.	4841	शालिहोत्र भाषा टीका (अश्वविनोद)	चेतनचन्द्र (ताराचन्द्र)	19 वीं.श	38	पूर्ण	अलवर
119.	4842/1	शालिहोत्र भाषा दीपक	भगवतपुरी	1911विं.	1–72	पूर्ण	अलवर
120.	4842/2	शालिहोत्र भाषा दीपक	"	1911विं.	73–112	पूर्ण	अलवर
121.	4843	शालिहोत्र भाषा दीपक	गोवर्धन माथुर	20 वीं.श	31	पूर्ण	अलवर
122.	4844	शालिहोत्र सटीक	नकुल	20 वीं.श	115	अपूर्ण	अलवर
123.	4845	शालिहोत्र भाषा	चेतनचन्द्र (ताराचन्द्र)	1874वि.	98	पूर्ण	अलवर
124.	3927	अश्व चिकित्सा	—	1865वि.	27	पूर्ण	कोटा
125.	3120	अश्व चिकित्सा	नकुल	19 वीं.श	62	पूर्ण	कोटा
126.	3121	अश्व निरंजन	—	19 वीं.श	12	पूर्ण	कोटा
127.	3124	शालिहोत्र	नकुल	19 वीं.श	12	पूर्ण	कोटा
128.	3125	शालिहोत्र	"	19 वीं.श	137	पूर्ण	कोटा
129.	3126	शालिहोत्र	"	1799वि.	48	पूर्ण	कोंटा
130.	6336	शालिहोत्र	नकुल	1932विं.	265	पूर्ण	कोटा
131.	6826	शालिहोत्र	"	18 वीं.श	47	पूर्ण	कोटा
132.	6849	शालिहोत्र	"	1863विं.	144	पूर्ण	कोटा
133	5020	शालिहोत्र	जयदत्त	1905विं.	62	पूर्ण	बीकानेर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

.							
134.	5021	शालिहोत्र	नकुल	19 वीं.श	6	अपूर्ण	बीकानेर
135.	27765	अश्व लक्षण	—	1923विं.	1	पूर्ण	बीकानेर
136.	1300	घोड़ों की नाड़ी परीक्षा	—	20 वीं.श	10	अपूर्ण	बीकानेर
137.	5862	शालिहोत्र	चेतनचन्द्र	1904विं.	34	पूर्ण	बीकानेर
138.	6925	शालिहोत्र	—	1962विं.	29	पूर्ण	बीकानेर
139.	14615	शालिहोत्र	—	18 वीं.श	3	पूर्ण	बीकानेर
140.	17511	शालिहोत्र भाषार्थ	—	1912वि	16	पूर्ण	बीकानेर
141.	17512	शालिहोत्र	—	1912विं.	6	पूर्ण	बीकानेर
142.	556	घोड़ों की औषधि	—	19 वीं.श	3	अपूर्ण	भरतपुर
143.	595	शालिहोत्र सार संग्रह टीका	—	19 वीं.श	68	अपूर्ण	भरतपुर

इस प्रकार उक्त सूची से ज्ञात होता है कि हमारे शास्त्रकारों ने हाथी एवं घोड़ों के जीवन व रोगों से संबंधित कई ग्रन्थों का प्रणयन किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निरोधात्मक ग्रन्थ संरक्षण

पृष्ठ 115 से 121

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5.

निरोधात्मक ग्रन्थ संरक्षण

डॉ. अनिल कुमार गुप्ता
केमिस्ट
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ और पाण्डुलिपियाँ विरासत में प्राप्त ज्ञान की वह मूल्य निधि है जो जीवन की शैली, सांस्कृतिक सभ्यता और ऐतिहासिक श्रृंखला को समृद्धि प्रदान करती है। यह निधि देश के कई संग्रहालयों, ग्रन्थागारों, धार्मिक संस्थाओं और व्यक्ति विशेष के पास संगृहीत हैं तथा इसका एक महत्त्वपूर्ण भाग अज्ञात, अनुपलब्ध व खण्ड–खण्ड में बिखरा है। इस संदर्भ में पाण्डुलिपि के रूप में ज्ञान के भण्डार का संरक्षण कठिन चुनौती है। यद्यपि बड़े संग्रहालयों, ग्रन्थागारों में संरक्षण की एक सुनिश्चित प्रक्रिया अपनायी जाती है, किन्तु निजी संग्रह में संगृहित पाण्डुलिपियों का रख–रखाव भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कहा गया है बचाव किसी मर्ज के उपचार के कई गुणा बेहतर विकल्प है, इस दृष्टि से ग्रन्थों का रख–रखाव हेतु प्रारम्भिक सामान्य आवश्यक जानकारी जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास विभाग द्वारा किया जा रहा है। सीमित वित्तीय संसाधनों द्वारा भी यदि कुछ तथ्यों का ध्यान रखा जावे तो इस अमूल्य सम्पदा को विनिष्ट व जीर्ण–शीर्ण होने से बचा जा सकता है।

कागज की मूल संरचना

कागज मिश्रित लुगदी के रूप में तैयार की जाती है। यह मिश्रित लुगदी कपड़ों के टुकड़े, लकड़ी बांस सरकंडे की घास, फ्लेक्स आदि के द्वारा मशीन की सहायता से या हाथ की विधि से तैयार की जाती है। जिसका मौलिक तत्व सेल्यूलोज होता है। इसके रेशे लचीलापन, नमी सोखने की गुणता से युक्त होते है। अधिकांशतः इन रेशों में सेल्यूलोज लिगनिन और गोंद होता है। इसी के साथ कागज बनाते समय विभिन्न क्षारीय और अम्लीय गुण रसायनों का भी प्रयोग किया जाता है। मुख्यतः अम्लीय रसायन और पदार्थ जैसे लिगनिन, जो बांस और लकड़ी से प्राप्त रेशे, इत्यादि कागज बनाने में हानिकारक सिद्ध होते है उदाहरण के तौर पर सस्ती कीमत का कागज समाचार पत्र, बांसी, कागज, जिल्दसाजी का कागज तो एक वर्ष उपरान्त ही भूरे और हल्के पीले रंग में परिवर्तित हो जाते है। वहीं दूसरी ओर हाथ की विधि से बना सेल्यूलोज के रेशों का कागज अधिक मजबूत, टिकाऊ और लचीलापन लिये होता है। आज यही वजह है कि सौ वर्ष हाथ की बनी पांडुलिपि अच्छी हालत में मिलती है जबकि अभी के बने कागज शीघ्र खराब हो जाते है।

नष्ट होने के कारण –

1. दीमक, सिल्वर फिश, तिलचट्टे, बुक लाईरास आदि कीड़े पाण्डुलिपियों और ग्रन्थों को सर्वाधिक हानि पहुँचाते है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जिल्दसाजी में काम आने वाली चीजे जैसे गत्ता, धागा, कपड़ा आदि भी शास्त्रों के लिए हानिकारक है।
3. ऊँची आर्द्रता, अन्धकार तथा बासी वातावरण में फफूंद उग जाता है। एयर कण्डीश्नर को बार–बार चलाने तथा रोकने से तापमान तथा आर्द्रता का उतार–चढाव होता है जिससे पाण्डुलिपियाँ दुर्बल होकर नंष्ट हो जाती है।
4. पन्नों पर बने चित्रों में अम्लीय रंग और स्याही भी कागज को गलाकर कमजोर और नष्ट कर देती है।
5. धूप में अनियंत्रित तरीके से सुखाने से ताड़पत्र तथा काठ के पठ्ठों के बीच कसकर न रखने के कारण यह टूट जाते है।
6. पाठकों तथा अधिकारियों की लापरवाही से पत्र पर निशान व दाग पड़ जाते है।
7. अधिक तापमान होने के कागज पीला और भूरा हो जाता है और ताड़पत्र अपनी नमी खो देते है।
8. प्राकृतिक विपदाएँ जैसे आग, बाढ़ आदि से भी कुछ ही क्षणों में भारी मात्रा में शास्त्रों को नुकसान पहुँच सकता है।
9. मनुष्य द्वारा क्षति–जानबूझ कर कलाकृति को नष्ट करने वाले लोग, चोर, दायित्वहीन पाठक, असावधान कर्मचारी, उदासीन जनसाधारण एवं अधिकारीगण– यह सब इस सांस्कृतिक धरोहर को विघ्वंस की ओर ले जाते है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

रक्षा कैसे करें। – CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1. हाल ही में कीट भुक्त पाण्डुलिपियों को संगृहीत पोथियों के साथ न रखें। फफूंद और कीड़े होने की अवस्था में यह संग्रह में फैल जायेंगे। उन्हें अच्छी जाँच कर और ब्रुश या सूती कपड़े से साफ करके ही संग्रह में रखें।
2. खराब सूक्ष्म छेदों में से बुरादा निकलने वाली जिल्द या काठ के पठ्ठों को कीट रहित करें अथवा बदल दें।
3. भूरे और पारदर्शक टेप, बासी कागज की पट्टी या चेपी लगाकर पाण्डुलिपियों की मरम्मत न करें। साथ ही लोहे की पिनों का उपयोग न करें क्योंकि यह कुछ पश्चात् जंग लगा देती है। फटे हुए कागज को जोड़ने के लिये अच्छी किस्म का कागज या टिशु की चिपकी मैदे की लेई बनाकर लगायी जा सकती है।
4. गोंद, सरेस आदि के प्रयोग कागज में सिलवटे पैदा होती है। साथ ही अत्यधिक मजबूत होने के कारण चिपके स्थान को छोड़कर कागज अन्य स्थान से फट जाता है। अतः इसका प्रयोग न करें
5. पाण्डुलिपियों को अनुशासित रूप में बंद अलमारी या बक्से में रखें।
6. पाण्डुलिपि को मोटे सूती कपड़े में लपेटकर रखें।
7. महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को छोटे, सबल बक्से में रखें जिन्हें आपातकालीन स्थिति उभरने पर पूर्व निश्चित सुरक्षित स्थान पर आसानी से ले जाया जा सके।
8. पढ़ते समय ध्यानपूर्वक पलटे।
9. पत्रों पर कलम से निशान न डालें।
10. पढ़ने के लिये पाठकों को मौलिक पाण्डुलिपियों के बदले उसकी प्रतिलिपि या माइक्रोफिल्म देनी चाहिये।

धूल तथा प्रदुषण से पाण्डुलिपियों को कैसे बचायें ?

1. संग्रह को धूल भरे तथा प्रदुषित स्थान में स्थित न करें।
2. परिवेष का धूल रहित करने के लिए, भवन के चारों ओर घास तथा वृक्ष लगायें।
3. महत्त्वपूर्ण संग्रह भवन के अन्दरूनी कक्षों में स्थित करें।
4. खिड़कियाँ बंद रखें
5. जूतों से मिट्टी निकालने के लिए द्वार पर पायदान रखें जिन्हें नियमित साफ भी करा जाय।
6. पाण्डुलिपियों को अलमारी अथवा बक्सों में रखें।
7. कमरे तथा "फर्नीचर" को "वैक्युम क्लीनर" अथवा थोड़े से गीले कपड़े से साफ करें।
8. सावधान। "वैक्युम क्लीनर" से कंही पाण्डुलिपियों को गलती से नष्ट न कर दें।
9. झाडू लगाएँ, तो सावधानी से, तथा धीरे से ताकि धूल न उड़े।
10. दर्शक तथा प्रदर्शित पाण्डुलिपियों के बीच कुछ दूरी रखे।
11. द्वारा पर "एयर कर्टेन" भी लगा सकते है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

12. "एयर कंडीशनर" में हवा के प्रवेश का स्थान ऊँचाई तथा भवन के सबसे कम प्रदूषित हिस्से में स्थित होना चाहिए।

13. ताकि यह हवा धूल तथा "सल्फर डाइऑक्साइड" रहित प्रवेश करें, ए.सी. में प्रवेश करती हवा को पानी के फ़व्वारे से धो दें।

14. जब पाण्डुलिपियाँ पढ़ी या प्रदर्शित नहीं की जा रही हों, तो उन्हें कपड़े से ढ़क दें।

पाण्डुलिपियों को प्रकाश से कैसे बचायें –

1. प्रदर्शन पेटिका के अन्दर स्थित बल्ब, पेटिका के वायुमण्डल को शुष्क करके, प्रदर्शित पत्रों को भंगुर कर देते हैं। इन बल्बों को निकाल दीजिए।
2. पाण्डुलिपियों को प्रकाश के 40 'लक्स' से कम प्रखर्तों में प्रदर्शित करें तथा इस प्रखर्ता को नापने के लिए 'लक्स मीटर' का प्रयोग करें।
3. यदि प्रकाश की प्रखर्ता 40 लक्स से अधिक हों, अतिरिक्त बत्तियां बुझ दें या डिम्बर स्विच से हल्की कर दें।
4. प्रदर्शित पाण्डुलिपि एवं प्रकाश के स्त्रोत के बीच की दूरी बढ़ाने से भी प्रकाश की प्रखर्ता कम हो जाती है।
5. सूर्य प्रकाश एवं ट्यूबलाईट की अल्ट्रावायोलिट किरणें पत्रों को नष्ट कर देती है। इसलिए पत्रों को ढक दें तथा खिड़कियों के पर्दे लगाएँ।
6. इन हानिकारक किरणों को रोकने के लिये खिड़की के शीशे एवं ट्यूबलाईट पर अल्ट्रावायोलिट फिल्टर लगा दें।
7. कमरे की दीवालों को अल्ट्रावायोलिट किरणों को सीखने वाले जिंक ऑक्साईड या टाइटेनियम डाईकॉक्साईड से रंग करें।
8. जब दर्शक न हों, तब प्रदर्शित ताड़पत्रों को कपड़े से ढ़क दें या फिर बत्तियाँ बुझा दें।

पाण्डुलिपियों को कीटों से कैसे बचायें –

1. पाण्डुलिपियों को बंद अथवा अलमारी में रखें।
2. पाण्डुलिपियों के साथ कीट विकर्षक तत्व रखें।
3. प्राप्त पाण्डुलिपियों में कीड़े के अण्डे अथवा डिम्भ (लार्वा) हो सकते है, जो संग्रह के अन्य पाण्डुलिपियों में फैलकर उनको भी नश्ट कर सकते है। अतः कीटग्रस्त एवं हाल में प्राप्त पाण्डुलिपियों को अपने संग्रह से दूर रखें, और उनकी जाँच करें।
4. लकड़ी के पट्ठे, जिनके बीच में ताड़पत्रों में रखा जाता है, उनमें भी कीड़े विद्यमान हो सकते है। सावधान रहे।
5. भण्डारकक्ष तथा प्रदर्शन कक्ष में भोजन न करें क्योंकि खाद्य पदार्थों से कीड़े–मकोड़े एवं चूहे आकर्शित होते है।
6. कपड़े में पाण्डुलिपि को लपेटने से पहले, कपड़े को अच्छी तरह धोकर उसका मांड निकाल दें अन्यथा कीड़े आकर्षित हो जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

7. संग्रह का नियमित निरीक्षण करें। कहीं लकड़ी का बुरादा दिखे, जो कीटाक्रमण का प्रतीक है, तो तुरन्त अधिकारीगण, को बताएँ, कीटग्रस्त पाण्डुलिपि को संग्रह से अलग करें तथा उसका उपचार करायें।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8. संग्रह के साथ कीटनाशक कागज रखें।

9. खिड़की में जाली लगायें।

10. परिवेश स्वच्छ रखें।

11. पेटिका व अलमारी को दीवार से अलग रखें, तथा जमीन पर कीटनाशक पदार्थ रखें।

12. रासायनिक धूमन करने से कीड़े मर जाते है, परन्तु अगर सावधानी न बर्ते, तो पाण्डुलिपि में कीटाक्रमण पुनः हो जाएगा।

13. भवन निर्माण के समय ही भवन को दीमक अभेद्य बनायें।

14. अपनी परेशानियों की विशेषज्ञों से चर्चा करें।

पाण्डुलिपियों को आपेक्षित आर्द्रता एवं तापमान से बचाव –

1. तापमान एवं आपेक्षित आर्द्रता के उतार–चढाव से पाण्डुलिपियों को मोड रहित मोटे सूती कपड़े में लपेटे एवं अन्दरूनी कक्ष में रखें। मोटे सूती कपड़े (बफर) आर्द्रता की धीरे–धीरे सोखते तथा छोड़ते है, जिसमें अनियंत्रित उतार–चढाव के हानिकारक प्रभाव कम हो जाते है।

2. एयर कंडीशनर अगर प्रयोग करें, तो उसे लगातार दिन के 24 घण्टे तथा वर्श के 365 दिन चालू रखें। अगर यह सम्भव नहीं, तो इस यंत्र को संग्रह कक्ष या भंडारकक्ष में सीपित न करें। एयर कंडीशनर को बार–बार ऑन तथा ऑफ करने से तापमान तथा आर्द्रता में तीर्व उतार–चढाव होता है, जिससे संग्रहित पाण्डुलिपियाँ बहुत शीघ्र ही नश्ट हो जाती है।

3. प्रतिदिन तापमान तथा आपेक्षित आर्द्रता को ड्राई एण्ड वेट थर्मामीटर से एक वर्श तक के ऐसे रिकॉर्ड उतार–चढाव की गति को समझने तथा सुधारात्मक कदम लेने के लिए सहायक होते है।

4. प्रदर्शन पेटिका में सिलिका जेल रखने से उच्च आपेक्षित आर्द्रता की मात्रा को कम कर सकते है।

5. यदि आपेक्षित आर्द्रता का स्तर 45 से कम हो, तो पाण्डुलिपियों के शुश्क तथा भंगुर हो जाने का भय है।

6. पाण्डुलिपि संग्रह कक्ष में अच्छा वायुसंचार अनिवार्य है। अधिक आर्द्रता, अंधकार एवं स्थिर हवा में फफूंद का जन्म होता है।

7. चित्रित पाण्डुलिपि के पत्रों के बीच टीशू पेपर रखें।

8. दर्शकों के गमनागमन को नियंत्रित करें।

9. संग्रह के आसपास पानी को जमा न होने दें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

10. यदि पाण्डुलिपि गीली हो जाए, तो धूप में न सूखाएँ। कमरे में, पंखे की हल्की पवन में सुखाएँ।

पाण्डुलिपियों का उपयुक्त भंडारण –

1. संग्रह कक्ष, स्वच्छ, प्रकाशित तथा हवादार होना चाहिए।
2. पाण्डुलिपियों को बक्सों में सुव्यवस्थित ढंग से रखें।
3. अलमारी का सबसे निचला तख्ता भूमि से 6–8 इंच ऊपर होना चाहिए।
4. दीवाल तथा अलमारी के बीच खाली स्थान छोडें।
5. पाण्डुलिपियों को नित्य हवा लगाए तथा उनकी जांच करे।
6. भंडार में पाण्डुलिपियों को आसानी से ढूंढने के लिए, कौन सी पाण्डुलिपि किस स्थान पर रखी है, इसको लिखकर के रखें।
7. अग्निशामक यंत्र एवं लाईट फ्यूज बॉक्स को पाण्डुलिपि संग्रह कक्ष के बाहर स्थापित करना चाहिए।
8. दर्शकों के गमनागमन पर नियंत्रण रखें।
9. पाण्डुलिपियों के साथ रंग, रासायनिक पदार्थ एवं कोई ज्वलनशील वस्तु न रखें।
10. संग्रह कक्ष में धुम्रपान वर्जित करें।
11. पाण्डुलिपियों के लिए ऐसी पेटिका का निर्माण करें जिसमें भंडारण तथा प्रदर्शन एक साथ हो सके।
12. पाण्डुलिपि को समतल पृष्ठ का सहारा देकर प्रदर्शित करना चाहिए।
13. प्रकाश, धूल, तापमान तथा अपेक्षित आर्द्रता के नियंत्रण के लिए पुर्वोल्लेखित कार्यविधियों का पालन करें।
14. भंडार एवं प्रदर्शन कक्ष में रखी पाण्डुलिपियों को नियमित भवन से परस्पर अदला–बदली करें।

क्या करें ?

1. ग्रन्थों का संग्रहण नमी, सीलनयुक्त एवं अधिक तापमान वाले भवन में नहीं करें।
2. ग्रन्थों पर सीधे प्रकाश की किरण न पड़ें।
3. ग्रन्थों के घोर अन्धकार युक्त कक्ष में नहीं रखें।
4. संग्रहण धूल, मिट्टी वाले स्थान पर नहीं करें।
5. एक साथ ग्रन्थों का ढेर बनाकर एक के ऊपर एक नहीं रखें।
6. पाण्डुलिपि सफाई के लिये झाड़न का प्रयोग न करें।
7. लोहे के पिन, सस्ते व रंगीन गोंद का प्रयोग न करें।
8. पाण्डुलिपि मरम्मत हेतु भूरे व पारदर्शी टेप, बांसी कागज की पट्टी व चेपी का प्रयोग न करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

9. संग्रहण स्थल के निकट नाली, शौचालय, पानी की टंकी, नल आदि का प्रावधान नहीं करें।

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. ग्रन्थों को संग्रहण भवन की दीवारों से सटा कर नहीं रखें।

11. संग्रहण स्थल पर खाने–पीने की कोई सामग्री नहीं ले जावें।

क्या करें :–

1. संग्रहण, नमी – सीलन मुक्त, हवादार व सामान्य तापमान के कक्ष में करें।

2. फटे हुए पाण्डुलिपि के कागज को जोड़ने हेतु महीन कागज के टिश्यू पेपर को मैदे की लेई के साथ प्रयोग करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभागीय प्रकाशनों की सूची

पृष्ठ 122 से 132

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभागीय प्रकाशनों की सूची

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

पी.डब्ल्यू.डी. रोड़, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ–माला

प्रकाशन–सूची (वर्ष 2010)

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	सम्पादक	मूल्य
1.	त्रिपुराभारतीलघुस्तव सटीक	मुनि जिनविजय	40.00
2.	कर्णामृतप्रपा	मुनि जिनविजय	10.00
3.	बालशिक्षा–व्याकरण	मुनि जिनविजय	40.00
4.	प्रमाणमंजरी सटीक	पट्टाभिराम शास्त्री	अनुपलब्ध
5.	यन्त्रराजचना	केदारनाथ ज्योतिर्विद्	30.00
6.	महर्षिकुलवैभव	गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी	77.00
7.	वृत्तिदीपिका	पुरूषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी	10.00
8.	राजविनोद महाकाव्य	गोपालनारायण बहुरा	अनुपलब्ध
9.	तर्कसंग्रह फक्किका	डा. जितेन्द्र जेटली	46.00
10	प्राकृतानन्द	मुनि जिनविजय	20.00
11.	कान्हड़देप्रबन्ध	प्रो.के.बी. व्यास	111.00
12.	उक्ति रत्नाकर	मुनि जिनविजय	25.00
13.	क्यामखां रासा सानुवाद	डा. दशरथ शर्मा, अगरचन्द भंवरलाल नाहटा अनु. डा. रतनलाल मिश्र	अनुपलब्ध
14.	कूर्मवंशयशप्रकाश (लावारासा)	महताबचन्द खारेड़	56.00
15.	श्रृंगारहारावली	डा. प्रियबाला शाह	अनुपलब्ध
16.	कृष्णगीति	डा. प्रियबाला शाह	10.00
17.	नृत्तसंग्रह	डा. प्रियबाला शाह	10.00
18.	कारकसम्बन्धोद्योत	एच.पी. शास्त्री	अनुपलब्ध
19.	शब्दरत्नप्रदीप	एच.पी. शास्त्री	10.00
20.	चक्रपाणिविजयमहाकाव्य	प्रो. के.के. शास्त्री	25.00
21.	बांकीदास री ख्यात	प्रो. नरोत्तमदास स्वामी	अनुपलब्ध
22.	दुर्गापुष्पांजलि	गङ्गाधर द्विवेदी	40.00
23.	दशकण्ठवध	गङ्गाधर द्विवेदी	अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

24.	नृत्यरत्नकोश (भाग–1)	प्रो. आर.सी. पारीख एवं डा. प्रियबाला शाह	50.00
25.	नृत्यरत्नकोश (भाग–2)	डा. प्रियबाला शाह	45.00
26.	कर्णकुतूहल	गोपालनारायण बहुरा	10.00
27.	राजस्थानी साहित्य संग्रह (भाग–1)	प्रो.. नरोत्तमदास स्वामी	43.00
28.	वासवदत्ता कथा	डा. जे. एम. शुक्ल	30.00
29.	ईश्वरविलासमहाकाव्य	भट्ट मथुरानाथ शास्त्री	अनुपलब्ध
30.	पद्यमुक्तावली सटीक	भट्ट मथुरानाथ शास्त्री	35.00
31.	राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज	अनु. बी.डी. त्रिवेदी	15.00
32.	जुगलविलास	रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत	20.00
33.	वीरवांण	रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत	72.00
34.	कवीन्द्रकल्पलता	मुनि जिनविजय	15.00
35.	गोरा–बादल पदि्मनी चउपई	डॉ. उदयसिंह भटनागर	56.00
36.	बसन्तविलास–फागु	प्रो. एम.सी. मोदी	35.00
37.	स्वयंभूच्छन्द	प्रो. हरि दामोदर वेल्हणकर	15.00
38.	पदार्थरत्नमंजूषा	मुनि जिनविजय	अनुपलब्ध
39.	चान्द्रव्याकरण	पं. बेचरदास जीवराज डोसी	50.00
40.	गोरा–बादल–चरित्र	मुनि जिनविजय	75.00
41.	रसदीर्घिका	गोपालनारायण बहुरा	20.00
42.	हस्तलिखित ग्रन्थ–सूची भाग–1		30.00
43.	भगतमाल (ब्रह्मदास कृत)	उदयराज उज्जवल	39.00
44.	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग–1		37.50
45.	वस्तुरत्नकोष	डा. प्रियबाला शाह	20.00
46.	काव्यप्रकाश (प्रथम भाग)	प्रो. रसिकलाल सी. पारीख	70.00
47.	काव्यप्रकाश (द्वितीय भाग)	प्रो. रसिकलाल सी. पारीख	40.00
48.	मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग–1	बद्रीप्रसाद साकरिया	145.00
49.	मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग–2	बद्रीप्रसाद साकरिया	210.00
50.	रघुवरजसप्रकाश	सीताराम लालस	75.00
51.	हस्तलिखित ग्रन्थ–सूची, भाग 2	गोपालनारायण बहुरा	12.00
52.	राजस्थानी साहित्य–संग्रह, भाग 2	डा. पी.एल. मेनारिया	अनुपलब्ध
53.	राजस्थानी साहित्य–संग्रह, भाग 3	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	65.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

54.	श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्र	गोपालनारायण बहुरा	47.00
55.	विद्याभूषणग्रन्थ सूची	गोपालनारायण बहुरा एवं लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	10.00
56.	सूरजप्रकाश, भाग 1	सीताराम लालस	75.00
57.	सूरजप्रकाश, भाग 2	सीताराम लालस	90.00
58.	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग 2	पुरुषोतमलाल मेनारिया	15.00
59.	महर्षिकुलवैभव (मूल)	प्रद्युम्न शर्मा	30.00
60.	रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ–संग्रह	अगरचन्द नाहटा एवं भंवरलाल नाहटा	67.00
61.	वृत्तजातिसमुच्चय	हरि दामोदर वेल्हणकर	35.00
62.	कविदर्पण	हरि दामोदर वेल्हणकर	40.00
63.	नेहतरंग	डा. रामप्रसाद दाधीच	30.00
64.	एकाक्षरनामकोश–संग्रह	मुनि रमणीकविजय	60.00
65.	हमीरमहाकाव्य	मुनि जिनविजय	अनुपलब्ध
66.	मत्स्यप्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन	डा. मोतीलाल गुप्त	60.00
67.	सूरजप्रकाश, भाग 3	सीताराम लालस	95.00
68.	समदर्शी आचार्य हरिभद्र	अनु. शान्तिलाल जैन	25.00
69.	वृत्तमुक्तावली	भट्ट मथुरानाथ शास्त्री	20.00
70.	इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध	डॉ. दशरथ शर्मा	अनुपलब्ध
71.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 1	मुनि जिनविजय	37.50
72.	मुहंता नैणसी री ख्यात, भाग 3	बद्रीप्रसाद साकरिया	अनुपलब्ध
73.	बुद्धिविलास	डा. पद्मधर पाठक	40.00
74.	रूक्मिणी–हरण	डा. पी.एल. मेनारिया	35.00
75.	प्रतापरासो	डा. मोतीलाल गुप्त	60.00
76.	सन्त कवि रज्जब	डा. ब्रजलाल वर्मा	अनुपलब्ध
77.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 2 ए	मुनि जिनविजय	34.50
78.	भक्तमाल (राघोदास कृत)	अगरचन्द नाहटा	70.00
79.	वृत्तमौक्तिक सटीक	म. विनयसागर	125.00
80.	पश्चिमी भारत की यात्रा (हिन्दी–अनुवाद)	गोपालनारायण बहुरा	182.00
81.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 2 बी	मुनि जिनविजय	36.50
82.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 2 सी	मुनि जिनविजय	21.00
83.	बिन्हैरासौ	सौभाग्यसिंह शेखावत	65.00
84.	सोढ़ायण	शक्तिदान कविया	65.00
85.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 3 ए	मुनि जिनविजय	38.50
86.	मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग 4	बद्रीप्रसाद साकरिया	67.00
87.	मधुमालती कथा सचित्र	डा. फतहसिंह	55.00
88.	आगमरंहस्य–(पूर्वार्द्ध)	गंगाधर द्विवेदी	अनुपलब्ध
89.	शकुनप्रदीप	मुनि जिनविजय	20.00
90.	पाठ्यरत्नकोश	गोपालनारायण बहुरा	20.00
91.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 3 बी	मुनि जिनविजय	48.75
92.	नन्दोपाख्यान	मुनि जिनविजय	10.00
93.	राठौड़ वंश री विगत एवं वंशावली	मुनि जिनविजय	42.00
94.	चण्डीशतक	गोपालनारायण बहुरा	40.00
95.	कविकौस्तुभ	मुनि जिनविजय	10.00
96.	मीरां बृहत्पदावली, भाग 1	हरिनारायण पुरोहित	140.00
97.	स्थूलिभद्रकाकादि	डा. आत्माराम जाजोदिया	15.00
98.	राजस्थानी वीर गीत–संग्रह, भाग 1	सौभाग्यसिंह शेखावत	55.00
99.	गजगुणरूपकबन्ध	सीताराम लालस	80.00
100.	राजस्थानी वीर गीत–संग्रह, भाग 2	सौभाग्यसिंह शेखावत	50.00
101.	मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1	डा. नारायणसिंह भाटी	अनुपलब्ध
102.	वैताल पच्चीसी	डा. पी.एल. मेनारिया	अनुपलब्ध
103.	देवीचरित, भाग 1	हुक्मचन्द्र चतुर्वेदी	90.00
104.	राजनीति रा कवित्त	डा. नारायणदत्त श्रीमाली	40.00
105.	सिन्धुघाटी की लिपि में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक	डा. फतहसिंह	55.00
106.	शंकरीसंगीत	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	10.00
107.	संघपति रूपजी वंशप्रशस्ति	म. विनयसागर	10.00
108.	सनत्कुमारचक्रिचरित–महाकाव्य	म. विनयसागर	75.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

109.	पथ्यास्वस्ति	सुरजनदास स्वामी	67.00
110.	आगमरहस्य (उत्तरार्द्ध)	गंगाधर द्विवेदी	अनुपलब्ध
111.	मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग—2	डा. नारायणसिंह भाटी	अनुपलब्ध
112.	मन्त्रभागवत	डा. श्रद्धा चौहान	15.00
113.	देवीचरित, भाग—2	हुक्मचन्द्र चतुर्वेदी,	140.00
114.	सांख्यायनतन्त्र	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	अनुपलब्ध
115.	सिंहसिद्धान्तसिन्धु, भाग—1	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	100.00
116.	राजस्थानी वीर गीत—संग्रह, भाग—3	सौभाग्यसिंह शेखावत	95.00
117.	बालतन्त्र	कविराज विष्णुदत्त पुरोहित	25.00
118.	नरसीजी रो माहेरो	प्रो.जेठालाल नारायण त्रिवेदी	45.00
119.	संगीत रघुनन्दन (व्यंग्यार्थचन्द्रिका टीका सहित)	डा. दशरथ शर्मा	30.00
120.	मीरां बृहत्पदावली, भाग—2	डा. कल्याणसिंह शेखावत	अनुपलब्ध
121.	मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग—3	डा. नारायणसिंह भाटी	110.00
122.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग—3	ओंकारलाल मेनारिया	14.50
123	सिंहसिद्धान्तसिन्धु, भाग—2	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	140.00
124.	खण्डप्रशस्ति	म. विनयसागर	50.00
125.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 4	मुनि जिनविजय	32.00
126.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 5	ओ3म्प्रकाश शर्मा	17.00
127.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 6	रमानन्द सारस्वत	14.75
128.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग 4	ओंकारलाल मेनारिया	34.50
129.	राजस्थानी वीर गीत संग्रह भाग—4	सौभाग्यसिंह शेखावत	70.00
130.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 7	म. विनयसागर एवं डा. डी.बी. क्षीरसागर	17.00
131.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 8	द्वारकानाथ शर्मा एवं ठाकुरदत्त जोशी	16.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

132.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 9	म. विनयसागर एवं डा. डी.बी. क्षीरसागर	20.75
133.	महाराजा मानसिंह री ख्यात	डा. नारायणसिंह भाटी	102.00
134.	रतनरासो–भूमिकाभाग	डा. रघुवीरसिंह एवं काशीराम शर्मा	55.00
135.	हमीररासो	अगरचन्द नाहटा	अनुपलब्ध
136.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 10	डा.डी.बी. क्षीरसागर व स्वरूपनारायण शर्मा	42.00
137.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 11	म. विनयसागर व जमुनालाल बल्दवा	86.50
138.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 12	डा. ब्रजमोहन जावलिया	62.00
139	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 13	भूरामल यति	73.00
140.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 14	द्वारकानाथ शर्मा	36.00
141.	गोविन्दानन्दघन	डा. मोतीलाल गुप्त	88.00
142.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग–5	ओंकारलाल मेनारिया व म. विनयसागर	62.00
143.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग–6	ओंकारलाल मेनारिया व म. विनयसागर	79.00
144.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग–8	डा. डी.बी. क्षीरसागर ब्रजेशकुमार सिंह	58.50
145.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 15	द्वारकानाथ शर्मा	42.00
146	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 17	द्वारकानाथ शर्मा	60.00
147.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 19	डा. डी. बी. क्षीरसागर	37.50
148.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 16	ओउम्प्रकाश शर्मा व ब्रजेश कुमार सिंह	75.75
149.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत	भूरामल यति	46.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 20		
150.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 18	म. विनयसागर व जमुनालाल बल्दवा	105.50
151.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 21	ओंकारलाल मेनारिया म. विनयसागर व वेणीमाधव शर्मा	147.00
152.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 22	डा. ब्रजमोहन जावलिया	अनुपलब्ध
153.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग–11	डा. शशि शर्मा	51.00
154.	कामाभिनन्दन–महाकाव्य	डा. डी.बी. क्षीरसागर एवं ओ.पी. शर्मा	17.00
155.	अजीत विलास.	डा. शिवदत्तदान बारहठ	33.00
156.	राजस्थानी हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश भाग 1	डा. सीताराम लालस	460.00
157.	राजस्थानी हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश भाग 2	डा. सीताराम लालस	अनुपलब्ध
158.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग 10 (देराश्री संग्रह)	डा. ब्रजमोहन जावलिया व डा. डी. बी. क्षीरसागर	35.00
159.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग 9	डा. रामकिशन जाटव	38.00
160.	सिंहसिद्धान्तसिन्धु, भाग 3	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	82.00
161.	स्वजीवनी (राय मेहता पन्नालाल)	ओंकारलाल मेनारिया	65.00
162.	नन्दबत्रीसी	एच.सी. भायाणी	40.00
163.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग 7	ओ.पी. शर्मा व एम. एल. आचार्य	82.00
164.	सुरतरंग	डा. डी.बी. क्षीरसागर एवं डा. एम.एम. एस. माथुर	21.00
165.	रसमकरंद	डा. डी.बी. क्षीरसागर	31.00
166.	सूरसिंहवंश प्रशस्ति	ओ.पी. शर्मा	10.00
167.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 23	रतनलाल कामड़ एवं भूरामल यति	46.00
168.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 24	द्वारकानाथ शर्मा	56.00
169.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत	नाथूलाल त्रिवेदी व	99.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

	मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 25	ओ.पी. शर्मा	
170.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 26	भूरामल यति एवं डॉ. कृष्णलाल विश्नोई	48.00
171.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग 12	डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित	74.00
172.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग 13	डा. ब्रजमोहन जावलिया एवं डा. डी. बी. क्षीरसागर	78.00
173.	अचलदास खींची री वचनिका	डॉ. शम्भूसिंह मनोहर	76.00
174.	मानप्रकाश सानुवाद	के. एल. दुबे	37.00
175.	देराश्री संग्रह के दस्तावेजों की सूची	डा. पद्मधर पाठक	86.00
176.	महाराजा तख्तसिंह री ख्यात	डा. नारायणसिंह भाटी	122.00
177.	पुण्डरीक ग्रन्थावली	वैद्य बुद्धिप्रकाश आचार्य	160.00
178.	सायणीयनिरुक्तिकोश	डा. डी.बी. क्षीरसागर	68.00
179.	संगीतमाधव	डा. गोविन्दराम चरौरा	29.00
180.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग 14	डा. रामकिशन, डा. विनोद कुमार एवं डा. देवकुमार	57.00
181.	शत्रुशल्यचरितमहाकाव्य, भाग 1 (संस्कृत टीका व आंग्ल अनुवाद सहित)	डा. भोलाशंकर व्यास	156.00
182.	शत्रुशल्यचरितमहाकाव्य, भाग 2	डा. भोलाशंकर व्यास	105.00
183.	तखतविलास चम्पू	ओ.पी. शर्मा एवं डा. गोविन्दराम चरौरा	22.00
184.	नन्दीसूत्र प्रभाव्याख्या सहित	म. विनयसागर	113.00
185.	महाराजा विजयसिंह री ख्यात	ब्रजेशकुमार सिंह	60.00
186.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 27	डा. उषा गोस्वामी	70.00
187.	आनन्दमाला	वैद्य बुद्धिप्रकाश आचार्य	140.00
188.	नैषधमहाकाव्य (पूर्व भाग) सटीक	डा. जयदेव जानी	237.00
189.	हमीरमहाकाव्य (हिन्दी अनुवाद)	पं. नाथूलाल त्रिवेदी	102.00
190.	राजस्थान के नाथ सम्प्रदाय और साहित्य	डा. डी. बी. क्षीरसागर एवं डा. नवलकृष्ण	130.00
191.	पं. मधुसूदन ओझा की सारस्वत साधना भाग1	डा. फतहसिंह एवं डा. गोविन्दराम चरौरा	130.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

192.	जोगप्रदीपका	डा. एम. एल. घरोटे	70.00
193.	पं. मधुसूदन ओझा की सारस्वत साधना भाग 2	डा. फतहसिंह एवं डा. गोविन्दराम चरौरा	110.00
194.	राजस्थान के ऐतिहासिक भाषा काव्य	सं. ओ. पी. शर्मा	120.00
195.	राठौड़ा री ख्यात (हिन्दी अनुवाद)	कैलाशदान उज्ज्वल एवं पुष्पेन्द्रसिंह	55.00
196.	राजस्थान का ऐतिहासिक संस्कृत साहित्य	ओ. पी. शर्मा एवं ब्रजेश कुमार सिंह	90.00
197.	हमीरायण	डा. ब्रजमोहन जावलिया	205.00
198.	राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ सूची, भाग 15	श्रीमती कलावती माथुर	125.00
199.	राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ सूची भाग 16	डा. गोविन्दराम चरौरा	70.00
200.	राजस्थान का ऐतिहासिक गद्य साहित्य	डा. डी.बी. क्षीरसागर एवं ओउम्प्रकाश शर्मा	110.00
201.	राजरत्नाकर भूमिका तथा अनुवाद सहित	डा. मूलचन्द पाठक	155.00
202.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–17	डा. कृष्णलाल विश्नोई	130.00
203.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–18	डा. कृष्णलाल विश्नोई	145.00
204.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–19	डा. गोविन्दराम चरौरा	105.00
205.	काव्यरस	डा. देवेन्द्र	105.00
206.	राजस्थान का संत साहित्य	डा. वसुमती शर्मा एवं डॉ. कमलकिशोर सांखला	275.00
207.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–20 (बीकानेर संग्रह)	डॉ. कृष्णलाल विश्नोई	180.00
208.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–21 (कोटा संग्रह)	ख्यालीराम मीणा	130.00
209.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग–22 (जोधपुर संग्रह)	ब्रजेशकुमार सिंह	235.00
210.	जान ग्रन्थावली (प्रेमाख्यानक) भाग–3	अनु. डॉ. देवकुमार सम्पा. मण्डल–ओमप्रकाश शर्मा, मोहनलाल आचार्य, ब्रजेश कुमार सिंह, कलावती	205.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

		माथुर एवं डॉ. कमल किशोर सांखला	
211.	जान ग्रन्थावली (प्रेमाख्यानक) भाग–4	सम्पा. मण्डल–ओम प्रकाश शर्मा, रतनलाल कामड़, डॉ. रामकिशन जाटव, डॉ. कृष्णलाल विश्नोई, मोतीलाल बैरवा, डॉ. उषा गोस्वामी एवं ख्यालीराम मीणा	235.00
212.	ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट 28		490.00
213.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित सूची भाग–23 (जोधपुर संग्रह)		मुद्रणाधीन
214.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित सूची भाग–24 (बीकानेर संग्रह)	डॉ. कृष्णलाल विश्नोई	275.00
215.	राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित सूची भाग–25 (बीकानेर संग्रह)		मुद्रणाधीन

प्रतिष्ठान– पत्रिका

अंक 1	वर्ष – 1	1985	31.00
अंक 2	वर्ष – 2	1986	31.00
अंक 3	वर्ष – 3	1987	21.00
अंक 4–5	वर्ष – 4–5	1988–1989	64.00
जान ग्रन्थावली, 2003		प्रतिष्ठान पत्रिका	35.00
प्रतिष्ठान पत्रिका 2010		आयुर्वेद विशेषांक	40.00

व्यापारिक शर्तें

1. सीधी बिक्री पर — 10 प्रतिशत कमीशन
2. 500/– रूपये तक की बिक्री पर — 15 प्रतिशत कमीशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3.	501/– से 2,000/– रूपये तक	25 प्रतिशत कमीशन
4.	2001/– से 4,000/– रूपये तक	30 प्रतिशत कमीशन
5.	4000/– से ऊपर की बिक्री पर	40 प्रतिशत कमीशन

प्राप्ति स्थान

(मुख्यालय एवं शाखा कार्यालय)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

पी. डब्ल्यू. डी. रोड़, जोधपुर–342 001

वेबसाईट – www.rori.nic.in

फैक्स : 0291–2637646

शाखा कार्यालय	पता
1. बीकानेर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	गवर्नमेण्ट प्रेस के पास
2. जयपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	पुराने विधानसभा भवन के सामने
3. भरतपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	आर.डी. गर्ल्स कॉलेज के पास, पूर्व समाज कल्याण विभाग भवन, भरतपुर
4. कोटा, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	ब्रजविलास पैलेस, राजकीय संग्रहालय, कोटा
5. उदयपुर राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	जलग्रहण विकास परिसर, प्रतापनगर विशाल पेट्रोल पम्प के सामने, उदयपुर
6. अलवर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,	महल चौक, अलवर

निदेशक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Oriental Art Gallery
ओरियण्टल आर्ट - गैलरी
दिग्दर्शन

- पाल, राजपूत, पश्चिम भारतीय, जम्मू कश्मीर, दक्षिण भारतीय तथा राजस्थान के स्थानीय शासकों के काल में पल्लवित ताड़, भोज, चर्म, काष्ठ एवं कागदीय आधारों पर हस्तलिखित ग्रन्थ।
- राष्ट्रीय निधि कोश में चयनित विश्वप्रसिद्ध आर्ष रामायण (मेवाड़ चित्र शैली, 1649 ई.) एवं दुर्लभ ग्रन्थ ध्वन्यालोकलोचन (ई. 1148) का निदर्शन।
- खरड़ा ग्रन्थों में जैन क्षमापना पत्र, जन्म-पत्रियां, भागवत, दुर्गा माहात्म्य के स्वर्ण स्याही से अंकित ग्रन्थ (314 फीट लम्बी जन्मपत्री सहित)
- अगणित भुजाओं में सहस्त्रों मंत्र-तंत्रों से सुसज्जित देवी चण्डिका का वृहद् चित्र।
- कुण्डलिनी जाग्रत करने के विभिन्न चक्रों से युक्त योगपरक षट्चक्रनिरूपण चित्रात्मक ग्रन्थ।
- राजस्थान की प्रेम विरह गाथाओं की नयनाभिराम चित्रात्मक अभिव्यक्ति।
- हाथियों की विभिन्न प्रजातियों एवं प्रकृति से सम्बद्ध पालकाप्य गजायुर्वेद का चित्रात्मक ग्रन्थ।
- ग्रह नक्षत्र, ज्योतिष, खगोल, शकुनशास्त्र, वास्तु आदि समृद्धिकारक विविध मंत्र-यंत्रों का रेखाचित्रिय संकलन।
- जैन-दर्शन के प्राचीनतम चित्रित कल्पसूत्र, संग्रहणी सूत्र, आगम, उत्तराध्ययन सूत्र, ब्रह्माण्ड वर्णन, कॉस्मिक वूमेन आदि विशिष्ट कृतियां।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित एवं सराहनीय विभिन्न चित्रात्मक कृतियों का समावेश।

आर्ट गैलरी का पता
राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान परिसर
पी. डब्ल्यू. डी. रोड़, जोधपुर

अवलोकन का समय
प्रातः 10.30 से सायं 5.00 बजे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Oriental Art Gallery

ओरियण्टल आर्ट - गैलरी

(कला-संस्कृति-सरोकार)

गीत–गोविन्द

भगवद्गीता

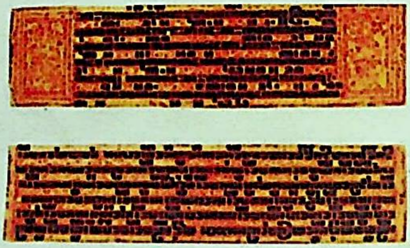

मंगल–सूत्र

कल्पसूत्र

पालकाप्य गजायुर्वेद

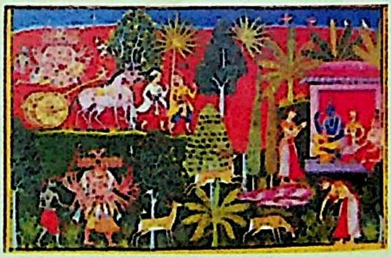

आर्ष रामायण

पंच वक्त्र शिव

वेली कृष्ण रूक्मिणी री

Visit us at : www.rori.nic.in Write to us at : rori-jod-rj@nic.in

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi